अध्याय 4

मसीह के सुसमाचार का पौलुस का प्रयोगात्मक और वचन के अनुसार बचाव

(भाग 2)

पौलुस ने व्यवस्था को मानने पर मसीह में विश्वास की श्रेष्ठता के तर्क को आगे बढ़ाया (4:1-7)। 3:23-25 में पुत्र के ऊपर जो कि वारिस है शिक्षक या संरक्षक के पिछले रूपक के आधार पर बात करते हुए उसने फिर से व्यवस्था के अस्थाई होने पर ज़ोर दिया। उसने दावा किया कि मसीह में मिलने वाली आशिषों को पाने के बाद व्यवस्था की आत्मिक दासता में लौटना मसीह के आनंद और आशा से हाथ धोने के बराबर था (4:8-20)। उसने यह समझाते हुए कि मसीह में स्वतन्त्रता, मूसा की व्यवस्था की दासता से श्रेष्ठ है, सारा और हाजिरा का रूपक देते इस भाग को समाप्त किया (4:21-31)।

व्यवस्था का अस्थाई होना: दासत्व से पुत्रत्व तक (4:1-7)

[1]मैं यह कहता हूं कि वारिस जब तक बालक है, यद्यपि सब वस्तुओं का स्वामी है, तौभी उसमें और दास में कुछ भेद नहीं। [2]परन्तु पिता के ठहराए हुए समय तक संरक्षकों और प्रबन्धकों के वश में रहता है। [3]वैसे ही हम भी, जब बालक थे, तो संसार की आदि शिक्षा के वश में होकर दास बने हुए थे। [4]परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ, [5]ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले। [6]और तुम जो पुत्र हो, इसलिये परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो "हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है," हमारे हृदयों में भेजा है। [7]इसलिए तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है; और अब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ।

आयतें 1, 2. अध्याय 3 में पौलुस ने एक बालक के रूपक का इस्तेमाल किया जिसे उसका शिक्षक या संरक्षक स्कूल में ले जाता और वापस ले आता था। स्कूल के बाद वह उस बच्चे की सहायता करता और आवश्यक होने पर उसे सबक तैयार करने और याद करने को विवश भी करता। पौलुस ने ज़ोर देते हुए अपनी घोषणा के साथ अपने पत्र के इस भाग को समाप्त किया कि गलातिया के मसीही लोग, जिनमें से अधिकतर अन्यजाति थे, "सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान" थे। उन्होंने "मसीह में बपतिस्मा लिया" था और वे "अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस" थे (3:26-29)।

इस्राएल के व्यवस्था के अधीन होने के समय की बाल (या अवयस्क) अवस्था के बारे में

कहने को पौलुस के पास और भी था: **मैं यह कहता हूं कि वारिस जब तक बालक [*nēpios*, नेपियोस] है, यद्यपि सब वस्तुओं का स्वामी है, तौभी उसमें और दास [*doulos*, डुलोस] में कुछ भेद नहीं। परन्तु पिता के ठहराए हुए समय तक संरक्षकों और प्रबन्धकों के वश में रहता है।** पौलुस को गलातियों के लिए इस बात को विस्तार से समझाने की आवश्यकता नहीं थी। उनके नगर लम्बे समय से यूनानी भाषा बोलने वाले थे और सांकेतिक रूप में वे साम्राज्य की यूनानी-रोमी रस्मों में रचे-बसे थे।

एक अच्छे परिवार में पले बड़े बच्चों के संरक्षक होते थे जो उसकी देखभाल करते और उस समय के कोयनि (साधारण) यूनानी भाषा सीखने में सहायता करते थे। परिवार की शिक्षा के सबसे बड़े लक्ष्य में से एक यह होता था जो ऐसे शिक्षकों या संरक्षकों का खर्चा उठा सकते थे। लड़के के लिए प्रौढ़ होने तक अपने संरक्षकों की आज्ञा को मानना आवश्यक होता था। यह वह समय होता था जब उसका पिता तय करता कि लड़का इतना बड़ा हो गया है कि उसे ज़िम्मेदारी सौंपी जा सकती है। यहूदियों में यह उसके "बार मित्ज़वा" के समय होता था। रोमियों में यह लड़के की टीन अवस्था का अंत होता था; फिर उसे चोगा पहनने की अनुमति होती और युवा वयस्क के रूप में उसकी नई स्थिति के साथ उसे कुछ और अधिकार दिए जाते थे।

इससे फर्क नहीं पड़ता कि पौलुस यहां पर यहूदी रस्म की बात कर रहा था या रोमी रस्म की। उसका उद्देश्य यह दावा करना था कि पिता द्वारा "ठहराया हुआ समय" (*prothesmia*) तक वारिस (भविष्य में "हर वस्तुओं का स्वामी [*kurios*[1]]") गुलाम से कोई अलग नहीं होता था। लड़के को गुलामों के अधीन भी रखा जा सकता था जिन्हें अपने अधीन बच्चों को आज्ञा मनवाने का अधिकार होता था।

बालक और शिक्षक या संरक्षक का रूपक व्यवस्था के अधीन इस्राएल की स्थिति को दर्शाता है। इस अध्याय में आगे पौलुस ने सीनै पर दी गई वाचा की बात की थी (जो प्रतीकात्मक रूप में सारा की दासी, हाजिरा थी)। हाजिरा को "अपने बालकों समेत दासत्व में" (4:25) दिखाकर उसने दिखाया कि वाचा की संतान इस्राएली, व्यवस्था के दास थे।

गलातियों को कई बार पौलुस का "मसीही स्वतन्त्रता का राजपत्र" कहा गया है। ये आयतें जिनमें दासता की बात की गई है, गलातिया की इन कलीसियाओं के जीवन तथा पत्र के उद्देश्य को समझने में सहायता करती हैं। हमें इस तथ्य को कभी नहीं भूलना चाहिए कि यहूदी शिक्षा देने वाले, इन कलीसियाओं को बड़ी ही सफलता से नष्ट करने के लिए उन पर खतने को थोपने का प्रयास कर रहे थे, जो सीनै पर्वत पर व्यवस्था ने लागू किया था। इस पत्र में ऐसा कोई संकेत नहीं है, जैसा कि कुछ टीकाकरों ने सुझाव दिया है कि पौलुस यहां पर अपने स्वयं के कामों के द्वारा धार्मिकता को कमाने के कर्मकांडी कामों का सामना कर रहा हो।

पौलुस के उस लड़के के उदाहरण की प्रासंगिकता से आगे बढ़ने से पहले जो अभी वयस्क नहीं हुआ था, "संरक्षकों" (*epitropos* से) और "प्रबन्धकों" (*oikonomos* से) पर विचार किया जाना चाहिए। यूनानी साहित्य में *epitropos* का इस्तेमाल "राज्यपाल" और "मुख्तार" से लेकर कई पदवियों के लिए किया जाता था।[2] नये नियम में यह शब्द चाहे केवल तीन बार मिलता है परन्तु इसका सम्बन्ध *epitropē* शब्द से है जिसका अर्थ "अनुमति" "नियुक्त करना" या "पूरी शक्ति" देना है।[3] इन परिभाषाओं से उस अधिकार की समझ मिलती

है जो शिक्षक या संरक्षक को उस लड़के पर होती थी जो उसके सपुर्द किया होता था।

Oikonomos शब्द, जो कि नये नियम में *epitropos* से कहीं आम है, घर की देखभाल करने वाले प्रबन्धक के लिए इस्तेमाल होता है जिसे घर के मालिक के कहीं घूमने जाने के समय उसकी सम्पत्ति का ज़िम्मा सौंपा जाता था (लूका 12:42; देखें 16:1, 3, 8)। मूल में वह "घर (या घर-बार) का कानून" होता था। इस शब्द का इस्तेमाल एक बार कुरिन्थुस के नगर भण्डारी इरास्तुस के लिए हुआ है (रोमियों 16:23), जिसका नाम आज भी उस नगर के बड़े मंच के निकट फर्श अंकित है। नये नियम में इसका इस्तेमाल प्रेरितों (1 कुरिन्थियों 4:1, 2), या प्राचीनों (तीतुस 1:7), और उनके लिए किया जाता था जो "विभिन्न रूपों में परमेश्वर के अनुग्रह के प्रबन्धन" में मसीही सेवाएं निभाते थे (1 पतरस 4:10; NIV1984)।

आयत 3. इस्राएल के अभी भी बाल अवस्था में होने की बात करते हुए, पौलुस ने लिखा, **वैसे ही हम भी, जब बालक थे, तो संसार की आदि शिक्षा के वश में होकर दास बने हुए थे।** 4:9 में उसने कहा कि गलातिया के समुदायों में "निर्बल और निकम्मी आदि-शिक्षा की बातों की ओर" जिनके [दोबारा] दास होना चाहते थे। इसका अर्थ यह हुआ कि "आदि शिक्षा की बातों" (*stoicheia*) में व्यवस्था तो है ही, पर इसमें और भी कुछ शामिल होगा।

Stoicheia शब्द जिसका अनुवाद नये नियम में बहुवचन रूप में ही हुआ है किसी भी सिस्टम की बुनियादी बातों के लिए हो सकता है। यूनानी साहित्य में विभिन्न संदर्भों में इस शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। (1) *Stoicheia* वर्णमाला के अक्षरों को कहा जाता है और (2) इस शब्द का इस्तेमाल व्याकरण की रचना करने वाले बोल-चाल के भावों (संज्ञाओं, क्रियाओं, विशेषणों, क्रियाविशेषणों आदि) के लिए किया जाता है। (3) यह पृथ्वी, वायु, आग, और जल को भी दर्शाता है। जहां तक तत्व के यूनानी भाव की बात थी इन चारों तत्वों से भौतिक संसार बना था (देखें 2 पतरस 3:10, 12)। (4) *Stoicheia* दिखाई देने वाले आकाशों में बसे तारामण्डल के तारों को दर्शाता है (देखें 1 कुरिन्थियों 15:40, 41)। (5) यूनानियों की दार्शनिक और आध्यात्मिक भाषा में इस शब्द का इस्तेमाल केवल आकाशीय पिंडों के लिए नहीं बल्कि[4] और तत्व के भौतिक तत्वों से जुड़े बुनियादी रूझानों के लिए होता था।[5]

Stoicheia का अनुवाद इस अध्याय में कई प्रकार से किया गया है। यहां इसका अर्थ "मूल तत्व" (ASV), "बुनियादी नियम" (NIV1984), "मौलिक नियम" (ESV) है।[6] पौलुस यह तर्क दे रहा था कि परमेश्वर ने बालक (व्यवस्था के अधीन यहूदी) के लिए कुछ चीज़ें स्वीकार कर लीं और उन्हें अपने लिए ठहरा भी दिया पर कुछ बातें बड़ों के लिए (मसीही व्यक्ति जिसे पुत्रत्व का आत्मा दिया गया) अनपयुक्त थीं। संदर्भ चाहे अलग है, पर 1 कुरिन्थियों 13:11 में वैसी ही सोच को दर्शाया गया है: "जब मैं बालक था, तो मैं बालकों की नाईं बोलता था, बालकों का सा मन था बालकों की सी समझ थी; परन्तु जब सियाना हो गया, तो बालकों की बातें छोड़ दीं।"

पौलुस गलातिया के इन अनाड़ी चेलों को यह बताने का प्रयास कर रहा था कि अपने बाहरी साज सामान के साथ व्यवस्था एक भौतिक जहाज़ पर सवार थी (देखें इब्रानियों 9; 10)। इसकी कई विधियां और बलिदान "आदि" यानी प्राथमिक थे। व्यवस्था एक स्पष्ट, साफ़ साफ़ उदाहरण थी जो आत्मिक राज्य और याजकीय सेवा की जो यीशु मसीहा में आने वाली थी की ओर आगे

को ध्यान दिलाती थी।

यीशु ने कुएं पर सामरी स्त्री को यही सबक दिया था जब उसने परमेश्वर की आराधना किए जाने के सही स्थान के बारे में पूछा था। यह स्थान गिरिज्जीम पहाड़ पर था या यरूशलेम में? यीशु के उत्तर के महत्व को भूलना नहीं चाहिए: ''... न तो इस पहाड़ पर ... , न यरूशलेम में ... परन्तु वह समय आता है, वरन् अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे'' (यूहन्ना 4:21-23)। अन्य शब्दों में समय और स्थान की ऐसी सांसारिक अवधारणाओं के बावजूद सच्चे आराधकों ने उस बुनियादी सामान से बने जहाज़ से ऊपर उठकर आत्मा के जहाज़ में चढ़ जाना था जो असल, आत्मिक बलिदान चढ़ाते हैं जिनसे परमेश्वर प्रसन्न होता है।

''संसार की आदि शिक्षा के वश में'' की अभिव्यक्ति से पौलुस का क्या तातपर्य था? वह बचपने की सीमाओं की बात कर रहा हो सकता है। शायद वह यह कह रहा हो कि यहूदी लोग जो अभी आत्मा के वास के बिना थे, कर्मकांडी बातों में बंधे हुए थे। उनके उड़ने के पंख अभी आए नहीं थे और वे अभी तक शरीर के निचले दायरे तक सीमित थे। अभी वे जीवन के उस ऊंचे जहाज़ की उड़ान के योग्य नहीं थे जिस तक केवल आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा पहुंचा जा सकता है।

आयत 4. इस्राएलियों की व्यवस्था के अधीन बुनियादी या बाल अवस्था की चर्चा करने के बाद पौलुस उसकी तरफ़ मुड़ा जिसमें सारी मनुष्यजाति के इतिहास का शिखर है: **परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा।** मसीहा का आना उस सब में जो संसार की सृष्टि के आरम्भ से भी पहले, परमेश्वर के मन में था, सबसे बड़ी घटना थी। यह ''उस भेद को जो समयों और पीढ़ियों से गुप्त रहा, परन्तु अब उसके उन पवित्र लोगों पर प्रगट'' करने के लिए परमेश्वर की सनातन मंशा थी (कुलुस्सियों 1:25, 26)। यह हमें ''समयों के पूरे होने'' तक ले आता है ताकि ''ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे'' (इफिसियों 1:10)।

''समय पूरा हुआ'' की यह अवधारणा नये नियम की कई अलग अलग अभिव्यक्तियों पर ज़ोर देती है। यीशु ने जब पृथ्वी की अपनी सेवकाई का आरम्भ किया तो उसने घोषणा की ''समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है'' (मरकुस 1:15क)। छुटकारा दिलाने वाले अपनी मृत्यु के समय तक पहुंचकर, उसने कहा, ''मेरा समय निकट है'' (मत्ती 26:18)। पौलुस ने लिखा कि मसीह ''जिस ने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया; ताकि उस की गवाही ठीक समयों पर दी जाए'' (1 तीमुथियुस 2:6)। उसने यह भी कहा कि ''जिस की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने जो झूठ बोल नहीं सकता सनातन से की है। पर उसके अपने समयों में अपने वचन को उस संदेश में प्रगट किया'' (तीतुस 1:2, 3; ASV)। यहूदा ने प्रेरितों को उद्धृत किया जिन्होंने कहा, ''कि पिछले दिनों में ठट्ठा करने वाले होंगे, ... '' (यहूदा 18)।

इन आयतों में चाहे इस शब्द का अनुवाद ''समय'' हुआ है, पर कहीं यह *kairos* है और कहीं *chronos* है पर विचार वही है कि हमारा परमेश्वर इतिहास का परमेश्वर है। वह वह परमेश्वर है जो सारी मनुष्यजाति के पूरी संसार में सब बातों को मिलाकर सब घटनाओं को अपनी ही सनातन मंशा के अनुसार चलाता है। आयत 4 में प्रयुक्त शब्द *chronos* में आम तौर पर समय का विचार कालक्रमिक होता है जबकि *kairos* समय को दर्शाता है जो समयोचित,

उचित या उपयुक्त (सही समय) हो। *Kairos* वह शब्द है जिसका इस्तेमाल पहली बार अनाज या फसल के पकने के लिए होता है, जैसे सूखे अंजीर के वृक्ष की कहानी में ("क्योंकि फल का समय न था"; मरकुस 11:13)। यह प्रकृति का नियम है कि फल तब तक नहीं पक सकता जब तक यह कुछ प्रक्रियाओं से न गुजरे, जिसमें समय, जल और धूप के प्रभाव शामिल हैं।

बिल्कुल सही समय पर, परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार में भेजा, **जो स्त्री से जन्मा**। इस वाक्यांश को हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए क्योंकि यह उस महत्वपूर्ण सच्चाई के रूप में जिसे विश्वास से स्वीकार किया जाना आवश्यक है, के साथ साथ एक बड़े रहस्य को भी हमें बताता है। यीशु मनुष्य का पुत्र, जो उसने अपने आपको नाम देना पसंद किया और परमेश्वर का पुत्र, दोनों था। यह दोनों शब्द इस नियम को पक्का करते हैं कि जीव "जाति जाति के अनुसार" उत्पन्न होती हैं (उत्पत्ति 1:24, 25)। वास्तविक मानवीय माता के बालक के रूप में यीशु मनुष्य था। पौलुस ने लिखा, "क्योंकि परमेश्वर एक ही है: और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है" (1 तीमुथियुस 2:5)। परमेश्वर के पुत्र के रूप में वह परमेश्वर भी था (यूहन्ना 20:28; इब्रानियों 1:8)।

मसीहा और परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु "शरीर में" आया (1 यूहन्ना 4:2) और इस कारण वह सचमुच में मानवीय जीव था। उसे "यथार्थ परमेश्वर और यथार्थ मनुष्य" बताया गया है।[7] परमेश्वर के पुत्र के देहधारी होने के रूप में यीशु को नकारना उसका ज़बर्दस्त विरोध करने का प्रमाण है (1 यूहन्ना 4:1-3; 2 यूहन्ना 7)। हो सकता है कि हम उद्धारकर्त्ता के कुंवारी से जन्म के रहस्य को कभी समझा ना पाएं। फिर भी यदि हम जैसा कि पवित्र शास्त्र में गवाही दी गई है प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की गवाही को मान लेते हैं तो हम मानना कबूल कर लेते हैं, तो हमें इसे विश्वास से मानना होगा। बाइबल बहुत से विचार बताती है जिनकी हमें पूरी तरह से समझ नहीं है। परन्तु यदि हम उन पर ध्यान लगाए रखें तो समय में किसी समय हमें उनकी बेहतर समझ आ सकती है। यीशु "स्त्री से जन्मा" था, परन्तु वह परमेश्वर के पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भ में आया था, यानी "सर्वशक्तिमान की सामर्थ्य" से। यह बिल्कुल वैसे ही हुआ जैसा कि स्वर्गदूत ने मरियम से कहा था, ताकि "वह पवित्र परमेश्वर का पुत्र कहलाए" (लूका 1:35)।

पुराने नियम की भविष्यवाणी को पूरा करते हुए (मीका 5:2), यीशु दाऊद के नगर बैतलहम में जन्मा था (मत्ती 2:1-6; लूका 2:1-7)। "बैतलहम" नाम का अर्थ है "रोटी का घर।" यीशु की बाद की शिक्षा के प्रकाश में यह दिलचस्प है: "जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी मैं हूं। यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा; और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा, वह मेरा मांस है" (यूहन्ना 6:51)। बैतलहम यहूदी प्रधान याजकों और शास्त्रियों के ध्यान में आने से बचा नहीं था; वे इस बात को जानते थे कि किसी बालक के जन्म के आस पास की कुछ अजीबो गरीब और परेशान करने वाली घटनाएं हुई थीं (मत्ती 2:1-6)। परन्तु यीशु के अपनी सेवकाई में प्रवेश करने पर ऐसा लगा कि यह घटनाएं उन्हें भूल चुकी थीं और यहूदियों ने "समयों के चिह्नों" (देखें मत्ती 16:3) पर ध्यान नहीं दिया था। यह तथ्य कि यीशु का पालन पोषण गलील के नासरत में हुआ था उसे यहूदिया के बैतलहम की घटनाओं से अलग करता था (यूहन्ना 7:41, 42)।

जब यीशु इस संसार में आया तो वह **व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ** यहूदी था। यूनानी

धर्मशास्त्र *genomenon hupo nomon* में निश्चित उपपद (''the'') नहीं है तो इसका अनुवाद ''नियम के अधीन जन्मा'' हो सकता है। परन्तु NASB के अनुवादकों ने पौलुस के तर्क के संदर्भ को सही माना है जो इब्रानी पवित्र शास्त्र पर आधारित है। 4:5 में भी ऐसा ही है। एफ. एफ. ब्रूस ने कहा कि ''व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ'' वाक्यांश इस तथ्य को दिखाता है कि यीशु का जन्म तब हुआ जब पुराना नियम अभी यहूदियों की व्यवस्था था और वह उस परिवार का भाग था जो उस व्यवस्था के अधीन रहता था। ब्रूस ने लिखा है, ''यहूदी माता की कोख से जन्म लेने के कारण यीशु यहूदी था और इस प्रकार *hupo nomon* [हुपो नोमोन 'व्यवस्था के अधीन'] था। वह कैदखाने के अंदर गया जहां उसके लोगों को बंदी बनाकर रखा हुआ था ताकि वह उन्हें छुड़ा सके।''[8]

एक बालक के रूप में यीशु का आठवें दिन खतना हुआ था और बाद में उसे व्यवस्था को पूरा करने के लिए परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करने के लिए मन्दिर में ले जाया गया (लूका 2:21-24, 39)। जब वह बारह साल का हुआ और उसके माता पिता आराधना के लिए यरूशलेम में गए तो वह केवल उनके साथ ही नहीं गया बल्कि अपने माता पिता की जानकारी के बिना उनके नासरत में वापस जाने के समय वह नगर में पीछे रह गया (लूका 2:42-44)। यीशु की तलाश करने और उसे ढूंढ़ लेने के बाद वे अपने व्यवहार के लिए उसकी व्याख्या के लिए स्तब्ध रह गए: ''तुम मुझे क्यों ढूंढ़ते थे? क्या नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के भवन में होना अवश्य है?'' (लूका 2:49)। ऐसा लगता है कि बचपन में ही यीशु को अपने परमेश्वर के अभिषिक्त के रूप में होने का पता था। फिर भी, ''वह उनके साथ गया, और नासरत में आया, और उनके वश में रहा'' (लूका 2:51क)। इस प्रकार से उसने निर्गमन 20:12 में व्यक्त पांचवीं आज्ञा को माना: ''तू अपने पिता और अपनी माता का आदर कर।'' यीशु अपने व्यवहार और शिक्षा को व्यवस्था में बताई गई ऐसी आज्ञाओं के अनुसार चलाता था।

यीशु न केवल ''व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ'' बल्कि इससे जुड़ी कई भविष्यवाणियों को पूरा करते हुए व्यवस्था के अधीन और व्यवस्था के अनुसार मरा भी।[9] व्यवस्था को इस प्रकार से पूरा करते हुए उसने व्यवस्था का श्राप अपने ऊपर ले लिया। 3:13, 14 में पौलुस ने इसका दावा किया:

> मसीह ने जो हमारे लिये शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया, क्योंकि लिखा है, ''जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है।'' यह इसलिये हुआ कि अब्राहम की आशीष मसीह यीशु में अन्यजातियों तक पहुंचे, और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें जिसकी प्रतिज्ञा हुई है।

एक यहूदी के लिए अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए व्यवस्था में कहा गया कि वह परमेश्वर की सब शर्तों को पूरा करे (3:10 पर टिप्पणियां देखें)। परन्तु यीशु को छोड़ कोई भी ऐसा करने के लायक नहीं था। रोमियों के नाम अपने पत्र में पौलुस ने लिखा,

> क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में और पापबलि होने के

> लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी। इसलिये कि व्यवस्था की विधि [*dikaiōma*, डायकाइपोमा] हममें जो शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए (रोमियों 8:3, 4)।

परमेश्वर की नज़र में धर्मी बनने के लिए हम जो करने के लायक नहीं थे, परमेश्वर ने क्रूस पर छुटकारा दिलाने वाली मृत्यु मरने के लिए अपने पुत्र को भेजकर हमारे लिए वही किया। इसके अलावा उसने उसे भाने के हमारे प्रयासों में हमें सामर्थी बनाने के लिए हम पर अपना पवित्र आत्मा उण्डेल दिया।

यीशु ने व्यवस्था की शर्तों को पूरा किया और इसके स्थान पर एक "उत्तम वाचा" बांध दी (इब्रानियों 7:22)। यह वाचा विश्वासी को उद्धार केवल अनुग्रह के द्वारा ही नहीं देती बल्कि आत्मा के वास के द्वारा उसकी इच्छा को बदलकर उसे प्रेरित भी करती है। हमें अपनी महिमा, धन्यवाद, भक्ति और प्रशंसा परमेश्वर को देने चाहिए क्योंकि मसीही लोग मूसा की व्यवस्था के अधीन नहीं हैं! हम "जीवन की आत्मा की व्यवस्था" के अधीन हैं जिस "ने मसीह यीशु में [हमें] पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया" (रोमियों 8:2)। गलातियों के पत्र में आगे पौलुस ने इसे "मसीह की व्यवस्था" कहा जो कि दूसरों के लिए प्रेम पर आधारित है (गलातियों 6:2)।

आयत 5. यीशु संसार में आया **ताकि व्यवस्था के आधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले**। "ताकि" (*hina*) समुच्चय बोधक का काम करता है जो, "उद्देश्य, लक्ष्य, या अभिप्राय" का संकेत देता है।[10] क्रिया शब्द "छुड़ा ले" (*exagorazō*) पिछले अध्याय से दोहराया गया है और इसे बाज़ार से लिया गया है और यह कई बार गुलामों की आज़ादी खरीदने का संकेत देता है (3:13 पर टिप्पणिया देंखें)। 3:13 और 4:5 में पौलुस ने कहा कि यीशु ने लोगों को "व्यवस्था के शाप से" और "व्यवस्था" से छुड़ा लिया। उसके दिमाग में मुख्य रूप में यहूदी मसीही रहे होंगे क्योंकि एक समय वही लोग व्यवस्था और इसके श्राप के अधीन थे परन्तु अब मसीह के कारण अब इसके अधीन नहीं थे।[11] अन्यजाति मसीहियों को उनके "निकम्मे चाल चलने से" छुटकारे की बात नये नियम में और भी कहीं की गई है (1 पतरस 1:17-19)।

आयत 5 में उद्देश्य का दूसरा भाग जो यह बताता है कि यीशु क्यों आया यह है **और** [*hina*] **हम को लेपालक होने का पद मिले**। परमेश्वर का इरादा उन्हें जो व्यवस्था के गुलाम थे, छुड़ाने के बाद गोद लेकर उन्हें पुत्रों के रूप में स्वीकार करने का था। यह उसे और साफ करता है जो 3:23-25 और 4:1, 2 में पौलुस ने पहले ही बताया था कि "विश्वास आ चुका है" और वारिस अब बच्चा नहीं रहा। "समय पूरा हुआ" है और प्रभु की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा छुटकारा प्रभावी हो चुका है (4:4, 5; देखें रोमियों 4:25)। यहूदी हों या अन्यजाति सबके लिए यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा यह गोद लिया जाना उपलब्ध है। 3:26, 27 में पौलुस ने लिखा, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है" (देखें यूहन्ना 1:11-13)।

आयत 6. पौलुस ने आगे कहा, **और तुम जो पुत्र हो, इसलिये परमेश्वर ने अपने पुत्र**

के आत्मा को, ... हमारे हृदयों में भेजा है। पुत्रों के रूप में गोद लिया जाना कानूनी सौदे से कहीं बढ़कर है। "अपने पुत्र के आत्मा" यानी पवित्र आत्मा को देकर परमेश्वर ने अपने बच्चों को अपनी सक्रिय उपस्थिति दी है। आत्मा इस संसार में अपने पिता की इच्छा को पूरा करने के लिए हमारी समझ के बाहर तरीकों से हमारी सहायता करता है। वह परमेश्वर के निकट आने पर हमारी सहायता इस प्रकार से करता है जैसे हमारे लिए पहले सम्भव नहीं था। ईश्वरीय इच्छा के द्वारा उसकी ईश्वरीय उर्जा हमें वह अगुआई और सामर्थ्य देती है जिसका हमें पहले कभी पता नहीं था।

ऐसा नहीं है कि यीशु की छुटकारा दिलाने वाली मृत्यु से पहले आत्मा की शक्तियां उपलब्ध नहीं थीं। सुसमाचार के युग से बहुत पहले परमेश्वर के लोगों को अनोखे ढंग से प्रभावशाली शक्तियां दी जाती थीं। मूसा और यहोशू, शमशोन की शारीरिक क्षमता, दाऊद की काव्य प्रेरणा और सुलेमान की बड़ी बुद्धि के द्वारा किए गए सामर्थ्य के काम इसके उदाहरण हैं। पवित्र शास्त्र में चाहे दोनों नियमों में लोगों में और लोगों के द्वारा आश्चर्यकर्मों की शक्तियों की गवाही की भरमार है पर यहां हम एक अलग बात कर रहे हैं जो प्रेरितों 2 में पिन्तेकुस्त के दिन और पवित्र आत्मा के बहाये जाने से पहले उन्हें नहीं मिली थी।[12]

यूहन्ना 7:37-39 में यीशु के वचन इस चर्चा में सहयोग देते हैं:

> पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, "यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए। जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्रशास्त्र में आया है, 'उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी।' " उसने यह वचन पवित्र आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था, क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था।

यूहन्ना 7:37-39 से ऐसा लगता है कि आत्मा जिसकी बात यीशु कर रहा है वह आत्मा की केवल कोई शक्ति नहीं बल्कि खुद आत्मा है। वह आत्मा के जीवन से सम्बन्धित जीवन के गुणों की बात कर रहा लगता है जो विश्वासी के अंदर से निकलते हैं। पाठक के लिए एक व्यक्ति के द्वारा किए जाने वाले आत्मा के गुणों और उसके कामों में अंतर को देखना आवश्यक है। उसका आत्मिक स्वभाव यानी उसके अस्तित्व का आत्मिक पहलू जो मानवीय विश्वासी से जुड़ा है, विश्वास करने वाले की आत्मिकता में है। यह अंतर कुरिन्थियों की कलीसिया में देखा जा सकता है, जिसमें "किसी [आत्मिक] वरदान [*charisma*] में घटी नहीं" थी, क्योंकि वे "प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने की बाट जोहते रहते" थे (1 कुरिन्थियों 1:7)। फिर भी यह कलीसिया "अब तक शारीरिक" और वचन के बाहर थी (1 कुरिन्थियों 3:1-3)। कुरिन्थियों के पत्र को ऊपरी तौर पर पढ़ने से यह प्रभाव मिलता है कि कलीसिया में मोटे तौर पर अनैतिकता और सांसारिकता पाई जाती थी। इससे भी बुरा इसके कुछ सदस्यों का ऐसा व्यवहार था और वे इस पर घमण्ड करते थे (1 कुरिन्थियों 5:1-6)।

4:6 में पौलुस आत्मा के वास की बात कर रहा था न कि आत्मिक दानों के बाहरी प्रदर्शन, बल्कि "हमारे हृदयों में" आत्मा के भेजे जाने की। आत्मा का यह वास हमें उसके वचन के द्वारा स्वर्गीय पिता के साथ हमारे निकट सम्बन्ध की समझ दिलाता है। आत्मा हमें परमेश्वर को

''हे अब्बा, हे पिता!'' कहने के लिए वैसे ही सहायता करता है जैसे परमेश्वर की पवित्र, पर पीड़ादायक इच्छा को मानने के लिए बड़ी घनिष्ठता से यीशु कोशिश करता था। मरकुस 14:36 में यीशु ने पुकारा था, ''हे अब्बा, हे पिता, तुझ से सब कुछ हो सकता है; इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले: तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, पर जो तू चाहता है वही हो।'' ''अब्बा'' शब्द पहली सदी के दौरान इस्राएल में रहने वाले यहूदियों की भाषा, अरामी से लिया गया है।

यूनानी धर्मशास्त्र में **पुकारता है** (*krazon*) अलिंगी कृदंत है जो ''आत्मा'' (*pneuma*) के अलिंगी होने से सहमत है। यह विवरण किसी भी प्रकार से आत्मा के अवैयक्तिक होने के लिए नहीं समझा जाना चाहिए। यह केवल मूल भाषा की व्याकरणीय विशेषता है। वचन यह कह रहा है कि पुकार चाहे हमारे हृदयों में से निकलती है पर यह पुकार करने वाला आत्मा ही है। पवित्र आत्मा को छोड़ जो हमारे हृदयों में वास करता है जैसे हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारी दुर्बलता में वैसे प्रार्थना करने के लिए हमारी सहायता में आने वाला और कोई नहीं है (देखें रोमियों 8:26, 27)।

अन्य वचनों में विशेष कर रोमियों 8 में पौलुस ने आत्मा के वास के बारे में बताया। उसने कहा कि ''यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं'' (रोमियों 8:9)। इसके विपरीत ''जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं'' (रोमियों 8:14)। ''भय में वापस जाने के लिए दासता की आत्मा'' के बजाय हमें ''पुत्रों के रूप में लेपालकपन का आत्मा मिला है, जिसके द्वारा हम, हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं!'' (रोमियों 8:15; ESV)। आत्मा का वास हमारे अंदर है और वह हमारे लिए ''ऐसी आंहें भर भर कर, जो बयान से बाहर हैं'' विनती करता है (रोमियों 8:26)। पौलुस ने पवित्र लोगों के पुनरुत्थान पर इसे लागू करते हुए गोद लिए जाने और पुत्र के रूपक को इस्तेमाल किया: ''पर हम भी जिनके पास आत्मा का पहला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने की, अर्थात् अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं'' (रोमियों 8:23; NIV)।[13]

1 कुरिन्थियों में पौलुस ने पवित्र आत्मा के वास की बात की। कुरिन्थुस के मसीही लोगों से पौलुस ने पूछा, ''क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो?'' (1 कुरिन्थियों 6:19)। आत्मा कलीसिया में वास करता है (1 कुरिन्थियों 3:16), जो कि परमेश्वर का मन्दिर भी है और मसीह की देह भी (2 कुरिन्थियों 6:16; इफिसियों 1:22, 23), तो क्या इसके अंगों में भी जिनसे वह देह बनती है वह नहीं होगा (1 कुरिन्थियों 12:13, 24–27)? इनमें से किसी भी वचन में पौलुस केवल थियोलॉजी की खोज नहीं कर रहा था। बल्कि वह एक सच्चाई बता रहा था जो मसीह के साथ हमारे सम्बन्ध, हमारे आत्मिक विचार के नमूनों और आत्मा के अनुसार हमारे चलने के लिए निर्णायक है।

आत्मा परमेश्वर के बालक में केवल उसके ज्ञान या पवित्र शास्त्र की समझ के द्वारा ही वास नहीं करता है। इस सच्चाई को रोमियों 8:16 में पौलुस के शब्दों में दिखाया गया है: ''आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।'' हमारी आत्मा की कोई भी गवाही जो हम विश्वास करते हैं उसकी समझ के पक्के यकीन से ही मिल सकती है। इसलिए यह तर्कसंगत लग सकता है कि पौलुस यहां पर आत्मा के हमारे साथ गवाही देने

(*summartureō*) की ही बात कर रहा है।

आत्मा के व्यक्ति और काम के बिना, मसीही जीवन जीना व्यवस्था के अधीन भक्त यहूदी के जीवनों के जीने से आसान नहीं होगा। ब्रूस ने टिप्पणी की है:

> परमेश्वर की इच्छा के साथ मेल खाते ढंग के द्वारा जो कुछ व्यवस्था में आवश्यक था वही उनके जीवनों में जो अब पवित्र आत्मा के द्वारा चलते हैं, पाया जाता है और उन्हें पुराने ढंग की सेवा के वश से छुड़ाया जाता है। परमेश्वर की आज्ञाएं अब परमेश्वर की सामर्थ बन गई हैं।

फिर उसने एक पुराने भजन का एक हिस्सा उद्धृत किया:

> व्यवस्था की आज्ञा है, भागो ... और काम करो,
> पर मुझे न तो पांव देती है और न हाथ;
> पर सुसमाचार कितनी अच्छी खबर देता है,
> यह उड़ने को कहता है, और फिर मुझे पंख लगा देता है।[14]

आयत 7. पौलुस इस्राएल के बचपने की अवस्था की चर्चा का निष्कर्ष बताने लगा। वारिस अब जबकि "पिता के ठहराए हुए समय" के अनुसार बड़ा हो गया है (4:2) और जवाबदेही की उम्र तक पहुंच गया है, अब वह "संरक्षकों और प्रबंधकों के वश में" नहीं रहा और इस कारण वह 3:25 वाले "शिक्षक" की सेवाओं के बिना काम चला सकता है। यह शिक्षक जो अपनी कई बंदिशों और नियन्त्रणों वाली व्यवस्था को दिखाता है, इसको "तू करना" और इसको "तू न करना" परमेश्वर के परिपक्व बालक को अब इनकी कोई आवश्यकता नहीं है। पुत्रत्व के आत्मा को बहाए जाने के द्वारा वह ज़िम्मेदारी वाले व्यवहार वाली उम्र तक पहुंच गया है और अब वह अपने आपको जिस भी परिस्थिति में पाए अपने पिता को प्रसन्न करने के लिए बड़े फैसले ले सकता है।

सयाना होने की उम्र की अवधारणा को बांटकर व्याख्या की जानी चाहिए। इस संदर्भ में पौलुस व्यक्ति की उम्र बढ़ने की बात नहीं कर रहा था बल्कि इस्राएल के इतिहास के एक विशेष चरण की बात कर रहा था। वह "समय पूरा होने" की बात कर रहा था (4:4), जब परमेश्वर ने पवित्र आत्मा की सामर्थ्य देने वाली शक्ति को देने के लिए जाति पर सामूहिक रूप में काम किया।[15] उसने ऐसा किया "इसलिये कि व्यवस्था की विधि [*dikaiōma*] हममें जो शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए" (रोमियों 8:4)। पौलुस ने इस तथ्य पर ज़ोर दिया कि ये आशिषें "पहले तो यहूदी और फिर यूनानी के लिए" थीं (रोमियों 1:16; देखें 2:9, 10)। प्रेरितों के काम से पता चलता है कि सुसमाचार के प्रचार के अपने कार्य में पौलुस ने इस नियम को बराबर माना।

इसलिए शब्द गलातियों के आत्मा को ग्रहण करने की पिछली आयत को जोड़ देता है। आत्मा विश्वासी को स्वतन्त्रता दिलाता है, इस कारण पौलुस ने कहा **तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है।** प्राचीन जगत में दासता चाहे आम थी, विशेषकर निकट पूर्व में, पर स्वतन्त्रता को पाने का अवसर अगर मिल जाता तो सबकी प्राथमिकता लगभग यही होती (देखें यूहन्ना 8:31-36)।[16]

यूनानियों में "धार्मिक दासत्व से मुक्ति" की एक काल्पनिक प्रथा के द्वारा[17] जैसा कि डैल्फि के अपोलो के मन्दिर में होता था, दास को छोड़ा जा सकता था। स्वतन्त्रता का विचार बनाम दासत्व पौलुस के पूरा पत्र लिखते हुए उसके दिमाग से निकला नहीं।

यहां पर प्रेरित का फोकस राजनैतिक स्वतन्त्रता नहीं थी। बल्कि वह व्यवस्था से या किसी भी ऐसे सिस्टम से जिसमें धर्मी परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराए जाने के लिए आज्ञा मानने की शर्त शामिल हो, के दासत्व से आत्मिक स्वतन्त्रता की बात कर रहा था। पौलुस के दिमाग में छुटकारे और मुक्ति की धारणाएं थीं, जो कि दोनों की दोनों मसीह के आगमन और मनुष्यों के पुत्रों के बीच उसके मिशन के साथ जुड़ी हुई हैं। परन्तु ऐसा नहीं है कि मसीही लोग हर प्रकार के दायित्व से छूट गए हों। जो लोग पाप और व्यवस्था के जूए से छूट गए थे उन्हें पौलुस ने कहा, "अब मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए, जिसके सांचे में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए" (रोमियों 6:17ख, 18)। परमेश्वर का बालक जिसे नया जन्म पाने के द्वारा पवित्र आत्मा का दान मिला है, आज्ञा मानने *से* नहीं बल्कि आज्ञा मानने *के लिए* छूटा है। उसने पाप और मूसा की व्यवस्था के जूए के स्थान पर यीशु का सहज जूआ उठा लिया है और उसके राज्य की सेवा के लिए स्वेच्छा से आज्ञा मानने के कारण उसे भरती कर लिया है (मत्ती 11:28-30)। प्रेमी यीशु की प्रेमी, अनुग्रहकारी शक्ति के आगे घुटने टेकने से हमें वह स्वतन्त्रता मिलती है, जिसकी चर्चा मत्ती 11 और गलातियों 4 में की गई है।

एक और बड़ी आशीष जो गोद लिए जाने के अनुग्रह के साथ ही है वह इसमें शामिल मीरास है: **तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ**। "मीरास" (*klēronomia*) "वारिस" (*klēronomos*) शब्दों का मुख्य आधार इस्राएल को कनान देश की परमेश्वर की प्रतिज्ञा है जिसमें लोग मिस्र की दासता के जूए के तले कराह रहे थे (निर्गमन 2:24; 3:17)। परमेश्वर ने अपने "जेठा" इस्राएल (निर्गमन 4:22) को मीरास की आशीष देने के लिए दासत्व में से बुलाया। मूल में परमेश्वर ने अब्राहम को बताया था कि उसके वंशज "दास हो जाएंगे और वे उनके चार सौ वर्ष तक दुख" सहेंगे। उस समय के बाद उन्होंने छूट जाना था और उन्हें कनान देश में लौट जाने और उसी मीरास को पाने की अनुमति मिलनी थी (उत्पत्ति 15:13-21)। इस देश को "चिट्ठी डालकर" विभाजित किया जाना था।[18] परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिया था, "तौभी देश चिट्ठी डालकर बांटा जाए; इस्राएलियों के पितरों के एक एक गोत्र का नाम, जैसे जैसे निकले वैसे वैसे वे अपना अपना भाग पाएं। चाहे बहुतों का भाग हो चाहे थोड़ों का हो, जो जो भाग बांटे जाएं वह चिट्ठी डालकर बांटे जाए" (गिनती 26:55, 56)। यह पक्का नहीं है कि यह कैसे हुआ पर ऐसे परिणाम परमेश्वर के द्वारा किए जाते थे। नीतिवचन 16:33 से यह स्पष्ट है: "चिट्ठी डाली जाती तो है, परन्तु उसका निकलना यहोवा ही की ओर से होता है।"

नई वाचा के अधीन वारिसों की मीरास आत्मिक और स्वर्गीय है। 5:21 में पौलुस ने इसे "परमेश्वर के राज्य" के रूप में बताया (देखें 1 कुरिन्थियों 15:50; इफिसियों 5:5)। पतरस ने इसे "अविनाशी, और निर्मल, अजर मीरास" कहा "जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में रखी है" (1 पतरस 1:4)।

यदि किसी को समझ में नहीं आया कि "परमेश्वर के द्वारा वारिस" वाक्यांश का क्या अर्थ है तो उसके लिए यह जानना तसल्ली देने वाला हो सकता है कि जिन्होंने हस्तलिपियों की

आरम्भिक यूनानी प्रतियां बनाईं उनके साथ भी यही समस्या थी। ''परमेश्वर के द्वारा'' निश्चय ही सबसे बढ़िया पठन है। परन्तु दूसरी शताब्दी के अंत से और नौवीं शताब्दी के बाद की प्रतियों में कम से कम आठ विभिन्न संस्करण ''परमेश्वर का,'' ''परमेश्वर के कारण,'' ''मसीह के द्वारा,'' ''यीशु मसीह के द्वारा,'' ''मसीह के द्वारा परमेश्वर का,'' ''यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के,'' ''मसीह यीशु में परमेश्वर के द्वारा,'' और ''एक और तो परमेश्वर के ओर दूसरी ओर मसीह के संगी वारिस'' मिलते हैं। इनमें से कई पठन यूनानी हस्तलिपियों में नहीं मिलते परन्तु पुराने लातीनी, सीरियाई, कॉप्टिक, इथियोपियाई और गॉथिक जैसे संस्करणों में दिखाए जाते हैं। इन विभिन्न अनुवादों में इस तथ्य की साक्षी है कि सदियों से प्रतिलिपिक और अनुवादक इस संदर्भ में ''के द्वारा'' के अर्थ को समझ नहीं पाए हैं। आरम्भिक पाठकों को ''परमेश्वर के द्वारा'' से ''परमेश्वर का'' अधिक तर्कसंगत लगता होगा। शायद व्याख्या करते हुए किसी शिक्षक ने उस हस्तलिपि के मूल पठन के ऊपर जिसको वह इस्तेमाल कर रहा था, ''के'' लिख दिया और फिर बाद के प्रतिलिपिकों ने गलती के सुधार के रूप में पवित्र शास्त्र में इसे शामिल कर लिया (इस बात का अहसास न करते हुए कि यह केवल व्याख्यात्मक टिप्पणी थी)।[19]

पौलुस का व्यक्तिगत आग्रह (4:8-20)

मसीह में विश्वास की श्रेष्ठता के अपने तर्क को जारी रखते हुए पौलुस ने दो भागों वाला व्यक्तिगत आग्रह जोड़ दिया। पहले तो प्रेरित ने गलातिया के मसीहियों को आत्मिक दासत्व की स्थिति में न लौटने की चेतावनी दी। यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के प्रभाव में, कुछ अन्यजाति मसीही व्यवस्था का जूआ उठाकर यही कर रहे थे (4:8-11)। दूसरा, उसने उन्हें उसे और उसके संदेश को आनन्द से वैसे ही स्वीकार ग्रहण करने को कहा जैसे उन्होंने उसके पहली बार सुसमाचार सुनाने पर किया था (4:12-20)।

गलातियों का आत्मिक दासत्व में लौटना (4:8-11)

[8]पहले तो तुम परमेश्वर को न जानकर उसके दास थे जो स्वभाव से परमेश्वर नहीं, [9]पर अब जो तुम ने परमेश्वर को पहचान लिया वरन परमेश्वर ने तुम को पहचाना, तो उन निर्बल और निकम्मी आदि-शिक्षा की बातों की ओर क्यों फिरते हो, जिनके तुम दोबारा दास होना चाहते हो ? [10]तुम दिनों और महीनों और नियत समयों और वर्षों को मानते हो। [11]मैं तुम्हारे विषय में डरता हूं, कहीं ऐसा न हो कि जो परिश्रम मैं ने तुम्हारे लिए किया है व्यर्थ ठहरे।

आयत 8. मसीह में विश्वास से धर्मी ठहराए जाने की आशिष के बजाय व्यवस्था के श्राप का चयन करने वाले किसी भी व्यक्ति की मूर्खता को दिखाने के बाद (देखें 3:24, 25), पौलुस ने गलातियों के मसीही बनने से पहले की दशा पर विचार किया। उनमें से अधिकतर लोग अन्यजाति थे इस कारण उसने उस समय की ओर वापस देखा जब [वे] **परमेश्वर को न जान**ते थे। यह स्थिति दासत्व का एक रूप भी था क्योंकि वे न केवल मूर्तिपूजा के अधीन थे बल्कि मूर्तिपूजक संसार के व्यर्थ अंधविश्वासी और सामान्य नैतिक नीचता के वश में भी थे (रोमियों

1:18-32)। इफिसियों के नाम अपने पत्र में प्रेरित ने ऐसे लोगों का वर्णन "आशाहीन और जगत में ईश्वर रहित" लोगों के रूप में किया (इफिसियों 2:12)।

दासत्व और स्वतन्त्रा के विषय की चर्चा करते हुए पौलुस ने गलातियों की परिस्थितियों की विडम्बना को दिखाने की कोशिश की। वे अभी-अभी "निर्बल और निकम्मी आदि-शिक्षा की बातों" (4:9) से छूटे थे और मसीह में उन्हें सब आशिषों और सुविधाओं वाली नई-नई स्वतंत्रता मिली थी, परन्तु व्यवस्था को मानकर वे दासत्व के वैसे ही विनाश में चले गए थे (देखें 4:3)। वे ऐसी नादानी भरी बात कैसे कर सकते थे (3:1-5)? आखिर परमेश्वर ने उन्हें दासों के बजाय अपने पुत्र बना दिया था और अब वे अनन्त मीरास के वारिस बन गए थे (4:7; देखें 4:1)। प्रेरित यह समझ नहीं पाया कि वे दासत्व में लौट क्यों गए थे। एक अर्थ में वह पूछ रहा था, "एक कैदखाने से छूटकर तुम स्वेच्छा से किसी दूसरे कैदखाने में जा रहे हो?"

अन्यजातियों के मनपरिवर्तन की पहले की स्थिति में यह मसीही लोग **उसके दास थे जो स्वभाव से परमेश्वर नहीं**। पौलुस की भाषा यहां पर 1 कुरिन्थियों 8:5, 6 की उसकी बात को याद दिलाती है जिसमें उसने मूर्तिपूजकों के "बहुत से ईश्वरों" और मसीहियों और यहूदियों के "एक ही परमेश्वर" के बारे में लिखा था। वे आयतें प्रासंगिक तो हैं पर इस आयत के NASB के अनुवाद में इससे पहले की आयत खेदजनक हैं: "हम जानते हैं कि *मूर्ति जैसी कोई वस्तु नहीं* है, और एक को छोड़ कोई परमेश्वर नहीं है" (1 कुरिन्थियों 8:4)। बेशक प्राचीन जगत में लोगों के पास मूर्तियां होती थीं और वह उनका इस्तेमाल करते थे। पौलुस इस तथ्य की ओर ध्यान दिला रहा था कि संसार में मूर्तियों का कोई महत्व नहीं है। ऐसा उसने मूर्तियों के सामने बलि किए हुए मांस को खाने के सम्बन्ध में कहा था। इसे खाने में सहज रूप में कुछ भी गलत नहीं है, क्योंकि मांस मसीही व्यक्ति को जिसे इसकी समझ थी और उसे मालूम था कि वह क्या कर रहा है दूषित या किसी प्रकार से आत्मिक हानि नहीं पहुंच सकता था। परन्तु यदि किसी का विवेक अभी भी मूर्ति से बंधा हो तो चाहे उसका अपना विवेक हो या दूसरे का, वह खाने से परहेज ही रखता तो अच्छा था (1 कुरिन्थियों 10:25-29)। दूसरी ओर पौलुस ने "कथित ईश्वरों" या ऐसे बलिदानों में जो भी शामिल हो, के प्रभाव को पूरी तरह से नकारा नहीं। इन "बहुत से ईश्वरों" का परमेश्वर के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था।

आयत 9. अन्यजाति मसीही चाहे पहले मूर्तिपूजक थे **पर अब** [उन्होंने] **परमेश्वर को पहचान लिया वरन परमेश्वर ने** [उन] **को पहचाना**। "पहचान" का अनुवाद यूनानी शब्द (*ginōskō*) से किया गया है जिसका अनुवाद "मानना" या "स्वीकारना"[20] भी हो सकता है। अनुवादक के लिए इस संदर्भ में अर्थों को जोड़ना आवश्यक है, कोई भी विकल्प मान्य है (देखें भजन 1:6; LXX; 1 कुरिन्थियों 8:3)। "पहचान लिया" इन अन्यजातियों के मनपरिवर्तन में अन्यजातियों का परमेश्वर की ओर लौटने का ध्यान दिलाता है। और तो और "परमेश्वर ने पहचाना" वाक्यांश परमेश्वर द्वारा उन्हें अपने लोगों के रूप में स्वीकारने या ग्रहण करने के लिए होगा।[21] 4:6, 7 में इस सम्बन्ध को पुत्रत्व के शब्दों में व्यक्त किया गया है।

गलातियों को मसीह में यह अजब स्वतन्त्रता प्राप्त हुई थी, इस कारण पौलुस ने पूछा, **तो उन निर्बल और निकम्मी आदि-शिक्षा की बातों की ओर क्यों फिरते हो, जिनके तुम दोबारा दास होना चाहते हो?** "आदि शिक्षा" (*stoicheia*) शब्द 4:3 से दोहराया गया है। उस

आयत में यह यहूदियों के लिए थी जो व्यवस्था के अधीन होने के कारण "संसार की आदि शिक्षा के वश में" थे। वे व्यवस्था के शारीरिक और आधारभूत नियमों के गुलाम थे।

4:9 में पौलुस ने कहा कि अन्यजाति मसीही मूर्तिपूजा और अनैतिक जीवन के सम्बन्ध में "निर्बल और निकम्मी आदि शिक्षा की बातों" के "दासत्व" (KJV) में थे। रोमियों 1—3 में ऐसा ही परिदृश्य दिखाया गया है जहां अन्यजातियों और यहूदियों दोनों को पाप के वश में होने के रूप में दिखाया गया है जिन्हें उद्धारकर्त्ता की जरूरत है। रोमियों 3:1, 2 में पौलुस ने इस प्रश्न पर विचार किया "अत: यहूदी की क्या बड़ाई या खतने का क्या लाभ?" उसने इस प्रश्न का उत्तर खुद ही दिया: "हर प्रकार से बहुत कुछ। पहले तो यह कि परमेश्वर के वचन उनको सौंपे गए।" फिर भी परमेश्वर के वचन होने का अर्थ यह नहीं था कि उन तक परमेश्वर की पहुंच अपने आप ही हो जाए। इसी संदर्भ में पौलुस ने आगे पूछा, "तो फिर क्या हुआ? क्या हम उनसे अच्छे हैं? कभी नहीं; क्योंकि हम यहूदियों और यूनानियों दोनों पर यह दोष लगा चुके हैं कि वे सब के सब पाप के वश में हैं" (रोमियों 3:9)। परमेश्वर तक और आत्मिक जहाज तक पहुंच केवल मसीह ही दिला सकता था (रोमियों 3:21-26)। मनुष्य को पाप के दासत्व से जो हर किसी के लिए है जिसने अभी मसीह को "पहचाना" नहीं या "परमेश्वर ने उसे पहचाना" नहीं, पाप के दासत्व से वही छुड़ा सकता था।

मसीही लोगों से, जिन्होंने यहूदी मत की शिक्षा देने वालों की झूठी शिक्षा को मान लिया था, बात करते हुए पौलुस के कहने का अर्थ यही था। अन्यजाति मसीहियों के ऊपर व्यवस्था थोपकर ये झूठे शिक्षक "[उन्हें] घबरा देते और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते" थे (गलातियों 1:7; NIV)।

प्रेरित ने उन्हें "उन निर्बल और निकम्मी आदि शिक्षा की बातों की ओर" न फिरने की चेतावनी दी। "निर्बल" के लिए यूनानी शब्द (*asthenēs*) "बीमारी" के लिए यूनानी शब्द (*astheneia*) का विशेषणात्मक रूप है। 4:13 में पौलुस ने अपनी "शारीरिक बीमारी" का संकेत देने के मूल अर्थ में इस बाद वाले शब्द का इस्तेमाल किया। *Astheneia* को *sthenos* शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है "स्वस्थ।" पूर्वसर्ग a "अ" की तरह नकारात्मक अक्षर है, सो यह शब्द "अस्वस्थ" के बराबर है और इसका अनुवाद "निर्बल," "दुर्बल" या "बीमार" किया जा सकता है। पौलुस यह कह रहा था कि *व्यवस्था की मौलिक या आधारभूत बातें जिनकी ओर ये अन्यजाति मसीही मुड़ रहे थे उनके उद्धार के लिए उतनी ही निर्बल थीं जितने उनके पूर्व झूठे ईश्वर थे,* यानी वे मूर्तियां जिन पर वे पहले भरोसा करते थे।

"निकम्मी" (*ptōchos*) या "कंगाल" (NIV) में लाचार होने का विचार पाया जाता है। यीशु ने इसी शब्द का इस्तेमाल किया जब उसने कहा, "कंगाल तो तुम्हारे साथ सदा रहते हैं" (मत्ती 26:11क)। कंगाल व्यक्ति जो जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रहा हो वह छुटकारा खरीदने की आशा कैसे कर सकता है? मनुष्य के पास ऐसा कुछ नहीं है जिसे वह पापी आत्मा के छुटकारे के लिए परमेश्वर को पेश कर सके, चाहे वह कैसा भी कीमती क्यों न हो। हम गीत गाते हैं, "दिल के दाग को धोवे कौन? लहू जो कि क्रूस से जारी।" ("What can wash away my sin? Nothing but the blood of Jesus.")[22] व्यवस्था की "निर्बल और निकम्मी आदि शिक्षा की बातों" का हाल यही है। पुरानी वाचा की वेदी पर भेंट किए जाने वाले

लाखों बेदाग जानवर यहूदियों के पापों को कभी भी पूरी तरह से मिटा नहीं पाएंगे इब्रानियों के लेखक ने लिखा है:

> क्योंकि व्यवस्था जिसमें आनेवाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उनका असली स्वरूप नहीं, इसलिए उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा, जो प्रति वर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आने वालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकतीं। . . . क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे (इब्रानियों 10:1-4)।

यही कारण है कि हम अन्यजाति मसीहियों के एक कैद (मूर्तिपूजा और अनैतिकता) को छोड़ एक दूसरी कैद (व्यवस्था की दासता) की ओर बढ़ने और ऐसा स्वेच्छा से करने की बात करते हैं! कितनी विडम्बना भरी बात है! हैरानी की बात नहीं है कि पौलुस ने पत्र में इतनी कड़ी भाषा का इस्तेमाल क्यों किया: "हे निर्बुद्धि गलातियों" (3:1); "क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो कि आत्मा की रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे?" (3:3)। व्यवस्था और किसी भी व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता मानवीय देह की प्राप्ति और किसी की अपनी धार्मिकता माना जाएगा। परन्तु मसीह में धार्मिकता हमारे परमेश्वर के अनुग्रह का दान है जो हमें व्यवस्था की दासता से छुड़ाता है।

आयत 10. यह संदर्भ ऐसा कोई संकेत नहीं देता है कि इन अन्यजाति मसीहियों को अपनी पुरानी मूर्तिपूजक रस्मों में लौटते हुए कोई लालच दिया जा रहा था। बल्कि वे उन्हें अच्छे यहूदी मसीही बनाने के लिए जैसा वे अपने आपको मानते थे, यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के प्रयासों को मान रहे थे। इसलिए यह तय करने के लिए कि **दिनों और महीनों और नियत समयों और वर्षों** से पौलुस का क्या अभिप्राय था, हमें व्यवस्था को देखना होगा न कि उस समय के यूनानी-रोमी धर्मों को।

आम तौर पर समय के विभाजन अच्छा काम करते हैं। पवित्र शास्त्र में इनका पहली बार पता सृष्टि के वर्णन में मिलता है। उत्पत्ति 1:14 के अनुसार, "फिर परमेश्वर ने कहा, 'दिन को रात से अलग करने के लिये आकाश के अन्तर में ज्योतियां हों; और वे चिन्हों, और नियत समयों, और दिनों, और वर्षों के कारण हों।' "

पौलुस के "दिनों और महीनों और नियत समयों और वर्षों" की पृष्ठभूमि के लिए पुराने नियम को ध्यान में रखने पर कई हवाले दिखाई देते हैं जो मन्दिर या तम्बू से जुड़े हैं। पवित्र दिनों और धार्मिक पर्वों की स्थापना के बारे में लैव्यव्यवस्था 23 में पढ़ने को मिलता है जिसमें बलिदानों की भेंटों के सही सही समयों के विस्तापूर्वक वर्णन मिलते हैं। तम्बू पहले इस्राएल की आराधना का स्थापित केन्द्रबिन्दु हुआ। बाद में सुलैमान ने "विश्राम और नये चांद के दिनों में और हमारे परमेश्वर यहोवा के सब नियत पर्वों में" बलियां चढ़ाने के लिए यरूशलेम में मन्दिर बनवा दिया (2 इतिहास 2:4)। परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार बलिदान "विश्राम और नये चांद और वर्ष में तीन बार ठहराए हुए पर्वों अर्थात अखमीरी रोटी, और सप्ताहों के पर्व और झोपड़ियों के पर्व में" चढ़ाए जाते थे (2 इतिहास 8:13)। यदि हठी इस्राएली मन न फिराते तो परमेश्वर ने घोषणा की कि "मैं उसके पर्व, नये चांद और विश्रामदिन आदि सब नियत समयों के उत्सवों का अन्त कर दूंगा" (होशे 2:11)। जैसे सुलैमान ने किया था, हिज़किय्याह ने यहूदा राज्य को

आज्ञा दी कि "विश्राम और नये चांद के दिनों और नियत समयों की होम बली चढ़ाएं जैसा कि यहोवा की व्यवस्था में लिखा है" (2 इतिहास 31:3)।

गलातियों में ऐसे शब्दों का पौलुस का इस्तेमाल उन नियमों के सम्बन्ध में है जो पुराने नियम में चाहे महत्वपूर्ण हैं, पर नई वाचा में मसीही लोगों को उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। प्रेरित ने उनके निर्बल विवेक को सहन करने को भी दिखाया जो लम्बे समय से इन्हें मानते रहने के कारण अभी भी ऐसी अवधारणाओं में बंधे हुए थे; रोमियों 14:1—15:3 में बलवानों को भी उनके प्रति विचारवान होने को समझाया। रोमियों का संदर्भ यह नहीं दिखाता कि पौलुस अभी अभी मसीही बनने वाले अन्यजातियों की बात कर रहा था या यहूदियों की। उसकी चिंता यह थी कि विशेष भोजनों के खाने और विशेष पर्वों के मनाने के ढंग से निर्बलों का विवेक प्रभावित हो रहा था। उसने लिखा:

> एक को विश्वास है कि सब कुछ खाना उचित है, परन्तु जो विश्वास में निर्बल है वह साग पात ही खाता है। . . . कोई तो एक दिन को दूसरे से बढ़कर मानता है, और कोई सब दिनों को एक समान मानता है। हर एक अपने ही मन में निश्चय कर ले (रोमियों 14:2-5)।

किसी का अपना हो या किसी दूसरे का कमज़ोर विवेक से जुड़ा न हो तो ऐसे बाहरी कर्मकाण्डों का चाहे जो भी प्रभाव हो पर सुसमाचार के आत्मिक सार पर कोई असर नहीं होगा। पौलुस ने कहा कि "क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं, परन्तु धर्म और मेल-मिलाप और वह आनन्द है जो पवित्र आत्मा से होता है" (रोमियों 14:17; NIV)। उसने यह भी लिखा कि "मैं निर्बलों के लिए निर्बल सा बना, कि निर्बलों को खींच लाऊ, मैं सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना हूं, कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊं" (1 कुरिन्थियों 9:22)।

गलातियों 4:10 और कुलुस्सियों 2:16, 17 की तुलना करना:

> इसलिए खाने-पीने या पर्ब्ब या नए चान्द, या सब्तों के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करे। क्योंकि ये सब आनेवाली बातों की छाया हैं, पर मूल वस्तुएं मसीह की हैं।

यह नये नियम का हवाला है जो 2 इतिहास से लिए गए उदाहरणों से बहुत मेल खाता है। पौलुस के समय के नाम पुराने नियम की रस्मों के साथ जो साप्ताहिक ("सब्त का दिन") मासिक ("नया चांद") और वार्षिक ("पर्व") रूप में ठहराए होते थे, बहुत हद तक मेल खाते थे। इसके अलावा "छाया हैं" शब्द हमें यह बताते हैं कि ये रस्में सुसमाचार युग की जो आने वाला था भविष्यसूचक तस्वीर थी (देखें इब्रानियों 8:5; 10:1)। यह निर्णायक रूप से ऐसी किसी भी धारणा को कि पौलुस मूर्तिपूजकों से जुड़ी किसी चीज़ की बात कर रहा होगा खारिज कर देता है। समस्या यहूदी मत की थी, जिसे यहूदी टांग अड़ाने वाले बड़ी ही सफ़लता से मसीही शिष्यता के लिए आवश्यक शर्त के रूप में सुसमाचार में डाल रहे थे। पौलुस ने कहा कि यह सुसमाचार का बिगाड़ था और वास्तव में सुसमाचार (शुभसमाचार) था ही नहीं (गलातियों 1:6, 7)।

आयत 11. गलातियों की यहूदी मत की प्रवृतियों को ध्यान में रखते हुए पौलुस ने कहा, **मैं तुम्हारे विषय में डरता हूं, कहीं ऐसा न हो कि जो परिश्रम मैं ने तुम्हारे लिए किया है व्यर्थ**

ठहरे। उसे चिंता थी कि व्यवस्था को मानने की धार्मिकता के आधार के लिए मसीह में उनकी आत्मिक स्वतन्त्रता छिन न जाए। ऐसा ही विचार 2 कुरिन्थियों 6:1 में मिलता है जहां प्रेरित ने कुरिन्थी विश्वासियों को "समझाया कि परमेश्वर का" अनुग्रह जो तुम पर हुआ है, उसे व्यर्थ न जाने दे। एक व्यक्ति मसीह के सुसमाचार को मान सकता है और फिर उसका जीवन ऐसे हो सकता है जैसे वह इसका इनकार कर रहा हो, चाहे यहूदी मत की शिक्षा के द्वारा हो या फिर उदारवादी शिक्षा के द्वारा। किसी भी परिस्थिति में वह मसीह से "अलग" हो जाता या "कट जाता" है (NIV) (गलातियों 5:4)।

पौलुस यह सोचना नहीं चाहता था कि उसने गलातियों पर "जो परिश्रम किया वह व्यर्थ ठहरे।" "परिश्रम" के लिए शब्द (*kopiaō*) का अर्थ "कठिन काम करना," "श्रम," "प्रयास करना," या "संघर्ष" है। यह ऐसे किसी कठिन कार्य के लिए कहा जाता है जो व्यक्ति को "थका देता" या "शिथिल कर देता" है।[23] गलातिया की कलीसियाओं को पौलुस और बरनबास के द्वारा पहली मिशनरी यात्रा के दौरान स्थापित किया गया था (प्रेरितों 13; 14)। इन लोगों ने सुसमाचार सुनाना जारी रखा था, चाहे वे सताए भी गए थे। लुस्त्रा में पौलुस पर पथराव तक किया गया था और उसे मरा हुआ समझकर छोड़ दिया गया था (प्रेरितों 14:19)। निश्चय ही वह नहीं चाहता था कि ये व्यक्तिगत बलिदान "व्यर्थ" (*eikē*) जाएं यानी "बेकार जाएं।"[24]

गलातियों के व्यवहार पर पौलुस की परेशानी (4:12-20)

[12]हे भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूं, तुम मेरे समान हो जाओ; क्योंकि मैं भी तुम्हारे समान हो गया हूं; तुम ने मेरा कुछ बिगाड़ा नहीं। [13]पर तुम जानते हो कि पहले-पहल मैं ने शरीर की निर्बलता के कारण तुम्हें सुसमाचार सुनाया। [14]और तुम ने मेरी शारीरिक दशा को जो तुम्हारी परीक्षा का कारण थी, तुच्छ न जाना; न उससे घृणा की; और परमेश्वर के दूत वरन स्वयं मसीह के समान मुझे ग्रहण किया। [15]तो वह तुम्हारा आनन्द मनाना कहां गया? मैं तुम्हारा गवाह हूं कि यदि हो सकता तो तुम अपनी आंखें भी निकालकर मुझे दे देते। [16]तो क्या तुम से सच बोलने के कारण मैं तुम्हारा बैरी बन गया हूं। [17]वे तुम्हें मित्र बनाना तो चाहते हैं, पर भले उद्देश्य से नहीं; वरन तुम्हें अलग करना चाहते हैं कि तुम उन्हीं को मित्र बना लो। [18]पर यह भी अच्छा है कि भली बात में हर समय मित्र बनाने का यत्न किया जाए, न केवल उसी समय कि जब मैं तुम्हारे साथ रहता हूं। [19]हे मेरे बालको, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिये फिर जाा की सी पीड़ाएं सहता हूं। [20]इच्छा तो यह होती है कि अब तुम्हारे पास आकर और ही प्रकार से बोलू, क्योंकि तुम्हारे विषय में मैं उलझन में हूं।

4:12-20 में पौलुस ने एक जोशीली अपील की, जैसी अध्याय 1 और 2 में की थी, वह ताजगी देने वाली आत्मकथा है। उसने ज़ोर देकर अपने "बालकों" से बात की जिनके लिए "[वह] फिर जच्चा की सी पीड़ाए सह" रहा था (4:19)। शिक्षक पौलुस जो रब्बी गमलीएल का होनहार छात्र रहा था (1:14; प्रेरितों 22:3) और "फरीसी होकर अपने धर्म के सबसे खरे पंथ के अनुसार" चलता था (प्रेरितों 26:5), अब कमज़ोर पड़ गया था, विश्वास में अपने प्रिय

बालकों को अपने नमूने का पालन करने की भीख मांग रहा था।

आयत 12. प्रेरित ने इन शब्दों के साथ अपनी अपील का आरम्भ किया: **हे भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूं, तुम मेरे समान हो जाओ।** अन्य कई संस्करणों के साथ NASB में क्रिया शब्द का अनुवाद "बन जाओ" (देखें NKJV; NIV; NRSV; NCV; ESV) के रूप में किया है। परन्तु यूनानी धर्मशास्त्र में (*ginesthe,* गिनेस्थ) (ginomai, गिनोमे) का वर्तमान आदेशसूचक रूप है और इसका सही सही अनुवाद "हो" (देखें KJV) होना चाहिए। यह तर्क दिया जा सकता है कि पौलुस ने लोगों को जो वह पहले थे, वही बने रहने की नसीहत नहीं दी होगी, और ऐसा अनुवादकों की सोच के कारण हो सकता है। तौभी "बने रहो" के इस अर्थ के कई उदाहरण पौलुस के लेखों में मिलते हैं: "इसलिए मैं तुम से विनती करता हूं, कि मेरी सी चाल चलो" (1 कुरिन्थियों 4:16)। "तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूं" (1 कुरिन्थियों 11:1)। "इसलिए प्रिय बालकों की नाईं परमेश्वर के सदृश्य बनो" (इफिसियों 5:1)। यह व्याकरणीय उपयोग यह दिखाता है कि जब पौलुस ने कहा कि "तुम मेरे समान हो जाओ," तो वह असल में यह कह रहा था कि "मेरी नकल करना न छोड़ो।"

प्रेरितों के उदाहरण की नकल करने की बात मसीही लोगों के नाम नए नियम के पत्रों में बार बार आने वाला विषय है।[25] पौलुस को अपने सहित, उदाहरण की शक्ति का पता था। सुसमाचार का प्रचार अपने आप में सामर्थ्य की बात है परन्तु यह विशेष रूप में तब सामर्थी हो जाता है जब उस व्यक्ति के मूर्त रूप से सजाने पर जो वैसे ही रह रहा है जैसे वह प्रचार कर रहा है। पौलुस यीशु मसीह का पूर्ण रूप में सामर्थ्य पाया हुआ दूत था। उसकी केवल बातें ही अधिकारात्मक नहीं थीं, क्योंकि वह परमेश्वर की ओर से थीं, बल्कि उसका जीवन और नमूना भी ऐसे ही थे। यह फिलिप्पी की कलीसिया के नाम लिखी उसकी बात से स्पष्ट हो जाता है: "जो बातें तुम ने मुझ से सीखीं, और ग्रहण की, और सुनी, और मुझ में देखीं, उन्हीं का पालन किया करो, तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा" (फिलिप्पियों 4:9)।

पौलुस ने आगे कहा, **क्योंकि मैं भी तुम्हारे समान हो गया हूं।** NASB में उन मूल शब्दों को जो यूनानी शास्त्र में नहीं हैं तिरछे किया गया है। आयत 12 में है, "जैसा मैं हूं वैसे बनो क्योंकि मैं भी वैसा *बन गया हूं* जैसे तुम *हो*।" प्राचीन यूनानी और इब्रानी दोनों में "होना" क्रिया आम तौर पर छोड़ दी जाती थी बात अपने आप स्पष्ट लगती हो और इस कारण उसे अनावश्यक माना जाता था। परन्तु अनुवादक "होना" की समय सीमा के प्रश्न के साथ कई बार छोड़ देता था। क्या यह भूतकाल, वर्तमान या भविष्य है? इसके अलावा यदि यह भूतकाल है तो किस प्रकार का भूत समय (काल) दिखाया जा रहा है?

यूनानी धर्मशास्त्र में यहां मूल में है, "मेरे जैसे बनो, क्योंकि मैं भी तुम्हारे जैसा हूं।" अंतिम वाक्यांश में क्रिया नहीं है इस कारण यूनानी व्याकरण के नियमों में यह आवश्यक है कि अर्थ निकालने के लिए "होना" का कोई रूप इसमें जोड़ा जाए। कौन सा रूप चुना जाए? क्या पौलुस गलातियों के साथ अपनी पहली मुलाकात को पीछे की ओर और उस तरीके को याद कर रहा था जैसे उन्होंने ग्रहण किया था या वह लिखे जाने के समय के निकट किसी बात पर विचार कर रहा था? तथ्य तो यह है कि यह सारी बात व्याख्या की है और हमारा निर्णय किसी भी प्रकार से आसान नहीं होगा, जैसा कि इस आयत पर टीकाकारों की चर्चाओं से स्पष्ट पता चलता है।

असल में संदर्भ में हो या किसी और तरह पौलुस के सामान्य ढंग को और काम करने के तरीके को जानने के लिए हम केवल तरीके खोज सकते हैं। जैसा कि आर. एलन कोल ने आयत की अपनी चर्चा के आरम्भ में कहा, उसने कहा कि "आरम्भिक वाक्य पहली पहेली है। मूल में यह 'मेरे जैसे बनो, जैसे मैं भी तुम्हारे जैसा (बन गया हूं)'।"[26]

यह अनियमित व्याकरण पौलुस की भावुक होने की स्थिति की झलक देती हो सकती है। ऐसी बातें केवल सार्वजनिक बोल-चाल में नहीं बल्कि लिखने के ढंग को भी प्रभावित करती हैं। मुख्य रूप में यह समझाने के लिए कि पौलुस के लेख में "जैसा मैं हूं वैसे बनो" लिखने की प्रेरणा कैसे मिली होगी, इसके दो विचार सुझाए गए हैं। (1) वह विश्वास में अपने बालकों के रूप में गलातियों से उसे अपना आदर्श मानते हुए उसकी नकल करते रहने का आग्रह कर रहा था। वह नहीं चाहता था कि वे उसमें अपने भरोसे को कमज़ोर करके यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के बहकावे में आएं। इस बात में पौलुस अपने आत्मिक पिता के रूप में उसके नमूने को मानने के लिए अपनी आत्मिक संतान को समझाने की सामान्य प्रथा को मान रहा होगा। (2) वह उन्हें चेतावनियों (उनके परिणामों के साथ) को, जो वह उन्हें बताने की कोशिश कर रहा था, स्वीकार करने से दूर रखने वाली हर रुकावट से बचाना चाहता था। इस बात में वह कह रहा था, "वैसे ही बने रहो जैसे मैं हमारे पहली बार मिलने के समय था, किसी जातीय या पुराने धार्मिक मतभेदों को मसीह में हमारे एक होने से रोकने की अनुमति न दें।"

हम जो भी विकल्प मानें, पौलुस का संदेश वास्तव में वही था। उसने गलातियों को वैसे ही ग्रहण किया था जैसे सब अन्यजाति मसीहियों को, उनके परमेश्वर की संतान और अपनी संतान के रूप में गोद लिए जाने में कोई फर्क न करके। यदि ऐसा है तो दूसरे वाक्यांश का अर्थ हो सकता है "क्योंकि मैं भी वैसा था जैसे तुम थे।" अन्य शब्दों में, "मैंने जातीयता के सम्बन्ध में, जीवन के पुराने ढंग, रंग रूप या किसी और बात पर कोई मतभेद नहीं किया।"

प्रेरित ने आगे कहा, **तुम ने मेरा कुछ बिगाड़ा नहीं।** इस बात के सम्बन्ध में ब्रूस का विचार विशेष रूप से ध्यान खींचने वाला है। उसने 2 कुरिन्थियों 6:11-13 के साथ तुलना की जहां पौलुस ने कुरिन्थुस में अपने नाराज विश्वासियों पर उनके साथ ऐसे बात करते हुए जैसा पिता अपने बच्चों से करता है, दिल की बात कह दी। उस संदर्भ में पौलुस ने कुरिन्थियों को यकीन दिलाया कि उसने उनका कुछ बुरा नहीं किया था (2 कुरिन्थियों 7:2), जैसे उसने गलातियों को यकीन दिलाया कि उन्होंने उसका कुछ नहीं बिगाड़ा था। ब्रूस ने निष्कर्ष निकाला, "मित्रों के बीच में किसी का कुछ बिगाड़ने की कोई शंका नहीं होनी चाहिए।"[27]

जे. बी. लाइटफुट ने माना कि इन शब्दों के कम से कम दो अलग अलग अर्थ बताए जाते हैं: (1) "[तुम ने] पहले कभी मेरी बात नहीं मोड़ी; अब भी मेरी बात मत मोड़ना" और (2) "शिकायत का मेरे पास कोई व्यक्तिगत आधार नहीं है।" बाद वाले अर्थ को "संदर्भ के लिए बेहतर माना गया" का पक्ष लेते हुए लाइटफुट ने सुझाव दिया कि "असल व्याख्या किसी अज्ञात परिस्थिति के अंदर छिपी हुई है जिसका . . . पौलुस संकेत देता है।"[28]

यह तय करने के लिए कि हमारे पास इतनी कम जानकारी होने पर हमारी व्याख्या क्या हो, हमें अपनी सीमाओं को मान लेना चाहिए। इन परिस्थितियों में हमारे निष्कर्ष को केवल सम्भावित ही माना जा सकता है। एक सरल सूचक वाक्य (जैसा कि यहां पर है) या सबसे

सामान्य छोटे शब्द (या उनका न होना, जैसा कि पिछली आयत में था) सबसे बड़ी समस्याएं हो सकती हैं। यह पक्का नहीं है कि इस चर्चा में यहां पौलुस की यह सीधी सी बात क्यों है। क्या वह गलातियों के साथ अपने पहली बार सम्पर्क में आने के समय को याद कर रहा था या वह हाल ही की किसी घटना की बात कर रहा था (जिसे वह और वे अच्छी तरह जानते थे, पर हम केवल उसका अनुमान लगा सकते हैं)?

यह विचार करने के बाद कि पौलुस की बात के विषय में दूसरों ने क्या लिखा है हमें लग सकता है कि यह सुझाव देना ठीक रहेगा कि इसके तुरन्त बाद की आयतों में इसका बेहतर उत्तर हो सकता है। यदि यह मान लिया जाए कि गलातिया में पौलुस का पहली बार जाना इस हवाले का आरम्भिक ढांचा था और जो कुछ उसके बाद हुआ वह उस ढांचे के बीच की तस्वीर थी, हमारे वचन पाठ की कई कथित समस्याएं अपने आप सुलझ सकती हैं, जिससे यह संदर्भ का बहाव बड़ा स्वाभाविक होकर अपेक्षाकृत सरल हो जाएगा।

इस पत्र में एक से अधिक बार पौलुस ने उसका इस्तेमाल किया जिसे गलातियों ने कठोर और कष्टदायक फटकार माना होगा। सार में, उसने कहा, "तुम यह कैसे कर सकते हो? मेरे द्वारा तुम्हें हमारे प्रभु यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने की बात इतनी स्पष्ट समझाने के बाद तुम इतनी मूर्खतापूर्ण ढंग से कैसे व्यवहार कर सकते हो!" (देखें 3:1)। परमेश्वर के प्रेम को यीशु के घावों में से बहते हुए अपनी आंखों से देखने के बाद ये मसीही लोग उससे मुंह फेरकर व्यवस्था के जूए को कैसे अपना सकते थे? व्यवस्था उन्हें बचाने के बजाय उन्हें दासत्व में वापस धकेल देती थी, उससे थोड़ा सा अलग जिसके द्वारा वे मसीह को जानने से पहले दास थे। जीवन दिलाने के बजाय व्यवस्था ने उन्हें मृत्यु दिलानी थी।

इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, 4:12 से 4:13-16 के बीच के सम्बन्ध को इस ढंग से दिखाया जा सकता है:

> हे भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूं, तुम वैसे बन जाओ जैसा मैं गलातिया में तुम्हारे पास आने पर बना था। क्योंकि चाहे हम यहूदी थे और तुम अन्यजाति थे, फिर भी ऐसी किसी भी बात की परवाह किए बिना मैं तुम्हारे जैसा बन गया था। तुम ने मेरा कुछ बिगाड़ा नहीं था, बल्कि जैसा कि तुम जानते ही हो, कि अपनी शारीरिक *निर्बलता* के कारण मैंने पहले तुम्हें सुसमाचार सुनाया था। मेरी बीमारी का चाहे तुम्हें पता था और तुम मुझे ठुकरा सकते थे पर तुम ने ऐसा नहीं किया था। इसके बजाय तुम ने मुझे ऐसे ग्रहण किया था जैसे कि मैं परमेश्वर का दूत या इससे भी बढ़कर होऊं, यानी जैसे मसीह यीशु खुद तुम्हारे बीच खड़ा हो! तुम्हारा वो पहले वाला आनन्द कहां गया? क्योंकि मैं तुम्हारी गवाही देता हूं कि तुम ने मेरी सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। असल में हो पाता तो तुम अपनी आंखें मुझे दे देने को तैयार थे बल्कि तुम ने दे भी दी थीं! क्या यह सचमुच में हो सकता है कि इस सब के बाद अब मैं तुम्हारा शत्रु इसलिए बन गया हूं क्योंकि उन लोगों के बारे में जो हमें तुम से अलग करने की कोशिश कर रहे हैं, तुम्हें साफ़ बता रहा हूं?

माना कि यह केवल एक व्याख्या है पर इसमें मूल में लिखी सभी बातों का विवरण है। यह हमें पौलुस के तर्क के बहाव से उसके व्यापक संदर्भ को समझने में सहायता कर सकता है।

4:13-15 में गलातियों के साथ उसकी पहली भेंट के समय कही गई बातों की याद थी। ऐसा लगता है कि 4:12 भी उस याद का एक भाग है। यदि ऐसा है तो इस आयत का बढ़िया अनुवाद है "वैसे बनो जैसा मैं था [हमारी पहली मुलाकात के समय], क्योंकि मैं भी तुम्हारे जैसा था [जैसे तुम थे वैसे तुम्हें ग्रहण करने में]।" इसका अर्थ यह हुआ कि अभी की परिस्थिति में पौलुस यह जानते हुए कि कोई स्वाभाविक पिता अपने प्रिय बच्चों को कभी जान बूझकर गुमराह नहीं करेगा या उनका नुकसान नहीं करेगा, उन से उसे उसकी वर्तमान स्थिति में ग्रहण करने का आग्रह कर रहा था। इसके बजाय स्वाभाविक पिता हर बात में उन्हें आशीष ही देना चाहेगा (देखें लूका 11:11-13; 1 कुरिन्थियों 4:14-16)।

आयत 13. पौलुस ने गलातियों को याद दिलाया **कि पहले-पहल** [उस] **ने शरीर की निर्बलता के कारण** [उन्हें] **सुसमाचार सुनाया** था। "निर्बलता" के लिए यूनानी शब्द (*astheneia*) है जिसका अर्थ "अस्वस्थता," "बीमारी," या "रोग" है। पौलुस की निर्बलता क्या थी? इस प्रश्न से बड़ा अनुमान लगाया जाता है पर किसी सर्वसम्मति पर नहीं पहुंचा गया है। दिए जाने वाले मुख्य सुझावों में मलेरिया, मिर्गी या आंखों की कोई बीमारी या सताव के प्रभाव शामिल हैं। इन सभी विचारों पर संक्षेप में चर्चा की जाएगी।

सबसे पहले, पौलुस को पहली मिशनरी यात्रा के समय मलेरिया हो गया हो सकता है। विलियम एम. रैमसे का सुझाव है कि उसे पम्फूलिया के निचले मैदानी इलाकों में मलेरिया का पुराना बुखार था जो कि यूहन्ना मरकुस के मिशन को छोड़कर यरूशलेम जाने पर था (प्रेरितों 13:13)। जिस कारण पौलुस ने पिसिदिया के अंताकिया में जो कि ऊंचाई पर था (प्रेरितों 13:14) विश्राम पाना चाहा। रैमसे ने समझाया कि बार बार होने वाला मलेरिया किस प्रकार से बेबस करने वाला हो सकता है जिससे व्यक्ति "कांपते हुए लाचारी में कमज़ोर" जैसा महसूस करता है।[29]

दूसरा, पौलुस की निर्बलता मिर्गी हो सकती है। यह विचार अगली आयत के क्रिया शब्द से मिलता है जिसका अर्थ "उगल देना" है (4:14 पर टिप्पणियां देखें)। कैनथ एल. बोल्स ने इसे इस प्रकार समझाया है: "यह रूखा व्यवहार मिर्गी जैसे अजीब व्यवहार के कारण बुरी नज़र या बुरी आत्मा के प्रभावों को दूर करने के लिए एक सामान्य तरीका था।"[30]

तीसरा, पौलुस को आखों की समस्या हो सकती है जो कि प्राचीन संसार में आम थी। कई वचनों से यह सुझाव मिलता है कि प्रेरित की नज़र खराब थी। वह दमिश्क के मार्ग पर मसीह के दर्शन से अंधा हो गया था और तीन दिन तक अंधा ही रहा था (प्रेरितों 9:8, 9)। हनन्याह ने चाहे उसकी नज़र लौटा दी थी (प्रेरितों 9:17, 18), पर कइयों का मानना है कि उसके बाद उसे धुंधला ही दिखाई देता था। प्रेरितों के काम में बाद में पौलुस ने महायाजक को नहीं पहचाना था (प्रेरितों 23:5), शायद इसलिए कि वह उसे साफ-साफ नहीं देख सका था। इस संदर्भ में पौलुस ने कहा कि गलाती लोग "यदि हो सकता तो [वे] अपनी आंखों भी निकालकर [उसे] दे देते" (4:15)। भाषा से यह संकेत मिल सकता है कि उसकी शारीरक समस्याएं उसकी आंखों से सम्बन्धित थीं। अंत में पौलुस आम तौर पर अपने पत्रों को लिखारी से लिखवाता और अंतिम अभिवादन अपने हाथ से लिख देता (2 थिस्सलुनीकियों 3:17)। गलातियों के पत्र में इस्तेमाल किए गए उसके "बड़े अक्षर" हो सकता है कि ज़ोर देने के लिए हों, पर यह भी हो सकता है कि वे उसके अच्छी तरह से न देख पाने के कारण हों (गलातियों 6:11)।

चौथा, यह हो सकता है कि पौलुस की निर्बलता उसके द्वारा सहे गए सताव से सम्बन्धित थी। उसे लुस्त्रा में पथराव किया गया था (प्रेरितों 14:19) और अपने मिशनरी कार्यकाल के दौरान उसने अन्य कई प्रकार के दण्ड सहे थे (2 कुरिन्थियों 11:23-27)। इस विचार के साथ समस्या यह है कि पथराव पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा के अंत के निकट गलातिया के नगरों में से होते हुए उसके अंताकिया में लौटते हुआ था। इसके अलावा 2 कुरिन्थियों 11 में वर्णित अधिकतर कठिनाइयां बाद में यानी गलातियों के पत्र लिखे जाने के बाद आईं थीं।

एक अंतिम विचार यह है कि पौलुस को किसी प्रकार की मनोविज्ञानिक निर्बलता थी। अनुवादित शब्द "शारीरिक" के लिए यूनानी शब्द *sarx* या "शरीर" (KJV) है, जिसके कई अर्थ हो सकते हैं। यह पाप के प्रति झुकाव जैसी (रोमियों 6:19), भय (2 कुरिन्थियों 7:5) मनोविज्ञानिक या स्वास्थ्य की स्थिति हो सकती है। पौलुस चाहे ऐसी परीक्षाओं से मुक्त नहीं था (1 कुरिन्थियों 2:3; इफिसियों 6:19, 20) परन्तु वर्तमान संदर्भ ऐसी किसी भी व्याख्या को असम्भव बनाता लगता है।

उसकी स्थिति जो भी थी यह ऐसी थी जो कि गलातिया के लोगों को अप्रिय लगी होगी, जैसा कि 4:14 से यह स्पष्ट है। इलाके में पौलुस के आरम्भ में प्रचार करने के प्रयास करने के लिए इससे प्रेरणा कैसे मिली? एक सम्भावना यह है कि उसे गलातिया के आगे जाना था परन्तु जब वह गलातिया में पहुंचा तो वह वहां बीमार पड़ गया और ठीक होने तक वहां उसे रुकना पड़ा। पौलुस सुसमाचार प्रचार के लिए इतना उत्साही था कि उसने इस अवसर का इस्तेमाल मसीह में उद्धार के शुभ समाचार को सुनाने के अवसर के रूप में किया, चाहे इसका अर्थ यह था कि उसका पुलपिट बीमारी का बिस्तर ही था।

आयत 14. चाहे पौलुस की **शारीरिक दशा** थी जो गलातियों के लिए **परीक्षा** थी पर उन्होंने उसे **तुच्छ न जाना; न उससे घृणा की**। पौलुस की शारीरिक स्थिति या भेष ने सचमुच में इन भाइयों को परीक्षा में डाल दिया गया होगा। उसे इस बात की समझ थी कि इस अस्वस्थता के कारण उन्होंने घृणापूर्वक प्रतिक्रिया दी हुई हो सकती है। अनुवाद हुआ यूनानी शब्द (*peirasmos*) जिसका अनुवाद "परीक्षा" हुआ है वही शब्द है जिसे मत्ती ने यीशु के प्रार्थना करने का ढंग बताने के निर्देशों को बताने में इस्तेमाल किया: "और हमें परीक्षा में न डाल, परन्तु बुराई से बचा" (मत्ती 6:13)।[31]

"तुच्छ" शब्द (*exoutheneō*) का अनुवाद "उपेक्षापूर्ण व्यवहार," "तुच्छ समझना," "कुछ न समझना," और "नकारना" के रूप में कई तरह से हुआ है। अनुवादित शब्द "घृणा" (*ekptuō*) का इससे भी बड़ा संकेत था। इसका मूल अर्थ था "उगल देना"; ऐसा कार्य "उपेक्षा को दिखाने" या "विरोधी आत्माओं को निकालने" के लिए किया जाता होगा।[32] शब्द विज्ञानियों का मानना है कि पौलुस के समय तक यह मूल अर्थ तिरस्कार की कोमल अवधारणा में बदल गया था। ऐसा है तो स्थानीय यूनानी बोलने वाले व्यक्ति के लिए इसके मूल अर्थ को देख पाना कठिन नहीं होगा चाहे यह शब्द लिखित रूप में हो या बोलकर कहा गया।

पौलुस को नकारने के बजाय गलातियों ने असल में उसे **परमेश्वर के दूत के समान ग्रहण किया** था। *Angelos* का अनुवाद यहां "दूत" (NASB में स्वर्गदूत-अनुवादक) है, क्योंकि शब्द का मूल अर्थ यही है। यूनानी शब्द *angelos* एक व्यक्ति की ओर से किसी दूसरे के पास

संदेश देकर भेजे गए मनुष्यों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। उदाहरण के लिए उत्पत्ति 32:3-6 में यह शब्द मिलता है (LXX), जहां याकूब ने अपने विरक्त भाई एसाव के पास अपने जाने से पहले दूत भेजे। लूका 9:51-53 में यह शब्द तब मिलता है जब यीशु ने यह पता लगाने के लिए कि उसके यरूशलेम की ओर जाने के समय सामरिया का एक गांव उसे ग्रहण करेगा या नहीं, दूतों को भेजा। शब्द का इस्तेमाल परमेश्वर की प्रेरणा पाए मनुष्यों के लिए किया जा सकता है जैसा कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले या अन्य भविष्यवक्ताओं के लिए हुआ (मत्ती 11:7-10)। *Angelos* का अधिकतर इस्तेमाल मानवीय रूप में प्रकट होने वाले आत्मिक जीवों के लिए किया जाता है जो परमेश्वर के प्रतिनिधियों के रूप में काम करते हैं (देखें इब्रानियों 1:14; 13:2)।

"परमेश्वर के दूत" को स्वर्गीय दूत के रूप में समझना सबसे अधिक स्वाभाविक लगता है, एक आत्मिक बिचवई जैसे कि इब्रानियों 1:14 में बताए गए हैं। इसलिए पौलुस के विचार में आगे बढ़ने की बात मिलती है: (1) गलातिया के लोगों ने उसके साथ मनुष्य के रूप में व्यवहार नहीं किया था न ही उन्होंने उसकी निर्बलता से घृणा की थी। (2) इसके बजाय उन्होंने उसे ऐसे ग्रहण किया था जैसे वह स्वर्ग की ओर से भेजा गया परमेश्वर का स्वर्गदूत हो। (3) इससे भी बढ़कर उन्होंने उनका स्वागत ऐसे किया जैसे **स्वयं मसीह** शरीर में होकर उनके बीच रह रहा हो।

आयत 15. गलातियों के गर्मजोशी के साथ स्वागत पर ध्यान देने के बाद पौलुस ने पूछा **तो वह तुम्हारा आनन्द मनाना कहां गया?** यह निर्णायक प्रश्न वर्तमान कष्टदायक स्थिति में झटके से दोबारा आने का काम करता है। पौलुस ने पाया था कि उसके भाई यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के कारण उसकी ओर अपनी पहली भावनाओं से पलटकर चंचल हो गए हैं। इसके अलावा व्यवस्था की दासता को उनका मान लेना उनके आत्मिक आनन्द के छिन जाने का कारण बन गया था। अनुवादित शब्द "आनन्द मनाना" (*makarismos*), या "आनन्द" (NCV; CJB) का सम्बन्ध "धन्य" (*makarios*) शब्द से है जिसका इस्तेमाल धन्य वचनों में किया गया है (मत्ती 5:1-12)।

एक समय था जब गलातियों ने पौलुस के लिए बड़ा प्रेम दिखाया था जिसने लिखा, **मैं तुम्हारा गवाह हूं कि यदि हो सकता तो तुम अपनी आंखें भी निकालकर मुझे दे देते।** "आंखें" का इस्तेमाल यहां पर उसके उदाहरण के रूप में किया गया हो सकता है जो बेहद कीमती है। इस व्याख्या "अपनी आंख की पुतली" (व्यवस्थाविवरण 32:10) और "आंखों की पुतली" (भजन संहिता 17:8; देखें नीतिवचन 7:2; जकर्याह 2:8) की बाइबल की अभिव्यक्तियों का समर्थन है। पौलुस इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि गलातिया के भाई उसके लिए अपने प्रेम के कारण कुछ भी बलिदान करने को तैयार होते।

पौलुस चाहे अलंकारिक रूप में बात कर रहा था परन्तु दूसरी सदी ई. के यूनानी लेखक लूसियन ने किसी मित्र के लिए किसी के अपनी आंखें बलिदान करने की सचमुच की घटना जोड़ी। इस कहानी में दो ईरानी थे। उनमें से एक जिसका नाम दंदामिस था उसने अपने कैदी दोस्त को छुड़ाने के लिए अपनी आंखें दान कर दीं। उसके छूट जाने के बाद अमिज़ोकस जब अंधे दंदामिस को देख न पाया और उसने अपनी आंखें भी निकाल दीं।[33]

आयत 16. गलातियों के साथ अपनी मित्रता पर ज़ोर देने के बाद पौलुस ने उनसे पूछा,

तो क्या तुम से सच बोलने के कारण मैं तुम्हारा बैरी बन गया हूं? संज्ञा शब्द "सच" (*alētheia*) नये नियम में चाहे बार बार मिलता है पर "सच बोलने" के लिए इससे जुड़ा क्रिया शब्द (*alētheuō*) जिसका इस्तेमाल पौलुस ने किया, केवल यहां और इफिसियों 4:15 में मिलता है। इसका अनुवाद "ईमानदार होना" भी हो सकता है। पौलुस ने इस बात पर ज़ोर दिया कि वह गलातियों को सच्चाई साफ़ साफ़ बता रहा था; जो कुछ वह कह रहा था उसमें कुछ भी छुपा हुआ अर्थ नहीं था जो उसने उन्हें बताया था। उसे उनके बारे में जो "चुपके से आ मिले" थे खुलकर बोलना आवश्यक था (देखें यहूदा 4)। यहूदी मत की शिक्षा देने वाले ये लोग एक ऐसे सुसमाचार का प्रचार कर रहे थे जो वास्तव में सुसमाचार था ही नहीं (देखें गलातियों 1:6, 7; 5:11, 12; 6:12, 13)। पौलुस ने उन झूठे शिक्षकों का दृढ़ता से विरोध किया जो गलातिया की कलीसियाओं में काम कर रहे थे और उसके काम को कमज़ोर कर रहे थे।

आयत 17. पौलुस ने पूरी समस्या की जड़ यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के बारे में कहना जारी रखा: **वे तुम्हें मित्र बनाना तो चाहते हैं, पर भले उद्देश्य से नहीं; वरन तुम्हें अलग करना चाहते हैं कि तुम उन्हीं को मित्र बना लो।** आयत के पहले भाग का अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है: "वे तुम्हारे लिए सरगर्म हैं पर भलाई के लिए नहीं।" NKJV "वे सरगर्मी से तुम्हें लुभाते हैं पर भलाई के लिए नहीं।" संदर्भ इस बात का संकेत देता है कि यहूदी मत की शिक्षा देने वाले लोगों को आकर्षित करने के लिए अपनी शिक्षाओं में विशेष रूप से मनोविज्ञान की बात डाल रहे थे।

यूनानी धर्मशास्त्र में आयत के दूसरे भाग में "तुम्हें अलग करना चाहते हैं" (*ekkleiō*) पहले आता है। यह शब्द रचना वाक्यांश को ज़ोरदार बनाकर विशेष होने के विचार पर और वज़न डालती है। परन्तु पौलुस ने यह स्पष्ट नहीं किया कि गलातियों को किससे अलग किया जा रहा था। क्या यह व्यवस्था को मानने वालों से था जो गलातियों को अपने दल का भाग बनाने की कोशिश कर रहे थे? क्या यह सामान्य अर्थ में कलीसिया की संगति से अलग करना था? क्या पौलुस और उसके प्रचार और शिक्षा के प्रभाव से अलग करना था?[34] इस अंतिम विचार को NIV का समर्थन है जिसमें यह विषय जोड़ा गया है: "जो वह चाहते हैं वह तुम्हें *हम से* अलग करना है, ताकि तुम्हारे अंदर उनके लिए उत्साह हो।"

यहूदी मत की शिक्षा देने वाले गलातिया के इन अन्यजातियों को कलीसिया से या संगति से अपने दायरे से अलग नहीं करना चाहते थे, कम से कम पक्के तौर पर तो नहीं। बल्कि उनके कार्य गलातिया के मसीहियों को व्यवस्था के जुए को स्वीकार करने के लिए लुभाने की एक चाल थी। वे इस बात पर ज़ोर देते हुए कि वे ही असली, खतना किए हुए यहूदी, अब्राहम की असल संतान हैं, अपने आपको "असल" मसीहियों के रूप में प्रचार कर रहे थे। यहूदी लोग पीढ़ियों से यहूदी मत में लाने के लिए यही ढंग अपनाते रहे थे। यीशु ने शास्त्रियों और फरीसियों को बताया था, "तुम एक जन को अपने मत में लाने के लिए सारे जल और थल में फिरते हो, और जब वह मत में आ जाता है तो उसे अपने से दूना नारकीय बना देते हो" (मत्ती 23:15)। यदि गलातियों 1:8, 9 में पौलुस के शब्द कठिन लगते हों तो निश्चित तौर पर वह मत्ती 23 में इसी संदर्भ में कहे प्रभु के शब्दों से कठोर नहीं हैं।

आयत 18. यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के पथभ्रष्ट जोश का और हर उनके द्वारा बहकने

वालों का विरोध करने के बावजूद पौलुस ने स्पष्ट किया कि हर प्रकार का जोश बुरा नहीं है: **पर यह भी अच्छा है कि भली बात में हर समय मित्र बनाने का यत्न किया जाए, न केवल उसी समय कि जब मैं तुम्हारे साथ रहता हूं।** ''यत्न किया जाए'' का अनुवाद (*zēloō*)[35] के एक रूप से किया गया है जो यूनानी धर्मशास्त्र में या तो मध्यस्वर (यानी के लिए काम करना या किसी के अपने सम्बन्ध में) या कर्मवाच्य (यानी, पर कार्यवाही करना) के रूप में मिलता है। परन्तु कर्मवाच्य के रूप में इस शब्द का अर्थ ''जोश से भर जाना'' हो सकता है और इस प्रकार इसका क्रियाशील अर्थ है: ''जोश दिखाना'' या ''जोशीले होना।'' अंग्रेज़ी के अधिकतर संस्करणों में चाहे इस शब्द का अनुवाद निष्क्रिय रूप में किया गया है पर कुछ में इसका अनुवाद सक्रिय रूप में है। उदाहरण के लिए NKJV में है ''उत्साही होना अच्छा है'' और NIV में है ''उत्साही होना बहुत अच्छा है।'' ये व्यवहारिक विकल्प संदर्भ के लिए बेहतर रूप में उपयुक्त लगते हैं। इसलिए हम आयत को इस प्रकार पढ़ सकते हैं: ''अब भलाई के लिए उत्साही होना सर्वदा अच्छी बात होती है और केवल तभी नहीं जब मैं तुम्हारे साथ हूं।''

''जब मैं तुम्हारे साथ रहता हूं'' के उलट विशेष ज़ोर ''सर्वदा'' शब्द पर रहता है। आयतें 17 और 18 में जो अच्छा नहीं है और जो अच्छा है के बीच एक और अंतर किया गया है। NIV के अनुवाद में इसकी झलक मिलती है ''वे लोग तुम्हें जीत लेने के लिए उत्साही है, *पर भलाई के लिए नहीं*। . . . उत्साही होना अच्छा है, शर्त यह है कि उसका उद्देश्य भलाई हो . . .।'' गलातिया के लोगों ने पौलुस को और पहली मिशनरी यात्रा पर उसके उन्हें शुभ समाचार सुनाने को आनन्द से ग्रहण किया (प्रेरितों 13; 14)। परन्तु उसके जाने के बाद उनकी निष्ठा यहूदी मत की शिक्षा देने वालों और उनके पाखंड भरे संदेश की ओर हो गई थी, जिसमें व्यवस्था की दासता की बात थी। इसके बजाय पौलुस चाहता था कि वे उसके न होने पर भी असली सुसमाचार के लिए उत्साही बने रहें (देखें फिलिप्पियों 1:27)।

आयत 19. इस पत्र की अगली दो आयतें लेखक के मन को इस प्रकार से दिखाती हैं जैसे गलातियों की पूरी पुस्तक में कोई और वचन नहीं बताता। जैसा कि पहले कहा गया था यह पत्र बड़े भावुक होकर लिखा गया था। असल में इसे सदमे और हैरानी के बीच की स्थिति में लिखा कहा जा सकता है (बाद वाला शब्द 4:20 में पौलुस का अपना था)। यदि हम पहली मिशनरी यात्रा तथा यरूशलेम की सभा के बीच के समय में कालक्रम स्थापित करने के साथ साथ पौलुस के आरम्भिक लेखों के रूप में इस पत्र को मानने में सही हैं (प्रेरितों 14:26 और 15:6 के बीच), तो इस परिस्थिति से कई अवलोकन किए जा सकते हैं।

उन अत्याधिक बलिदानों, जोखिमों और संकटों के बावजूद जो पौलुस को सहने पड़े थे, जिसमें एक बार तो उसे पथराव करके मरा हुआ छोड़ दिया गया था (प्रेरितों 14:19) वह और बरनबास अंताकिया में आनन्द की स्थिति में लौटे थे। ''अन्यजातियों के लिए विश्वास का द्वार खोल'' दिए जाने के अपने पहले प्रयास में वे सफल हो गए (प्रेरितों 14:27)। फिर यहूदी मत की शिक्षा देने वाले आए (प्रेरितों 15:1) पहली मिशनरी यात्रा पर पौलुस के अधिकतर कष्ट का आरम्भ करने वाले अविश्वासी यहूदी नहीं थे। बल्कि वे आरम्भ के वर्षों में सुसमाचार सुनाए जाने से परिवर्तित हुए यहूदी मसीही थे जब ऐसे प्रयास परमेश्वर के पुरानी वाचा के लोगों तक सीमित थे। कुरनेलियुस के मनपरिवर्तन के सम्बन्ध में पतरस की सफ़ाई सुनने के बाद जिन्होंने

विरोध किया था वे भी अंत में सच्चाई को मान गए थे और "परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, 'तब तो परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है' " (प्रेरितों 11:18)।

तौभी बहुत से यहूदी चेलों के लिए पौलुस (और पतरस) पर प्रकट की गई सच्चाई अभी भी अस्पष्ट थी। वे यहूदियों और मसीह में अन्य जातियों के बीच अंतर कर रहे थे और इस विचार को नकार रहे थे कि खतना और अन्यविधियां जो मूसा के द्वारा दी गई थीं अब अप्रासंगिक थीं। पौलुस के लिए अन्यजातियों के लिए मसीह के विशेष दूत के रूप में ये सच्चाईयां बिल्कुल स्पष्ट लगती थीं। वह यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के उसके काम को नष्ट करने के ढंग से नाराज था।

यह पृष्ठभूमि उसके गलातिया के अपने बच्चों को "हे निर्बुद्धि गलातियो" कहकर सीधे सम्बोधन करने के उसके गुस्से को दिखाती है (3:1)। पत्र में सीधे सीधे बात करने की घटना केवल यहीं पर मिलती है। पत्र में "भाइयो" (*adelphoi*) शब्द का इस्तेमाल सम्बोधन के रूप में *नौ बार* हुआ है।[36] 4:19 में पौलुस ने गलातियों को **हे मेरे बालको** (*tekna mou*) कहा। अन्य प्राचीन हस्तलिपियों में अलग पठन (*teknia mou*) है,[37] जिसका अनुवाद "मेरे नन्हें बालको" (NKJV; NRSV; ESV) या "मेरे प्रिय बच्चो" (NIV; NLT; GNT) हो सकता है पूरे पत्र में मोह का केवल यही एक शब्द है।

पौलुस अपने आत्मिक बच्चों को बड़ा प्रेम करता होगा। उनके सम्बन्ध के वर्णन के लिए आयत 19 में इस्तेमाल की गई भाषा मर्मस्पर्शी है: **जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिये फिर जच्चा की सी पीड़ाएं सहता हूं** [*palin ōdinō*]। सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र में मां के जन्म देने की प्रक्रिया का यह चित्रण सबसे भावुक उपमाओं में से एक है। यहां दिया गया विवरण कुरिन्थुस में अपने "प्रिय बालकों" को अपना अनुसरण करने की पौलुस की विनती जैसा ही है। उसने लिखा:

> मैं तुम्हें लज्जित करने के लिए ये बातें नहीं लिखता, परन्तु अपने प्रिय बालक जानकर उन्हें चिताता हूं। क्योंकि यदि मसीह में तुम्हारे सिखानेवाले दस हजार भी होते, तौभी तुम्हारे पिता बहुत से नहीं, इसलिए कि मसीह यीशु में सुसमचार के द्वारा मैं तुम्हारा पिता हुआ। सो मैं तुम से विनती करता हूं, कि मेरी सी चाल चलो (1 कुरिन्थियों 4:14–16)।

KJV में कहा गया है कि प्रेरित ने उन्हें "जन्म दिया" था। फिलेमोन के नाम अपने पत्र में पौलुस ने किसी को विश्वास में लाने की अपनी भूमिका को "जन्म देने" के रूप में लाक्षणिक रूप से बताया। उसने लिखा, "मैं अपने बच्चे उनेसिमुस के लिए जो मुझ से मेरी कैद में जन्मा है तुझ से विनती करता हूं" (फिलेमोन 10)। इसी प्रकार से इस दोनों वचनों में मिलने वाला क्रिया शब्द (*gennaō*) लाक्षणिक रूप में परमेश्वर और पवित्र आत्मा दोनों के लिए बार बार इस्तेमाल हुआ है (यूहन्ना 1:13; 3:6, 8; इब्रानियों 1:5; 5:5; 1 यूहन्ना 4:7; 5:1)। कुछ लोगों के दावे के विपरीत क्रिया शब्द *gennaō* का इस्तेमाल स्त्री के जनने के कार्य के लिए भी किया गया है पर आम तौर पर केवल शाब्दिक अर्थ में। उदाहरण के लिए इसका इस्तेमाल इलीशिबा (लूका 1:13), मरियम (मत्ती 1:16), और सामान्य अर्थ में स्त्रियों (लूका 23:29) के लिए किया गया है। स्त्री का "जन्म देना" के लिए शब्द चाहे अधिकतर (*tiktō*) है परन्तु स्त्रियों के लिए दोनों

यूनानी शब्दों का इस्तेमाल हुआ है। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के जन्म देने वाले के मामले में एक ही आयत में दोनों शब्दों का इस्तेमाल समानार्थी रूप में हुआ है (लूका 1:57)। परन्तु बच्चे के जन्म में पुरुष की भूमिका हर जगह *gennaō* शब्द के साथ ही व्यक्त की गई है।

4:19 में पौलुस की भाषा का एक और विचार जो ध्यान खींचता है वह यह है कि उसने जो कि पुरुष लेखक था, महिला आकृति का इस्तेमाल "जच्चा की पीड़ाएं" होने की बात की। यह आयत के पहले भाग में उसके "प्रिय बालकों" के नाम उसके सम्बोधन में और भी लाड़ प्यार को जोड़ देता है। कहीं और पौलुस ने महिला आकृति का इस्तेमाल किया: "परन्तु जिस तरह माता अपने बालकों का पालन-पोषण करती है, वैसे ही हम ने भी तुम्हारे बीच में रहकर कोमलता दिखाई है।. . . इसलिए कि तुम हमारे प्यारे हो गए थे" (1 थिस्सलुनीकियों 2:7, 8)। गलातियों में दिया गया वचन कहीं अधिक स्पष्ट है और नकारात्मक रूप में इसका दिया जाना पत्र को और भी अधिक स्पष्ट बना देता है। कुछ ही आयतों के बाद गलातियों 4:27 में पौलुस ने यशायाह 54:1 वचन उद्धृत किया जिसमें जन्म की प्रक्रिया को दर्शाते दो शब्द हैं: *tiktō* ("जन्म देना") और *ōdinō* ("जच्चा की पीड़ा" या "जन्म की पीड़ाएं सहना")। अपनी शाब्दिक प्रासंगिकता में शब्दों का इस्तेमाल केवल महिलाओं के लिए किया जाता है और बाद वाले शब्द में अधिक पीड़ा को व्यक्त किया जाता है।

इस सब से यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि पौलुस बेदर्द बुद्धिजीवी नहीं था जैसा कि बहुतों ने उसे दिखाया है। कुछ तो यह भी दावा करते हैं कि प्रेरित, जिसने कभी शादी नहीं की थी, स्त्रियों को पसंद नहीं करता था। वे ऐसा उसके विवाह और तलाक से निपटने के बर्ताव के उसके ढंग के कारण कहते हैं। अन्य लोग उसकी इस शिक्षा से ठोकर खाते हैं कि पत्नियां अपने अपने पतियों के अधीन हों (देखें 1 कुरिन्थियों 14:34, 35; इफिसियों 5:22-24; 1 तीमुथियुस 2:11-15; तीतुस 2:3-5; 1 पतरस 3:1-6)।

कोई भी जो गलातियों 4:19, 20 को पौलुस के मन की जबर्दस्त बेचैनी को समझे बिना पढ़ता है उसे पौलुस के नहीं बल्कि अपने ही मन की समस्या को देखना चाहिए। सम्पूर्ण नये नियम में यह सबसे गम्भीर भावुक वचनों में से सुसमाचार के उसके सभी प्रयासों के अति भावी उद्देश्य की पौलुस की पूरी समझ से निकली भावनाएं यह हैं कि जिन्हें उसने मनपरिवर्तन में सहायता की थी उनमें "मसीह का रूप बन जाए।"

अपने पुत्र यीशु नासरी के पृथ्वी पर प्रकट होने के द्वारा अपने आपको प्रकट करने में परमेश्वर की सनातन मंशा "मसीह जो महिमा की आशा है" (कुलुस्सियों 1:27) को सामने लाना था। पौलुस ने मसीही लोगों से यही बात और जगह कही परन्तु गलातियों को वही आशा बताई गई थी। उन्होंने सुसमाचार पर विश्वास किया था और बपतिस्मा लिया था। उन्हें "महिमा की आशा" का पता था कि वह कौन है क्योंकि पौलुस ने अपने प्रचार में से इस आवश्यक शिक्षा को कभी निकाला नहीं होगा।[38] परन्तु गलातियों को उनके द्वारा जो उन पर व्यवस्था को थोप रहे थे यीशु में उनकी आशा से भटका दिया गया था।

इन नये चेलों के जीवनों में मसीह का रूप नहीं बन रहा था। आत्मिक उन्नति के लिए व्यक्तिगत शुद्धता और पवित्रता जैसे आयाम शामिल होते हैं; दूसरों के लिए सक्रिय, प्रेमपूर्ण लगाव दिखाते हुए दूसरों के लिए जीना; खोए हुओं तक पहुंचने की परमेश्वर की मंशा और

इच्छा के प्रति समर्पण; और मसीह के काम के लिए दुख उठाने की तैयारी। इसके लिए "स्वर्गीय वस्तुओं" के प्रति लगाव (कुलुस्सियों 3:1, 2) होना और उन बातों से दूर होना जो पवित्र जीवन जीने से हटाती हैं, आवश्यक है। संक्षेप में मसीही व्यक्ति के अंदर मसीह का रूप बनने के लिए वह सब शामिल है जिससे यीशु के जीवन को प्रेरणा और निर्देश मिलता था जो "खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया" (लूका 19:10)।

पौलुस का अपनी सेवकाई को अंजाम देने का दिल से जुनून यीशु के आत्मा और महिमा की झलक थी जिसने दूसरों के उद्धार के लिए अपना प्राण स्वेच्छा से दे दिया। पौलुस ने कुरिन्थियों को बताया कि वह और अन्य प्रेरित मूसा के उलट जो कि पुरानी वाचा का सेवक था "नई वाचा" के सेवक थे। उसने कहा, "और हम, जो सब के सब उघाड़े चेहरे से प्रभु के प्रताप को दिखाते हैं, बढ़ते रहने वाली महिमा के साथ उसकी समानता में बदलते जा रहे हैं . . ." (2 कुरिन्थियों 3:18; NIV1984)।[39] मूसा के साथ, कम होने वाली महिमा, पर्दे के पीछे, घटती गई। परन्तु जितना प्रेरितों ने मसीह के संदेश को सुनाया उतना ही वे उसके स्वरूप में "बदलते" (*metamorphoō*) या "कायापलट होते" गए। इस संदेश को सुनाने का उनका उद्देश्य क्या था? "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है"!

पौलुस के प्रिय बालकों गलातियों में इस रूप का बढ़ना रुक रहा था। इसलिए अब फिर से उसे जनने की पीड़ाएं लग गई थीं जब तक मसीह उन में रूप न लेगा। प्रचार करने और लोगों को मसीह में बपतिस्मा देने के लिए जाना एक बात है जिसके लिए नया जन्म आवश्यक है। "उन्हें वे सब बातें सिखाना" जिनकी मसीह ने आज्ञा दी है "सिखाने" के लिए डटे रहना बिल्कुल अलग बात हो सकती है (मत्ती 28:20)। चेले बनाने की इस प्रतिक्रिया के द्वारा मन परिवर्तन करने वाले लोग जीवित मसीह के बर्तन बन जाते हैं और उस "महिमा की आशा" से उन्हें प्रेरणा मिलती है।

आयत 20. पौलुस ने यह कहते हुए अपनी व्यक्तिगत विनती को समाप्त किया: **इच्छा तो यह होती है कि अब तुम्हारे पास आकर और ही प्रकार से बोलू, क्योंकि तुम्हारे विषय में मैं उलझन में हूं।** ओक्लाहोमा का प्रसिद्ध मखौलिया विल रोजर्स यह कहने के लिए प्रसिद्ध था कि उसे तो केवल वही पता है जो उसने समाचार पत्रों में पढ़ा है। आज बहुत से लोग, जब उनसे पूछा जाता है कि जो वह कह रहे हैं उन्हें उसका कैसे पता चला, तो उनका उत्तर यही होगा कि उन्होंने किसी पुस्तक में या ऑनलाइन पढ़ा है। प्राचीनकाल के लोगों की स्थिति बिल्कुल अलग थी क्योंकि उनका मानना था कि लिखित दस्तावेज कभी भी "आमने सामने सुनने" की बराबरी नहीं कर सकते। परन्तु जो पौलुस यहां कह रहा था यह बात उस पर लागू नहीं होती लगती। इसके बजाय यह स्पष्ट है कि पहले जब पौलुस गलातियों से पहली बार मिला था तो उनके बीच एक मज़बूत, स्नेही रिश्ता बन गया था (4:15)। उसका मानना था कि यदि वह फिर से अब उनके साथ होता तो बात और होनी थी। यदि एक बार फिर वे उसकी अपनी लगाव भरी "आमने सामने सुन" लेते, तो वह अपने लिए उनके मन में फिर से वही पुराना प्रेम जगा सकता था। उसकी उपस्थिति से उन्हें यह समझने में सहायता मिलनी थी कि हर ताड़ना, हर चेतावनी, हर डांट जो उसने लिखी थी वह अपने आत्मिक बच्चों के लिए पिता के प्रेम से निकली थी (देखें 2 यूहन्ना 12; 3 यूहन्ना 4, 13, 14)।

हाजिरा और सारा का दृष्टांत (4:21-31)

[21]तुम जो व्यवस्था के आधीन होना चाहते हो, मुझे बताओ, क्या तुम व्यवस्था की नहीं सुनते ? [22]यह लिखा है, कि अब्राहम के दो पुत्र हुए; एक दासी से और एक स्वतंत्र स्त्री से। [23]परन्तु जो दासी से हुआ, वह शारीरिक रीति से जन्मा; और जो स्वतंत्र स्त्री से हुआ, वह प्रतिज्ञा के अनुसार जन्मा। [24]इन बातों में दृष्टांत हैं: ये स्त्रियां मानों दो वाचाएं हैं, एक तो सीनै पहाड़ की जिससे दास ही उत्पन्न होते हैं; और वह हाजिरा है। [25]और हाजिरा मानों अरब का सीनै पहाड़ है, और आधुनिक यरूशलेम उसके तुल्य है, क्योंकि वह अपने बालकों समेत दासत्व में है। [26]पर ऊपर की यरूशलेम स्वतंत्र है, और वह हमारी माता है। [27]क्योंकि लिखा है, ''हे बांझ, तू जो नहीं जनती आनन्द कर; तू जिसको पीड़ाएं नहीं उठतीं, गला खोलकर जय जयकार कर; क्योंकि त्यागी हुई की सन्तान सुहागिन की सन्तान से भी अधिक हैं।'' [28]हे भाइयो, हम इसहाक के समान प्रतिज्ञा की सन्तान हैं। [29]और जैसा उस समय शरीर के अनुसार जन्मा हुआ आत्मा के अनुसार जन्मे हुए को सताता था, वैसा ही अब भी होता है। [30]परन्तु पवित्रशास्त्र क्या कहता है ? ''दासी और उसके पुत्र को निकाल दे, क्योंकि दासी का पुत्र स्वतन्त्र स्त्री के पुत्र के साथ उत्तराधिकारी नहीं होगा।'' [31]इसलिये हे भाइयो, हम दासी के नहीं परन्तु स्वतन्त्र स्त्री की सन्तान हैं।

आयत 21. पौलुस ने यह कहते हुए आरम्भ किया: **तुम जो व्यवस्था के आधीन होना चाहते हो, मुझे बताओ, क्या तुम व्यवस्था की नहीं सुनते ?** गलातियों को यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के द्वारा गुमराह किया गया था और वे अपने विश्वास का आधार मूसा की व्यवस्था को बना रहे थे, इस कारण पौलुस उन्हें उनके तरीके की गलती को दिखाने के लिए अपने प्रमुख गवाह की ओर मुड़ गया। यह गवाह स्वयं ''व्यवस्था'' थी। उसने अपनी बात यहूदी मत की शिक्षा देने वालों से नहीं बल्कि गलातियों से कही। विशेषकर उसके दिमाग में कलीसियाओं के अन्यजाति सदस्य थे जो यहूदी मत की शिक्षा देने वालों से प्रभावित हो गए थे। यह कल्पना नहीं की जानी चाहिए कि इन भाइयों के गिरने का कारण उनके खून में कोई खराबी थी। शायद वे आसानी से प्रभावित हो गए थे; कइयों ने तो उन्हें चंचल तक का नाम दे दिया है। परन्तु यहूदी मत की शिक्षा देने वालों का यकीन दिलाने वाले प्रभाव को जो कि उनके हाल ही के सबसे बड़े सलाहकार थे, को कम नहीं आंका जाना चाहिए। वे परमेश्वर के असल वचन यानी व्यवस्था को सुनाने का दावा करते थे। गलातिया के लोग ''व्यवस्था के अधीन'' केवल इसलिए होना चाहते थे क्योंकि उन्हें यह यकीन दिलाया गया था कि परमेश्वर को भाने के लिए यह सुधार करना आवश्यक है।

बेशक पौलुस की अपनी शिक्षा का आधार कम से कम व्यवस्था के उसके कुछ प्रचार में था। जब यहूदी मत की शिक्षा देने वालों ने आकर यह सवाल उठाया था कि व्यवस्था की बहुत सी बातें हैं जिनका पौलुस प्रचार नहीं कर रहा था तो पौलुस में गलातियों का भरोसा (जो अब उनके बीच में नहीं था) इस प्रकार से डगमगा गया कि उनका विश्वास डोलने लगा था। आखिर यीशु ने स्वयं ही नहीं कहा था कि ''उद्धार यहूदियों में से है'' (यूहन्ना 4:22) ? इसमें यह सुझाव नहीं है कि पौलुस ने गलातियों को मसीह के शब्द दोहराए होंगे। परन्तु परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए प्रेरित के रूप में उसे इलहाम से ऐसे वचनों का पता होगा (देखें प्रेरितों 20:35; 1 कुरिन्थियों

11:23-25; 15:3-8; गलातियों 1:11, 12)।

''सुनते'' के लिए यूनानी शब्द (*akouō*) का अनुवाद ''ध्यान देना'' (NASB; अनुवादक) भी हो सकता है। कई मामलों में वचन को बात करते हुए दिखाया गया है, जैसे ''पवित्र शास्त्र का यह वचन पूरा हुआ'' (याकूब 2:23) और ''क्या पवित्र शास्त्र में यह नहीं आया . . . ?'' (यूहन्ना 7:42) अभिव्यक्तियों में। पवित्र शास्त्र की आवाज़ वैसे ही सुनी जाती थी जैसे किसी जीवित गवाह की आवाज़ हो, शायद इसलिए क्योंकि प्राचीन समयों में पवित्र शास्त्र आम तौर पर ज़ोर ज़ोर से पढ़कर सुनाया जाता था। व्यवस्था की बात करके पौलुस चुनौती दे रहा था, ''अपने मुख्य गवाह को निकालो। चलो सुनते हैं कि तुम्हारी सफ़ाई में वह क्या कहता है। तुम्हें पता चल जाएगा कि असल में वह हमारा मुख्य गवाह है।'' हमें यह याद रखना चाहिए कि ''व्यवस्था'' केवल आज्ञाओं या कानूनी नियमों और विधियों के संग्रह से कहीं बढ़कर थीं, जिसे तोड़ने से जुर्माना और दण्ड मिलते थे।

''व्यवस्था'' (*nomos*) का उल्लेख दो बार है: ''तुम जो *व्यवस्था* के अधीन होना चाहते हो, मुझे बताओ, क्या तुम *व्यवस्था* की नहीं सुनते?'' अंग्रेज़ी के साथ यूनानी में भी पहली बार में व्यवस्था के साथ निश्चयात्मक उपपद ''the'' नहीं है। इससे कुछ लोगों ने यह अनुमान लगाया है कि पौलुस सामान्य अर्थ में व्यवस्था की बात कानूनी सिस्टम या सराहनीय सही ठहराए जाने के रूप में कर रहा था। परन्तु यूनानी भाषा में उपपद के न होने पर भी पूर्वसर्ग के पहले संज्ञा शब्द को आम तौर पर निश्चयात्मक माना जाता था। इसलिए मूल में चाहे ''व्यवस्था के अधीन'' है परन्तु इसका अर्थ आवश्यक नहीं कि यह हो कि पौलुस सामान्य अर्थ में व्यवस्था या कानूनी तौर पर सही ठहराए जाने की बात कर रहा था।

इसके अलावा यह भी स्पष्ट है कि आयत 21 दूसरी बार ''व्यवस्था'' की बाइबल उत्पत्ति की बात करती है जो अब्राहम और उसके दो पुत्रों (इसहाक और इश्माएल) और उनकी दो माताओं (सारा और हाजिरा) के बारे में है। संदर्भ इसके अलावा किसी और व्याख्या की अनुमति ही नहीं देता कि यह ''व्यवस्था'' तौरेत को कहा गया है। दूसरी वाली ''व्यवस्था'' स्पष्ट रूप में शास्त्र की बात है इसलिए यह तर्कसंगत लगता है कि पहली वाली व्यवस्था भी वही होगी। निश्चय ही व्याकरण का कोई नियम इसे रोकेगा नहीं।

वास्तव में ''व्यवस्था'' जिसे पौलुस चाहता था कि गलातिया के लोग सुने, वह असल में व्यवस्था थी ही नहीं, चाहे जिस शब्द का इस्तेमाल उसने किया वह आज के प्रसिद्ध इस्तेमाल से या नये नियम के परमेश्वर की प्रेरणा पाए अन्य लेखकों से और यीशु से भी अलग नहीं है। उन्हीं की तरह हम भी ''व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं'' की बात करते हैं। और हम भी पुराने नियम को ''व्यवस्था'' ओर नये नियम को ''सुसमाचार'' कहते हैं। वचन के इस भाग में ज़ोर विशेष रूप में उत्पत्ति 16—21 में पंचग्रंथ के विवरणात्मक भाग पर है। इब्रानी शब्द *torah* का अनुवाद NASB में लगभग दो सौ बार ''व्यवस्था'' किया गया है, परन्तु इसका सही अर्थ ''निर्देश''[140] या ''शिक्षा''[141] है न कि ''व्यवस्था'' जैसा कि मूसा की व्यवस्था में।

पौलुस के 4:21-31 में व्यवस्था का इस्तेमाल रब्बियों के यहूदीवाद के पूर्वी विचार से अपरिचित लोगों को पहले हैरान कर सकता है। यह याद रखा जाना चाहिए कि पौलुस ने गमलीएल के चरणों में सीखा था (प्रेरितों 22:3) और यह कि हमारे लिए इस प्रकार का तर्क

चाहे अजीब लग सकता है और उसके समय के रब्बियों में यह आम बात थी।

आयत 22. पौलुस ने यह कहते हुए पवित्र शास्त्र से अपनी रूपक सम्बन्धी शिक्षा का परिचय दिया: **यह लिखा है, कि अब्राहम के दो पुत्र हुए; एक दासी से और एक स्वतंत्र स्त्री से।** यह बात उत्पत्ति 16—21 के विवरणात्मक भाग पर आधारित भी है, जो "दासी," हाजिरा की कहानी बताती है जिसने अपने पुत्र इश्माएल को जन्म दिया। यह इस बात को भी बताती है कि "स्वतन्त्र" स्त्री यानी सारा ने अपने पुत्र इसहाक को जन्म दिया। वह प्रतिज्ञा का चिर-प्रतीक्षित पुत्र था जो उसके बुढ़ापे में जन्मा था।

आयत 23. प्रेरित ने दोनों पुत्रों में अंतर किया: **परन्तु जो दासी से हुआ, वह शारीरिक रीति से जन्मा; और जो स्वतंत्र स्त्री से हुआ, वह प्रतिज्ञा के अनुसार जन्मा।** इश्माएल पूरी तरह से मानवीय प्रजनन के सामान्य ढंग, अब्राहम और हाजिरा के शारीरिक मिलन के द्वारा जन्मा था जिसे सारा ने इसी काम के लिए उसे दिया था। तकनीकी तौर पर यह लगता है कि इसहाक का जन्म सारा से बिल्कुल उसी प्रकार से हुआ था। परन्तु अब्राहम के विश्वास की बड़ी छलांग में निर्णायक अंतर उस आशा में विश्वास करना है जिसे मानवीय तौर पर आशा नहीं माना जाएगा (रोमियों 4:18)। उसने इस तथ्य पर विचार किया कि

> वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ। और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की; और निश्चय जाना कि जिस बात की उस ने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में भी समर्थ है (रोमियों 4:19-21)।

इब्रानियों के लेखक ने समझाया कि

> विश्वास ही से अब्राहम, जो चाहे बूढ़ा हो चुका था-और सारा भी बांझ थी-पिता बनने के योग्य हो गया क्योंकि उसने उसे जिसने प्रतिज्ञा की थी, विश्वासयोग्य माना। और इस प्रकार इस एक जन से, जो एक प्रकार से मुर्दा था, आकाश के तारों के समान और समुद्र के तीर के बालू के समान अनगिनत संतान उत्पन्न हुए (इब्रानियों 11:11, 12; NIV1984)।[42]

गलातियों 4:23, रोमियों 4:18-21, और इब्रानियों 11:11, 12 के संदर्भों पर विचार करने पर कुछ सच्चाइयां स्पष्ट हो जाती हैं। (1) इश्माएल के "शारीरिक रीति से" जन्म के विपरीत इसहाक का जन्म "प्रतिज्ञा के अनुसार" हुआ था (गलातियों 4:23)। (2) जहां कोई आशा नहीं थी, फिर भी अब्राहम ने आशा की और "विश्वास किया कि वह बहुत सी जातियों का पिता हो" (रोमियों 4:18)। (3) परमेश्वर और उसकी प्रतिज्ञा में अब्राहम के विश्वास के कारण वह "पिता बन पाया" और उसके "आकाश के तारों और समुद्र के तीर के बालू के समान अनगिनत वंश उत्पन्न हुए" (इब्रानियों 11:11, 12; NIV1984)।

क्या यीशु के जन्म की तुलना में इसहाक के जन्म में कोई "चमत्कारी" बात थी? हम "चमत्कार" की ढिठाई नहीं कर सकते; परन्तु गलातियों 4:29 कहता है कि इसहाक का जन्म

"आत्मा के अनुसार" (*ton kata pneuma*) हुआ था जबकि इश्माएल का जन्म "शरीर के अनुसार" (*ho kata sarka*)।

स्वाभाविक शारीरिक जन्म और मसीही व्यक्ति के नये जन्म के बीच अन्तर को समझाने के लिए निकुदेमुस के साथ अपनी बातचीत में इस सम्बन्ध में यीशु द्वारा इस्तेमाल की गई भाषा विशेष रूप से ध्यान देने वाली है: "जो शरीर से जन्मा [*ek tēs sarkos*] वह शरीर और जो आत्मा से जन्मा [*ek tou pneumatos*] है वह आत्मा है" (यूहन्ना 3:6)। अंग्रेज़ी अनुवादकों ने "आत्मा" के लिए Spirit ("स्पिरिट") में आने वाले पहले अक्षर (S) को बड़ा कर दिया जबकि दूसरे को नहीं। यह सही है क्योंकि यीशु समझा रहा था कि सृष्टि और प्रजनन के स्वाभाविक क्रम में, हर किसी का जीवन उसकी अपनी ही नस्ल के अनुसार होता है (उत्पत्ति 1:21-25)। यह स्पष्ट है कि निकुदेमुस केवल शारीरिक जन्म की ही बात सोच रहा था (यूहन्ना 3:4)। यीशु नये जन्म यानी "जल और *आत्मा*" (*ex hudatos kai pneumatos*) से जन्म की अपनी शिक्षा को बता रहा था (यूहन्ना 3:5)। यह "नई सृष्टि" (गलातियों 6:15) अब विश्वास के द्वारा परमेश्वर की संतान है (3:26-29)। उसने परमेश्वर के पुत्र के आत्मा को पा लिया है (4:5, 6; प्रेरितों 2:38; रोमियों 8:9, 10), और स्वाभाविक रूप में उससे नये जन्म के अनुसार व्यवहार करने की उम्मीद की जाती है (गलातियों 5:16, 17)।

बेशक इसहाक को जन्म दिलाने में आत्मा सक्रिय था। इसके अलावा "जल और आत्मा के" मसीही व्यक्ति के जन्म के बारे में नये नियम की बात को गम्भीरता से लेने वाला कोई भी व्यक्ति इस बात को समझ लेगा कि उस व्यक्ति के हृदय में आने वाला परिवर्तन पवित्र आत्मा के काम करने पर है। असल में परमेश्वर का आत्मा ही वह जन्म दिलाता है जो उसके स्वभाव में बदलाव लाता बल्कि उसे "मृत्यु से पार होकर जीवन में" भी लाता है (यूहन्ना 5:24)। फिर भी हम यह कहने में बहुत संकोच करेंगे कि आत्मा इसहाक के जन्म में सक्रिय था और मसीही व्यक्ति को नया जन्म दिलाने में सक्रिय होता है और यीशु के जन्म में भी सक्रिय था (लूका 1:34, 35) और यह कि तीनों को एक ही जहाज़ में या एक ही परिणाम दिलाने वाला माना जाए।

निश्चय ही न तो इसहाक के जन्म को और न ही मसीही व्यक्ति के नये जन्म को यीशु के जन्म के साथ मिलाया जा सकता है। जो आखिर में "परमेश्वर का इकलौता" (*monogenēs tou Theou*) है। एक और वचन में उसे तो "परमेश्वर का इकलौता पुत्र" (*monogenēs Theos*) भी कहा गया है (यूहन्ना 1:18)। हम परमेश्वरत्व को पूरी तरह से सही सही नहीं समझ सकते परन्तु हम इतना जाते हैं कि यीशु का जन्म कोई अनोखी बात थी। असल में वाल्टर बाउर के लैक्सिन में *monogenēs* की परिभाषा "केवल एक" या "(अपने आप में) निराला" के रूप में की गई है। यह शब्द "अपनी तरह या किस्म का एकमात्र" संकेत देता है।[43] यीशु के जन्म जैसा और कोई जन्म न कभी हुआ और न ही कभी होगा।

ऊपर किए गए वचनों के आधार पर कोई संदेह नहीं हो सकता कि इसहाक सारा की कोख में डाले गए अब्राहम के बीज से जन्मा था। इस अर्थ में उसका जन्म-उसके माता पिता की उम्र और सारा के पिछले बांझपन के कारण चाहे असाधारण था पर यह एक सामान्य शारीरिक जन्म था। फिर भी इस जन्म को उसके पिता के परमेश्वर की प्रतिज्ञा में विश्वास के कारण बताया जाता है। जहां विश्वास परमेश्वर के वचन में कार्य करता है वहां कोई बात नामुमकिन हो सकती है?

भला क्या यीशु ने खुद नहीं कहा कि "परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है" (मत्ती 19:26)?

आयतें 24-26. पौलुस ने इस भाग की व्याख्या करने की कुंजी दे दी जब उसने लिखा, **इन बातों में दृष्टांत हैं।** यहां इस्तेमाल किया गया संयुक्त क्रिया शब्द (*allēgoreō*) है, जो (*allos*, "अन्य") और (*agoreuō*, "सार्वजनिक रूप में बोलना" या "अगोरा में बोलना") का मेल है। यह पूरी तरह से एक यूनानी शब्द है और इसका आरम्भ प्राचीन समयों में हुआ था जब लोग सार्वजनिजक सभा में, शायद अगोरा में बोलते थे। इस शब्द ने "बोलने का एक और ढंग" या "कुछ कहने का अलग तरीका" यानी "अलंकारिक रूप में कहना" के अपने अधिकतर मूल अर्थ को बरकरार रखा है। दृष्टांत एक प्रकार का रूपक या अलंकारिक रूप से बताया गया सबक होता है।

4:22, 23 में अब्राहम के परिवार का इतिहास पहले से साबित कर लेने के बाद पौलुस एक रूपात्मक प्रासंगिकता देता था।

> **ये स्त्रियां मानों दो वाचाएं हैं, एक तो सीनै पहाड़ की जिससे दास ही उत्पन्न होते हैं; और वह हाजिरा है। और हाजिरा मानो अरब का सीनै पहाड़ है, और आधुनिक यरूशलेम उसके तुल्य है, क्योंकि वह अपने बालकों समेत दासत्व में है। पर ऊपर की यरूशलेम स्वतंत्र है, और वह हमारी माता है।**

पहली नज़र में ऐतिहासिक घटनाओं की पौलुस की अलंकारिक प्रासंगिकता अजीब लगती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि यहूदी मत की शिक्षा देने वाले इससे स्तब्ध रह गए होंगे![44] हम पूछ सकते हैं, "पौलुस यह कैसे कह सकता है कि हाजिरा (सारा की मिसरी दासी) 'आधुनिक यरूशलेम' (यहूदियों का राजधानी नगर) को दर्शाती है जो 'अपने बालकों समेत दासत्व में है' (यहूदियों) को दर्शाती है? यहूदियों को इश्माएल (अरबियों का पुरखा) के द्वारा कैसे दर्शाया जा सकता है?" पौलुस के रूपक को समझने के लिए हमें उस प्रासंगिकता को मानना होगा जो उसने बनाई।

पौलुस दो वाचाओं को समझाने के प्रतीकात्मक अर्थ में अब्राहम के परिवार के इन सदस्यों का इस्तेमाल कर रहा था। (1) उसने कहा कि हाजिरा व्यवस्था की वाचा को दर्शाती है जो सीनै पहाड़ पर दी गई। (2) सारा प्रतिज्ञा की वाचा को दर्शाती है। यह प्रतिज्ञा अब्राहम से उसके वंश या संतान के सम्बन्ध में की गई थी; यह व्यवस्था से अलग अनुग्रह के द्वारा बांधी गई थी। (3) उसने परमेश्वर की पुरानी वाचा के लोगों यानी इस्राएलियों को दर्शाने के लिए हाजिरा के पुत्र इश्माएल का इस्तेमाल किया। (4) इसहाक परमेश्वर की नई वाचा के लोगों अर्थात विश्वास के उसके नये इस्राएल यानी मसीही लोगों से मेल खाता है। (3:26-29)।

हाजिरा सारा की दासी यानी गुलाम थी। इसलिए प्राचीन प्रथा के अनुसार इस गुलाम माता से जन्मा पुत्र इश्माएल भी गुलाम था। सीनै पहाड़, यरूशलेम और यहूदियों को दर्शाने के लिए हाजिरा और इश्माएल का इस्तेमाल क्यों किया गया? सीनै पहाड़ वह जगह थी जहां मूसा के द्वारा इस्राएल को व्यवस्था दी गई थी। यरूशलेम यहूदियों का पवित्र नगर था, जिसे अभी भी अधिकतर लोग व्यवस्था से सम्बन्धित होने की दलील देते थे। सीनै से मिली वाचा, व्यवस्था के अधीन लोग पाप के दासत्व में थे। *इन सम्पर्कों में गुलामी सामान्य कड़ी है।*

अब्राहम की पत्नी साराह, चाहे कई साल तक बांझ रही थी पर अंत में उसने इसहाक को जन्म दिया। उस प्रतिज्ञा के परिणाम में जो परमेश्वर ने अब्राहम से की थी, उसका आना हुआ। स्वतन्त्र जन्मे पुत्र के रूप में इसहाक अब्राहम का वारिस था। इसलिए पौलुस ने नई वाचा, मसीही लोगों और स्वर्गीय यरूशलेम के प्रतीकों के रूप में सारा और इसहाक का इस्तेमाल किया। मसीही लोगों को यीशु में आज्ञाकारी विश्वास के द्वारा उनके पापों से छुड़ाया गया है और अब वे परमेश्वर के पुत्र और वारिस दोनों हैं (4:6, 7)। *इन सम्पर्कों में स्वतन्त्रता, पुत्रतत्व और विरासत सामान्य कड़ियां हैं।*

क्रिया शब्द (*sustoicheō*) जिसका अनुवाद 4:25 में "मानो" हुआ है उसका अर्थ है "एक ही मद का।"[45] लाइटफुट ने दो मदों में इसके मेल खाते भागों को रखते हुए इस रूपक का विजुअल एड दिया है। पहला शब्दश: या सांसारिक अर्थ देता है जबकि दूसरा लाक्षणिक या आत्मिक अर्थ।

सांसारिक अर्थ	*आत्मिक अर्थ*
हाजिरा, दासी	सारा, स्वतन्त्र स्त्री
इश्माएल, शारीरिक रीति से जन्मा	इसहाक, प्रतिज्ञा के अनुसार जन्मा
पुरानी वाचा	नई वाचा
सांसारिक यरूशलेम	स्वर्गीय यरूशलेम
आदि	आदि[46]

इस विचार को विस्तार देते हुए जेम्स बर्टन कॉफमैन ने इस रूपक को इस तरह दिखाया है:

यहूदी मत	*मसीहियत*
दासी, हाजिरा	स्वतन्त्र स्त्री, सारा
इश्माएल, दासी का पुत्र	इसहाक, स्वतन्त्र स्त्री का पुत्र
स्वाभाविक जन्म	प्रतिज्ञा के द्वारा अलौकिक जन्म
सीनै पहाड़, व्यवस्था	सिय्योन पहाड़, स्वर्गीय वाचा
सांसारिक यरूशलेम	स्वर्गीय यरूशलेम
दासता	स्वतन्त्रता
पहले तो फलदायक, परन्तु फिर:	पहले बांझ, परन्तु फिर:
अपेक्षाकृत बहुत कम संतान	अनगिनत संतान
सताने वाले	सताए जाने वाले
प्रतिज्ञा से खारिज	प्रतिज्ञा के वारिस
यहूदी, शारीरिक इस्राएल, गुलाम	मसीही लोग, आत्मिक इस्राएल, स्वतन्त्र[47]

आयत 27. फिर पौलुस ने अपनी बात को समझाने के लिए यशायाह 54:1 की ओर ध्यान दिलाया:

क्योंकि लिखा है, ''हे बांझ, तू जो नहीं जनती आनन्द कर; तू जिसको पीड़ाएं नहीं उठतीं, गला खोलकर जय जयकार कर; क्योंकि त्यागी हुई की सन्तान सुहागिन की सन्तान से भी अधिक हैं।''

उत्पत्ति की पुस्तक में हाजिरा ने जल्दी से अब्राहम के बच्चे को जन्म दे दिया। सीनै पहाड़ पर वाचा बांधी गई इसने उस वाचा के हज़ारों पुत्रों यानी पूरी इस्राएल जाति को तुरन्त जन्म दे दिया। इसके विपरीत सारा बांझ थी और उसे इसहाक को जन्म देने के लिए नब्बे साल तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। इसी प्रकार से प्रतिज्ञा की वाचा प्रकट होने में बहुत साल लग गए।

अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञा कि उसके ''वंश'' के द्वारा सब जातियां आशीष पाएंगी, के पूरा होने को अभी समय था। पौलुस के अनुसार, प्रतिज्ञा और सीनै पहाड़ पर व्यवस्था के दिए जाने के बीच 430 साल लग गए; और ''वंश'' के जो कि ''मसीह'' था के आने से पहले 1440 साल और लग जाने थे (3:16)। कुल मिलाकर इंतजार का समय लगभग 2000 वर्ष का था। सारा की तरह परमेश्वर के लोगों को मसीह के ऊपर उठाए जाने के बाद, पहले पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के बहाये जाने के साथ, सुसमाचार युग के उदय तक लम्बा, लम्बा इंतजार करना था। इसकी आत्मिक संतान का जन्म केवल तभी होना था जब ''लगभग 3000 मनुष्यों'' का जन्म उस दिन जल और आत्मा से हुआ था (प्रेरितों 2:38, 41)।

यह केवल शुरूआत थी। यहूदी लोग उस समय चाहे पूरे रोमी साम्राज्य में फैले हुए थे, परन्तु कई यहूदी मसीही तेजी से कई हज़ार संख्या में हो गए थे, जैसा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में मिलता है (प्रेरितों 21:20)। यहूदी हाकिमों में, विशेषकर अन्यजाति विश्वासियों की भीड़ के इस नये विश्वास में मिलाए जाने पर ऐसा भय और ईर्ष्या भर गई कि उन्होंने सताव आरम्भ कर दिया। यह बात भी पहले से पता थी। पौलुस ने यशायाह से उद्धृत करते हुए कहा, ''प्रतिज्ञा की हुई संतान सुहागन की संतान से भी अधिक है'' (4:27; देखें यशायाह 54:1)। अंत में नई वाचा की संतान यानी अब्राहम की आत्मिक संतान (गलातियों 3:26-29), ''परमेश्वर के इस्राएल'' (6:16) ने सीनै पहाड़ पर दी गई पुरानी वाचा की संतान से बढ़ जाना था जैसे सुसमाचार के युग के पहले पिन्तेकुस्त के दिन के इतिहास से साबित होता है।

आयत 28. पौलुस गलातियों की और आने वाले वर्षों में सब मसीही लोगों की स्थिति के अपने दृष्टांत को लागू करने लगा। उसने कहा, **हे भाइयो, हम इसहाक के समान प्रतिज्ञा की सन्तान हैं।** इसहाक का जन्म अब्राहम को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा के कारण हुआ था कि उसे और सारा को एक पुत्र होगा। इसी प्रकार से गलातिया के ''भाइयों'' का नया जन्म अब्राहम को दी गई परमेश्वर की ''प्रतिज्ञा'' के कारण हुआ था कि उसके ''वंश'' (मसीह) के द्वारा सब जातियां आशीष पाएंगी। यह प्रतिज्ञा सारा यानी ''ऊपर की यरूशलेम'' (4:26) के द्वारा दर्शाई गई वाचा की ओर ध्यान दिलाती है। मसीही लोग वाचा की संतान हैं और आत्मिक, अनन्त ''स्वर्गीय यरूशलेम,'' ''सिय्योन पहाड़,'' ''जीवते परमेश्वर के नगर'' के वासी हैं (इब्रानियों 12:22, 23)।

इसहाक अब्राहम और सारा का स्वतन्त्र जन्मा पुत्र था। स्वतन्त्र स्त्री की संतान की तरह मसीही लोग भी कई पहलुओं से स्वतन्त्र हैं। हम स्वतन्त्र हैं . . .

शारीरिक जन्म से सम्बन्धित किसी भी नियम से (मत्ती 3:9);
मनुष्यों की परम्पराओं को मानने की बाध्यता से, जो केवल "मनुष्यों की विधियां [और] धर्मोपदेश" हैं (मत्ती 15:1-3, 8, 9);
पाप के परिणामों, दोष, और कठोरता से (रोमियों 6:7, 18; 7:23);
मृत्यु के भय की मनुष्य में पाई जाने वाली दासता से (इब्रानियों 2:14, 15);
व्यवस्था के जुए से जिसे कोई मनुष्य उठा नहीं पाया (गलातियों 5:1; प्रेरितों 15:10);
उस छुटकारे के द्वारा जो केवल यीशु के हमारे लिए श्राप बनने के द्वारा प्रभावी हुआ, व्यवस्था के श्राप से (गलातियों 3:13)।

प्रभु ने स्वयं कहा, "इसलिये यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे" (यूहन्ना 8:36)।

छुटकारे का एक पहलू हमारा केवल कल्पना में है। रोमियों 8:23 के अनुसार आम तौर पर पृथ्वी के अभिषप्त लोगों के साथ जो हमारे "पास आत्मा का पहला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने की, अर्थात् अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं" (देखें रोमियों 8:18-25)। चाहे हमें "लेपालक होने का पद" मिल गया है और परमेश्वर के अपने पुत्र के आत्मा जो "हे अब्बा! हे पिता!" कहकर पुकारता है हमारे हृदयों में दिया गया है (गलातियों 4:5, 6)। फिर भी पृथ्वी के छुटकारा न पाए हुए लोगों की तरह हमें शारीरिक कष्ट और पीड़ा होती है। इफिसुस के मसीही लोगों के नाम पौलुस ने लिखा, "हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है" (इफिसियों 1:7)। तौभी उसी पत्र में उसने इन भाइयों को समझाया "और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है" (इफिसियों 4:30)। यह "छुटकारे का दिन" स्पष्ट तौर पर "प्रभु का दिन" या न्याय का दिन है। इस दिन "जितने कब्रों में हैं वे उसका शब्द सुनकर निकल आएंगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के लिये जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के लिये जी उठेंगे" (यूहन्ना 5:28, 29; NIV)। उस समय, जब प्रभु दोबारा आएगा, "वह हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा" (फिलिप्पियों 3:21; NKJV)। "हमारी देह का छुटकारा" अंतिम रूप में पुनरुत्थान में ही (रोमियों 8:23) होगा और हमें "परमेश्वर की संतानों की महिमा की स्वतन्त्रता में लाया" जाएगा (रोमियों 8:21; NIV1984)।

गलातियों 4:28 उसका जो पौलुस ने पहले ही कहा था संक्षेप में दोहराया जाना है: "क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो। . . . और यदि तुम मसीह के हो और अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो" (3:26-29)। अब्राहम से की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा अनुग्रह की नई वाचा में मसीह के लहू के द्वारा लागू हुई (लूका 22:20; इब्रानियों 8:10-12)। यह सीनै पहाड़ पर दी गई व्यवस्था वाली गुलाम बनाने वाली वाचा के बिल्कुल उलट है, जिसे हटा दिया गया था (इब्रानियों 8:13; 10:9, 10)।

आयत 29. दृष्टांत में दो पुत्रों की अलग अलग भूमिकाओं को आगे और विस्तार से समझाया गया है। हाजिरा ("दासी") का पुत्र इश्माएल **शरीर के अनुसार जन्मा** था। इसके

विपरीत सारा (''स्वतन्त्र स्त्री'') का पुत्र इसहाक **आत्मा के अनुसार जन्मा** था। उस ज़माने में इश्माएल इसहाक को **सताता था** (*diōkō*)। यह शब्दावली पुराने नियम में नहीं मिलती पर यह हवाला इसहाक के दूध छुड़ाने का जश्न मनाने की घटनाओं से जुड़ा लगता है।[48] उस अवसर पर, ''सारा को मिसरी हाजिरा का पुत्र, जो अब्राहम से उत्पन्न हुआ था, हंसी करता हुआ दिखाई पड़ा'' (उत्पत्ति 21:9)। ''हंसी करता हुआ'' के लिए इब्रानी शब्द (*tsachaq*) के कई अर्थ हो सकते हैं, संदर्भ पर निर्भर है। इसका अर्थ ''हंसना'' या ''खेलना'' हो सकता है;[49] परन्तु कई बार इसका द्वेषपूर्ण संकेत देते हुए ''खिलौना बनाना'' या ''मज़ाक'' का नकारात्मक अर्थ होता है (देखें उत्पत्ति 39:14; 2 इतिहास 30:10)।[50] बच्चे के रूप में इसहाक का दूध छुड़ाए जाने के समय इश्माएल सोलह सतरह सालों का रहा होगा।[51] यह देखने के लिए कि यह छेड़खानी पीड़ादायक छेड़खानी या ''सताव'' तक पहुंच गई होगी, थोड़ा कल्पना करने की आवश्यकता है। जो भी हो, ''सताता था'' वह शब्द है जिसे प्रेरणा पाए हुए प्रेरित ने उस परिस्थिति के सम्बन्ध में इस्तेमाल करना चुना।

पौलुस ने कहा कि जिस प्रकार से इश्माएल इसहाक को सताता था **वैसा ही अब भी होता है।** हो सकता है कि यह शब्द खास तौर पर उसकी अपनी परिस्थिति पर लागू होते हों जिसमें उसने गलातियों को लिखा। यदि यह पत्र 48-49 ई. तक लिखा गया था तो पहली मिशनरी यात्रा के तुरन्त बाद ही, जब पौलुस और बरनबास सीरिया की अंताकिया की कलीसिया के साथ कुछ समय बिता रहे थे (प्रेरितों 14:26-28), तो लुस्त्रा में पथराव से होने वाले उसके घाव अभी भरे नहीं होंगे। उस यात्रा के आरम्भ के निकट इन मिशनरियों का ''बार-यीशु नामक एक यहूदी टोना और झूठा भविष्यवक्ता'' द्वारा साइप्रस के पश्चिमी तट पर पाफुस में विरोध किया गया था (प्रेरितों 13:6-12)।

पिसिदिया के अंताकिया में अविश्वासी यहूदियों में बढ़ने के लिए एक पैटर्न शुरू किया गया। पौलुस और बरनबास को प्रचार करते सुनने के लिए इकट्ठा हुई भीड़ को देखकर ईर्ष्या करने वाले लोगों ने ''भक्त और कुलीन स्त्रियों को और नगर के प्रमुख लोगों को उसकाया, और पौलुस और बरनबास के विरुद्ध उपद्रव करवाकर उन्हें अपनी सीमा से निकाल दिया'' (प्रेरितों 13:42-50)। लुस्त्रा में दोनों मिशनरी बड़ी मुश्किल से पथराव से बचे थे (प्रेरितों 14:1-6)। लुस्त्रा में पौलुस बच नहीं पाया; क्योंकि वहां ''यहूदियों ने अन्ताकिया और इकुनियुम से आकर लोगों को अपनी ओर कर लिया, और पौलुस पर पथराव किया, और मरा समझकर उसे नगर के बाहर घसीट ले गए'' (प्रेरितों 14:19)।

इश्माएल द्वारा इसहाक का सताव अविश्वासी यहूदियों द्वारा निर्दयतापूर्वक किए जाने वाले पौलुस के सताव जैसा था। जातीय आधार पर चाहे पौलुस खुद एक यहूदी था और अपने पथभ्रष्ठ जोश में उसने मसीहियत को सताया था परन्तु बाद में उसे नये जन्म का अनुभव मिल गया था। अब वह मसीही लोगों में गिना जाता था जो ''आत्मा के साथ जन्मे'' थे (गलातियों 4:29)। वह मसीह में था, जहां पर यहूदी और अन्यजाति के बीच के अंतर मिट जाते हैं। अपने मनपरिवर्तन के कारण यह पूर्व सताव करने वाला अब सताव सहने वाला बन गया था। उसने अपने आपको इसहाक की भूमिका में पाया जो ''शरीर के अनुसार'' अपने बड़े भाई के मज़ाक का शिकार था। पौलुस की तरह (5:11) गलातिया के मसीहियों को भी यीशु में विश्वास के कारण सताया

जाता था (3:4)।

आयत 30. यह आयत सवाल खड़ा करती है कि **परन्तु पवित्र शास्त्र क्या कहता है?** उत्तर उत्पत्ति 21:10 से थोड़ा सहज ढंग से दोहराया गया है: **''दासी और उसके पुत्र को निकाल दे, क्योंकि दासी का पुत्र स्वतन्त्र स्त्री के पुत्र के साथ उत्तराधिकारी नहीं होगा।''** मूल संदर्भ में ये शब्द सारा द्वारा कहे गए थे इसहाक को चिड़ाते हुए अपनी सौतन हाजिरा के पुत्र इश्माएल को देखकर खीझती थी। मामला और भी उलझाने के लिए यह दुर्यव्यवहार इसहाक के दूध छुड़ाने के सम्मान वाले जश्न में हुआ।

मानवीय रूप में सारा की मांग क्रूरता भरी और अनुचित दण्ड लगती है, जो उस नवयुवक के व्यवहार की बराबरी में कहीं नहीं दिख रहा। अब्राहम की प्रतिक्रिया से हम देख सकते हैं कि उसकी भावनाएं हमारे जैसी ही थीं, चाहे वे व्यक्तिगत नहीं हैं। हम पढ़ते हैं ''यह बात अब्राहम को अपने पुत्र के कारण बहुत बुरी लगी'' (उत्पत्ति 21:11)।

अब्राहम का उत्तर चाहे जितना भी सही लगे पर अंतर्यामी परमेश्वर की इसहाक और उसकी संतान के लिए ही नहीं बल्कि इश्माएल और उसकी संतान के लिए भी उद्देश्य और योजना थी। अब्राहम ने केवल इस्राएल जाति का ही पिता नहीं होना था बल्कि ''जातियों के समूह का मूल पिता'' बनना था (उत्पत्ति 17:5)। इसी प्रतिज्ञा के आधार पर अब्राहम का नाम ''अब्राम'' (''उन्नत पिता'') से ''अब्राहम'' (''बहुतों का पिता'') बदला गया था।

यह नाम बदली तब हुई जब अब्राहम निन्यानवे साल का था। इस अवसर पर परमेश्वर उसके पास आया और उसने उसे बताया कि अगले साल इसी समय सारा, जो कि उस समय नवासी साल थी, बच्चा जनेगी। यकीन न करते हुए ''अब्राहम मुंह के बल गिर पड़ा और हंसा'' और कहने लगा, ''इश्माएल तेरी दृष्टि में बना रहे! यही बहुत है!'' (उत्पत्ति 17:17, 18)। परमेश्वर को इश्माएल का ध्यान था, क्योंकि उसने कहा था, ''इश्माएल के विषय में भी मैं ने तेरी सुनी है: मैं उसको भी आशीष दूंगा, और उसे फलवन्त करूंगा और अत्यन्त ही बढ़ा दूंगा; उस से बारह प्रधान उत्पन्न होंगे, और मैं उस से एक बड़ी जाति बनाऊंगा'' (उत्पत्ति 17:20)।

यहां पर परमेश्वर ने अब्राहम को निर्देश दिया ''उस लड़के [इश्माएल] और अपनी दासी [हाजिरा] के कारण तुझे बुरा न लगे; जो बात सारा तुझ से कहे, उसे मान, क्योंकि जो तेरा वंश कहलाएगा सो इसहाक ही से चलेगा'' (उत्पत्ति 21:12)। अब्राहम परमेश्वर का आज्ञाकारी था और उसने हाजिरा और इश्माएल को भेज दिया (उत्पत्ति 21:14)। इस कार्यवाही से सारा को इसहाक की सुरक्षा का यकीन हो गया और उसने इसहाक को अब्राहम की सम्पत्ति का इकलौता ''वारिस'' ठहराया (उत्पत्ति 24:36; 25:5, 6)। इश्माएल ने उसके साथ साझा वारिस नहीं होना था।

गलातिया के मसीही लोगों के लिए इस उदाहरण में कौन सी आत्मिक सच्चाई थी? पौलुस इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि शरीर के अनुसार यहूदी लोग (जो इश्माएल को दर्शाते हैं) का परमेश्वर के राज्य में कोई मीरास नहीं थी। इसके बजाय नई वाचा में एकमात्र मीरास *मसीही लोगों* के लिए है जो आत्मा से जन्मे हैं (जिनका प्रतिनिधित्व इसहाक करता है)। रॉबर्ट एल. जॉन्सन के अनुसार ''पौलुस के कहने का अर्थ यह है कि यह मीरास केवल अब्राहम के आत्मिक वंश के लिए होनी थी। शरीर और आत्मा यानी दासत्व [और] स्वतन्त्रा में कोई समझौता नहीं

होना था। व्यवस्था और सुसमाचार साथ-साथ नहीं रह सकते।''[52]

आयत 31. पौलुस ने समाप्त करते हुए कहा, **इसलिये हे भाइयो, हम दासी के नहीं परन्तु स्वतन्त्र स्त्री की सन्तान हैं।** वह इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि मसीही लोग दासी की संतान नहीं हैं। ऐसा उसने पहली बार नहीं कहा था और न ही अंतिम बार होना था। गलातियों की पुस्तक में और उसने कई जगह कहा जो व्यवस्था से जुड़े विनाशकारी परिणामों को दिखाता है:

जो यहूदी मत की शिक्षा देने वाले सिखा रहे थे ''और ही प्रकार का सुसमाचार'' (1:6), बल्कि बिगड़ा हुआ सुसमाचार था (1:7)।

पौलुस ने भाइयों के सामने पतरस से कहा था, ''यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती'' तो परमेश्वर का अनुग्रह बेकार है और ''मसीह का मरना व्यर्थ होता'' (2:21)।

''जितने लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा करते हैं, वे सब शाप के अधीन है'' (3:10)।

''पर विश्वास के आने से पहले व्यवस्था की अधीनता में हमारी रखवाली होती थी, ... व्यवस्था मसीह तक पहुंचाने के लिए हमारी शिक्षक हुई है ... परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो हम शिक्षक के अधीन न रहे'' (3:23-25)।

''वैसे ही हम भी, जब बालक थे, तो संसार की आदि शिक्षा के वश में होकर दास बने हुए थे। परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा ... ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले'' (4:3-5)।

''इसलिए तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है; और अब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ'' (4:7)।

''मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें स्वतंत्र किया है; अत: ... दासत्व के जूए में फिर से न जुतो'' (5:1)।

जो भी ''व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहे [वह], मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो'' (5:4)।

''और यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो तो व्यवस्था के आधीन रहे'' (5:18)।

पौलुस ने कहा कि ''हम किसी दासी के नहीं परन्तु स्वतन्त्र स्त्री की सन्तान हैं।'' यूनानी धर्मशास्त्र की तरह अंग्रेज़ी संस्करण NASB में ''दासी'' के लिए शब्द (''bondwoman'') से पहले निश्चित उपपद (''*the*'') नहीं है, किस्म या गुण का विचार पहले शब्द में मिलता है जबकि दूसरे में पहचान का परिचय कराया जाता है। मसीही लोग ''किसी ऐसी स्त्री की संतान नहीं जैसी गुलाम होती है परन्तु *उस* (सारा) की संतान हैं जो स्वतन्त्र है।'' पौलुस की वाक्य रचना हाजिरा की शान पद को घटिया बताती और सारा की महिमा और रूतबे को बढ़ाती है।[53]

दृष्टांत का अर्थ दोनों वाचाओं के अंतर पर निर्धारित है। मसीही लोगों के रूप में न तो हमारा *जन्म* और न *गोद* लिया जाना व्यवस्था के लिए परमेश्वर की संतान के रूप में हुआ। मसीह में यहूदी या अन्यजाति, खतना या खतनारहित, या दास स्वतन्त्र में कोई अंतर नहीं है।[54] जो लोग मसीह में हैं वे व्यवस्था के असहनीय जुए से मुक्त हैं (5:1), दण्ड से मुक्त हैं (रोमियों 8:1, 2), और व्यवस्था के श्राप से मुक्त हैं (गलातियों 3:13)। मेमने के लहू के द्वारा खरीदे गए सब

लोग अब परमेश्वर के छुड़ाए हुए और परमेश्वर के आत्मा के वास पाने वाले लोगों की भीड़ हैं।

यीशु ने सामरी स्त्री को बताया था कि "उद्धार यहूदियों में से है" (यूहन्ना 4:22)। परन्तु इस वाक्य का अर्थ यह नहीं है कि उद्धार की कोई भी सामर्थ्य यहूदियों, यहूदी मत या व्यवस्था से निकलती हो। इसके बजाय परमेश्वर ने इस्राएल को संसार में उद्धारकर्त्ता को लाने के माध्यम के रूप में चुना। उद्धार पूरी तरह से यीशु में मिलना था। व्यवस्था ने अनन्त जीवन की साक्षी दी परन्तु यह वह जीवन नहीं दे सकती थी; क्योंकि वह जीवन केवल मसीह में पाया जा सकता है।[55]

प्रासंगिकता

पौलुस की ज़ोरदार अपील (4:1-20)

पौलुस ने अध्याय 4 में मूसा की व्यवस्था पर निष्ठा पर मसीह में विश्वास की श्रेष्ठता पर चर्चा करते हुए, इस आवश्यक सच्चाई को अपने पाठकों को समझाने के लिए कई नीतियों का इस्तेमाल किया। तर्क, भावना, और रूपक का इस्तेमाल करते हुए उसने गलातिया के मसीही लोगों से अपनी परिस्थितियों का मूल्यांकन करके अपने जीवनों को बदलने का आग्रह किया। वह चाहता था कि वे व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहराए जाने की इच्छा करने के बजाय पूरी तरह से यीशु में भरोसा रखें।

उसने पुत्रों के रूप में उनके गोद लिए जाने पर आनन्द किया (4:1-7)। अध्याय 3 के रूपक को जारी रखते हुए पौलुस ने यहूदी मत को उस बालक की अवस्था से मिलाया जो "पिता के ठहराए हुए समय तक संरक्षकों और प्रबन्धकों के वश में रहता है" (4:2)। व्यवहारिक रूप में बालक "और दास में कोई भेद नहीं" था (4:1)। परन्तु स्वर्गीय पिता द्वारा ठहराया हुआ समय आ गया था और उसने अपने पुत्र को जगत में भेज दिया था "ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले" (4:4, 5क)। यीशु मसीह के द्वारा छुटकारा दिलाए जाने से यहूदियों और अन्यजातियों दोनों को एक समान पुत्र बनाया जाना था (4:5ख, 6)। प्रेरित ने जबर्दस्त ढंग से घोषित करते हुए विचार को संक्षिप्त किया, "इसलिए तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है; और अब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ" (4:7)।

उसने उनके लौट जाने पर अफ़सोस किया (4:8-11)। गलातिया में पौलुस द्वारा मसीह में लाए गए कई लोग अन्यजाति मूर्तिपूजक थे। इस कारण उनकी पिछली जीवन शैली की बात करते हुए उसने कहा कि वे "उनके दास थे जो स्वभाव से परमेश्वर नहीं थे" (4:8)। जब उसने सुसमाचार सुनाया था (मसीह को सरेआम क्रूस पर चढ़ाया हुआ दिखा के; 3:1), तो उन्होंने विश्वास से बपतिस्मा लेकर उसे माना था और "परमेश्वर की संतान" बन गए थे (3:26)। पौलुस को इस बात की परेशानी थी कि वे निर्बल और निकम्मी आदि शिक्षा की बातों की ओर फिर "गुलाम हो जाएंगे जो उन्हें बचा नहीं सकतीं" (4:9)। इस भाषा में यहूदियों के विशेष दिनों और अवसरों को सम्मान देना शामिल था जिसे यहूदी मत की शिक्षा देने वाले अन्यजाति मसीहियों पर थोप रहे थे (4:10)। प्रेरित जिसने उन्हें प्रचार करने के लिए अपनी जान जोखिम में डालनी थी को केवल इतनी आशा थी कि उनके लिए किए गए उसके परिश्रम "व्यर्थ" नहीं थे (4:11)।

उसने उनके नये सिरे से लगाव की भीख मांगी (4:12-20)। विश्वास में उनके पिता के रूप में गलातियों से उसके नमूने का अनुकरण करने की विनती की (4:12)। उसने गलातियों को उसके शानदार स्वागत किए जाने, उसके डरावने रोग के बावजूद उसे इस प्रकार से ग्रहण किए जाने की बात याद दिलाई, जैसे वह "परमेश्वर का दूत" या "स्वयं मसीह" यीशु ही हो (4:13, 14)। उसने उन्हें यह कहते हुए कि आवश्यकता पड़ने पर वे उसके लिए अपनी "आंखें" तक बलिदान कर देते, उन्हें याद दिलाया कि उन्होंने उससे कितना प्रेम दिखाया था (4:15)। पौलुस ने उन से यहूदी मत की शिक्षा देने वालों की झूठी शिक्षा को नकारने और मसीह में आनन्द और उसके लिए अपने प्रेम को नये सिरे से बनाने की भीख मांगी (4:16-18)। वह अपनी आत्मिक "संतान" से मिलने को तड़पता था ताकि वह उन से रू-ब-रू बात कर सके। उसका लक्ष्य था कि मसीह सचमुच में उन में "रूप" ले ले (4:19, 20)।

उसने मसीह में उनकी स्वतन्त्रता को उदाहरण देकर समझाया (4:21-31)। पौलुस ने साफ़ साफ़ समझाया कि गलातियों को स्वतन्त्रता यीशु मसीह में मिली थी। उसने अब्राहम के दो पुत्रों इश्माएल और इसहाक की पुराने नियम की कहानी पर आधारित एक रूपक का इस्तेमाल किया। इश्माएल "दासी" हाजिरा से जन्मा अब्राहम का पुत्र था। वह सांसारिक यरूशलेम के साथ साथ सीनै पहाड़ पर दी गई पुरानी वाचा के सदृश्य है। इसके विपरीत इसहाक "स्वतन्त्र स्त्री" अब्राहम की पत्नी सारा से जन्मा उसका पुत्र था। वह स्वर्गीय यरूशलेम के साथ साथ मसीह द्वारा बांधी गई नई वाचा के सदृश्य है (4:21-27)।

इश्माएल की तरह यहूदियों का जन्म स्वाभाविक ढंग से हुआ था। परन्तु गलातिया के मसीही लोग इस बात में "इसहाक के समान" थे कि वे "प्रतिज्ञा की संतान" थे (4:28)। परमेश्वर ने अब्राहम और सारा को पुत्र देने की अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया था, चाहे वे इतने बूढ़े थे कि उनकी संतान नहीं हो सकती थी और सारा बांझ थी। मसीही लोगों का नया अर्थात आत्मिक जन्म अब्राहम को उसके वंश (यानी मसीह) के द्वारा जब जातियों को आशीष देने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा का पूरा होना था।

जिस प्रकार से इश्माएल इसहाक को परेशान किया करता था उसी प्रकार से अविश्वासी यहूदी भी कलीसिया को सताते थे। सारा ने अब्राहम से हाजिरा को और इश्माएल को निकाल देने का आग्रह किया था; क्योंकि गुलाम के पुत्र ने इसहाक के साथ मीरास में साझी नहीं होना था। गलातियों को अपने बीच में से यहूदी मत की शिक्षा देने वालों को निकाल देना आवश्यक था (4:29-31)।

"आदि शिक्षा" (4:3, 9)

अध्याय 4 पौलुस ने दो बार "आदि शिक्षा" की बात की (4:3, 9; ESV)। पहली बार यह शब्द उस व्यवस्था के लिए है जिसके अधीन यहूदी लोग थे। दूसरी बार वाले शब्द में अन्यजाति आते हैं और इसका दोहरा अर्थ है। "फिरते हो" वाक्यांश "व्यवस्था" के साथ साथ (जिससे वे यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के प्रभाव के कारण जुड़े हुए थे। काफिर मूर्तिपूजा जो गलातिया के लोग पहले करते थे) वाली "आदि शिक्षा" से सम्बन्धित है। इनमें से किसी में भी उन्हें उद्धार दिलाने की सामर्थ्य नहीं थी।

व्यवस्था ने उस समय तक लाने के लिए जब मसीह ने आना था एक आवश्यक साधन का काम किया। बच्चे को संक्षिप्त विचारों को समझने के योग्य होने के लिए स्पर्शयोग्य सहायता की आवश्यकता होती है। हमें अपने बच्चों को समझाने के लिए कई बार तस्वीरों के द्वारा समझाने की आवश्यक पड़ती है। परमेश्वर ने इस्राएलियों जब वे शैश्वकाल में थे, बातचीत करने के लिए दिखाई देने वाली आकृतियों का इस्तेमाल किया और दृष्टांतों को अमल में लाया। आज बच्चे शिक्षा की बुनियादी बातों और शब्दावली को समझने के लिए "एलिमैंटरी यानी नर्सरी स्कूल" में जाते हैं क्योंकि उन्हें पढ़ाई, गणित तथा अन्य क्षेत्रों में निपुण होने से पहले वर्णमाला और अंकों का ज्ञान होना आवश्यक है। इन बुनियादी बातों के बिना शिक्षा की पूरी प्रक्रिया ही असम्भव होगी। जब बच्चा आदि शिक्षा की इन बातों को समझ जाता है तो उसे "बड़े स्कूल" में भेजा जाता है। इसी प्रकार से व्यवस्था ने अपना काम पूरा किया परन्तु मसीह के आने के बाद उसकी ओर लौट जाने का कोई कारण नहीं था।

यीशु छुड़ाने वाला (4:4, 5)

पौलुस ने 4:4, 5 में लिखा, "परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ, ताकि व्यवस्था के आधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले।" इन शब्दों में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि सही समय पर परमेश्वर ने मनुष्य को पाप की दासता से छुड़ाने के लिए पृथ्वी पर अपने पुत्र को भेजा (देखें यूहन्ना 8:31-36)। इस विचार को इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने व्यक्त किया:

> इसलिए जब कि लड़के मांस और लोहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया; ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात शैतान को निकम्मा कर दे। और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे थे, उन्हें छुड़ा ले (इब्रानियों 2:14, 15)।
>
> इसी कारण वह जगत में आते समय कहता है, कि बलिदान और भेंट तू ने न चाही, पर मेरे लिए एक देह तैयार की (इब्रानियों 10:5)।
>
> उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं (इब्रानियों 10:10)।

इन तथा अन्य वचनों से स्पष्ट है कि यीशु के लिए मनुष्य को छुटकारा दिलाने के लिए देह में मरना आवश्यक था।[56] यह परमेश्वर की "सनातन मंशा" का पूरा होना था (इफिसियों 3:11)। इसके बावजूद गतसमनी में उसकी भावनात्मक बेचेनी पर विचार करना रौंगटे खड़े कर देने वाला है। यह जानते हुए कि उसके साथ क्या होने वाला है। परन्तु यह भी जानते हुए कि परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है, उसने संघर्ष किया। उसने दिल से दुआ की "यदि हो सके तो यह घड़ी मुझ से टल जाए।" उसने पुकारा, "हे अब्बा, हे पिता, तुझ से सब कुछ हो सकता है; इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले: तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, पर जो तू चाहता है वही

हो'' (मरकुस 14:36)। उसकी पीड़ा इतनी अधिक थी कि ''उसका पसीना मानो लहू की बड़ी बड़ी बून्दों के समान भूमि पर गिर रहा था'' (लूका 22:44)।

यीशु पिता की इच्छा को पूरा करना चाहता था और ऐसा करके उसे बल भी मिल रहा था (यूहन्ना 4:31-34); इसके बावजूद जैसा कि और कहीं नहीं मिलता, उसकी इच्छा को पिता की इच्छा के विरुद्ध परखा गया। इस देह में रहते हुए जो उसका जो वह था भाग बन गई थी, वह उससे उसकी इच्छा नहीं कर सकता था जो उसके साथ होने वाला था। ईश्वरीय रूप में यीशु को परमेश्वर की इच्छा के साथ मिलने में आनन्द मिलता था, परन्तु मनुष्य के रूप में उसके मानवीय स्वभाव की हर बात उस से जिसे वह जानता था कि ईश्वरीय इच्छा है, बचने के लिए पुकारती थी। गतसमनी में कहीं अपने पिता की इच्छा के सामने अपनी इच्छा को बलिदान करते हुए यीशु के आत्मा ने उसके जीवन की सबसे बड़ी विजय पाई: ''तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, पर जो तू चाहता है वही हो'' (मरकुस 14:36)। यहीं पर, मानवीय रूप में परमेश्वर के पुत्र ने ''दुख उठा उठाकर आज्ञा माननी सीखी। और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया'' (इब्रानियों 5:8, 9)।

मंच तैयार करना (4:4)[57]

पवित्र शास्त्र के गम्भीर पाठक के लिए अब्राहम की संतान की परीक्षाएं कई प्रकार की थीं और कई प्रकार से पीड़ादायक थीं, कई बार तो बड़ी ही विनाशकारी थीं; परन्तु परमेश्वर का निर्देश मानते हुए सब बातें उद्देश्यपूर्ण थीं। मिसर की दासता के बीच इस्राएल जाति के जन्म के कारण जंगल में घूमने के दौरान उनका इतिहास विश्वासरहित हो गया। न्यायियों के अधीन इसका हठी काल से आरम्भिक राजाओं के सुनहरी युग का मार्ग खुल गया। अधिकतर राजाओं के शासन में इस्राएल की नासतिकता के बाद इसका अश्शूर और बाबुल में जाने का और फिर जरूबाबिल, एज्रा और नहेम्याह की अगुआई में आनन्दपूर्वक अपने देश लौटने का कारण बनी। सिकंदर महान के शासनकाल में मकिदुनिया की विजय (और सांस्कृतिक, भाषाई, और धार्मिक बदलावों से) सीरिया और मिसर के राजाओं के शासन में कष्ट पड़े। स्वतन्त्रता के मक्काबियों के शानदार पर संक्षिप्त काल से पहले पौंपे और रोमियों के कब्जे से निजात की उम्मीद जगी। इन सब क्रांतिकारी बदलावों ने जिनसे आस पास के लोगों के बीच लड़ाइयां होती थीं, ''इस्राएल की शांति'' और बचे हुए विश्वासी लोगों के बीच ''यरूशलेम के छुटकारे'' की उनकी उम्मीद बढ़ाने का काम किया (लूका 2:25, 38)।

न तो अब्राहम के पोते याकूब (इस्राएल) और न ही उसके नाम से बनी जाति को मालूम था कि परमेश्वर उनके साथ क्या कर रहा है। फिर भी उन सत्तर वंशज से जो मिस्र में चले गए थे एक जाति बनने से भी पहले परमेश्वर की सनातन मंशा के साथ ''भेद जो परमेवर में आदि से गुप्त था'' (इफिसियों 3:9) आकार लेने लगा था। जिस प्रकार से मिस्र का इस्तेमाल एक खास उद्देश्य के लिए किया गया था उसी प्रकार परमेश्वर ने अन्य उद्देश्यों के लिए अन्यजातियों को एक के बाद एक को इस्तेमाल करना था। इस्राएल के उत्तरी राज्य का अश्शूर में निर्वासन एक बड़ा धक्का था, यहां तक कि उत्तरी राज्य यहूदा के लिए। परन्तु इस भयंकर हार से भी परमेश्वर के लोगों को मूर्तिपूजा और उसकी आज्ञा न मानने के भयभीत करने वाले परिणामों की समझ नहीं

आई। इसलिए यहूदा को नबूक्कदनेसर के विनाश का दण्ड दिया गया और इसलिए यरूशलेम के मन्दिर को नष्ट कर दिया गया और लोगों को बाबुल की दासता में ले जाया गया। इन घटनाओं ने यहूदियों को निराशा से भर दिया परन्तु अंत में इस बार उन्हें समझ आ ही गई। इसके बाद दोबारा हमें उनके बीच मूतिपूजा के पाप की बात पढ़ने को नहीं मिलती।

निर्वासन के दौरान दानिय्येल ने बाबुल, मादा-फारस, मकिदुनिया और रोम के चार राज्यों और समय के पूरा होने और मसीहा के आने के लिए मंच तैयार करने की उनकी अलग अलग भूमिका की विस्तार से शानदार भविष्यवाणी की (दानिय्येल 2:26-45)। क्योंकि पहले साम्राज्य में जो कि बेबिलोनियों का था यरूशलेम के मन्दिर को नष्ट कर दिया था इसलिए यहूदी निर्वासित लोग आराधनालयों में इकट्ठा होने लगे। इस नये प्रबन्ध के द्वारा परमेश्वर का वचन भूमध्यसागर की पूरी घाटी और इसके पार सुरक्षित रहा। परम्परा के अनुसार कहीं पर भी जहां दस यहूदी नर हों वे आराधना के लिए इकट्ठा हो सकते थे, वहां वचन का अध्ययन किया जाता था और उनका ज्ञान आगे फैलाया जाता था। आराधनालय में जीने के यहूदी ढंग को ही बरकरार नहीं रखा गया बल्कि काफिरों के जीवनों को भी इसने छुआ जो इसकी विधियों और इसके उच्च नैतिक मापदण्डों से आकर्षित होते थे।

दानिय्येल द्वारा जिस दूसरे साम्राज्य की भविष्यवाणी की गई थी वह मादी और फारसियों का था। दानिय्येल 5:30, 31 में इस बदलाव का वर्णन किया गया है: ''उसी रात कसदियों [या बेबिलोनियों] का राजा बेलशस्सर मार डाला गया। और दारा मादी जो कोई बासठ वर्ष का था राजगद्दी पर विराजमान हुआ।''

मादी और फारसी लोग कुटुम्बी और मित्र राष्ट्र थे। दानिय्येल द्वारा उन्हें एक ही राज्य के रूप में माना गया, जैसा कि दानिय्येल 8:20 में स्पष्ट है: ''जो दो सींगवाला मेढ़ा तू ने देखा है, उसका अर्थ मादियों और फारसियों के राज्य से है।'' यहूदियों के इतिहास में फारसियों की मुख्य भूमिका में कुस्त्रु का वह आदेश था जिसने उन्हें अपने देश में लौटकर यरूशलेम में मन्दिर को फिर से बनाने का आदेश था (एज्रा 1:1, 2)।

दानिय्येल द्वारा जिस तीसरे राज्य की भविष्यवाणी की गई थी वह मकदुनियों का था जिसने उसे ''यूनान का राज्य'' कहा। इसे उसने ''रोंआर बकरा'' के रूप में वर्णित किया जो मादा और फारस के राजाओं को दर्शाने वाले दो सींगों वाले मेढ़े को गिरा देता है (दानिय्येल 8:21)। फिलिप द्वितीय के समय तक मकिदुनिया ने यूनानी गोत्रों के इतिहास में कोई बड़ी भूमिका नहीं निभाई थी। परन्तु यह फिलिप जबर्दस्त ढंग से एक चालाक राजनेता और साहसी सैनिक सेनापति था। उसने पहले तो अपने हम-वतनों को एक शक्तिशाली सैनिक बल में इकट्ठे किया और फिर दक्षिण में अपने यूनानी बंधुओं पर विजय पाई। फिलिप का एक छोटा पुत्र सिकन्दर था और उसने यह सुनिश्चित किया कि लड़के को बेहतरीन शिक्षक उस समय का प्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तु मिला। फिर उसने लड़के को बेहतरीन शिक्षा दिलाई। कई बार उसके स्वभाव और बुरे व्यवहार के कारण उसे ''गंवार फिलिप'' कहा जाता था, फिर भी फिलिप ने एथेंस की श्रेष्ठ संस्कृति से प्रभावित होकर अपने दरबार में अपने समय की कुछ बड़ी बड़ी साहित्यक हस्तियों को आमन्त्रित किया। इस व्यक्ति के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है परन्तु उसकी मुख्य भूमिका अपने समय सबसे शक्तिशाली सैनिक मशीन को इकट्ठा करने में थी। उसकी हत्या के समय यह

मशीन अतुलनीय रूप में अधिक प्रसिद्ध पुत्र के हाथों में पड़ गई जो "सिकन्दर महान" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। सिकन्दर फारस का भावी विजेता था जिसे उस समय तक का निर्विरोद्ध महा शक्ति माना जाता था।

मसीहा के युग के आगमन के लिए मार्ग तैयार करने में सहायता के लिए निश्चय ही सभ्य संसार में परिवर्तन लाने के लिए इस युवक का इस्तेमाल करने में यह परमेश्वर की योजना का भाग था। यूनानियों की भाषा और संस्कृति को बढ़ाने के द्वारा इसे पूरा किया गया। जीने का यह ढंग सिकन्दर की सैनिक विजयों के कारण दूर दूर तक फैल गया। इन विजयों के द्वारा असल में सारे पूर्वी भूमध्य सागर आौर भारत देश तक इस असाधारण युवक का प्रभाव महसूस किया गया। इब्रानी बाइबल का अनुवाद यूनानी में (स्पष्टतया सिकंद्रिया, मिस्र में, जो उसके नाम से जाना जाता था[58]) और कोयनि (साधारण) यूनानी भाषा जिसमें पवित्र शास्त्र के इन दोनों भागों का अनुवाद किया गया है, का श्रेय परोक्ष रूप में सिकन्दर को दिया जा सकता है। केवल काफिर जगत में ही नहीं बल्कि यहूदियों के आराधनालयों में भी फैलने से कोयनी यूनानी भाषा का इस्तेमाल इन सभी देशों में होने लगा जिसने बाद में सुसमाचार के विवरणों तथा नये नियम के अन्य लेखों की मूल भाषा बनना था।

सिकन्दर के निजी शिक्षक के रूप में अरस्तु की भूमिका यूनानी को बढ़ावा देने के लिए शानदार थी। महान दार्शनिक ने "मोनारकी" (राजतन्त्र) और "कॉलोनीज़" (उपनिवेश) शीर्षक से सिकन्दर के नाम दो लेख लिखे। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि मकिदुनिया के लोग बोलते चाहे यूनानी थे, पर वे अधिकतर यूनानी कबीलों की तरह लोकतंत्र के राजनैतिक नियमों से बंधे हुए नहीं थे। वे अपने शासक चुनते थे; परन्तु चुन लिए जाने के बाद वे शासक राजाओं की शक्ति और अधिकार से काम करते थे। फिलिप द्वितीय ने अपने पिता की तरह शासन किया और सिकन्दर ने भी वैसा ही किया। वास्तव में सिकन्दर द्वारा लीबिया के अमोन की पेशनगोई मानने के बाद जहां उसे देवता घोषित किया गया था, वह ऐसा सम्राट बन गया जो मकिदुनिया में न उससे पहले था और न उसके बाद। वास्तव में बहुत से पूर्वी लोगों द्वारा जिन पर उसने विजय पाई उसकी पूजा की जाती थी।

भूमध्य सागर की घाटी के लोगों में से और किसी ने इतनी कालोनियां नहीं बनाई जितनी यूनानियों ने बनाई थीं। आठवीं सदी ई.पू. से लेकर अगले तीन सौ वर्षों तक वे (फ्रांस, इटली, उत्तरी अफ्रीका और एशिया माइनर) के समुद्री इलाकों के आस पास कालोनियां बसाते रहे। उन्होंने इलाके के अधिकतर टापुओं पर भी कालोनियां बसाईं थीं। असल में एक प्राचीन लेखक ने इन तटीय यूनानी निवासियों की तुलना तालाब के आस पास बैठे मेंढकों के साथ की थी।[59] अरस्तु और उसका छात्र सिकन्दर कालोनियों की उपयोगिता और शक्ति से अच्छी तरह परिचित थे। सिकन्दर ने जहां पर भी विजय पाई वहां उसने यह सुनिश्चित किया कि व्यायमशाला, रंगशाला, हाल और परिषद सदन जैसे पारम्पारिक यूनानी संस्थान आवश्यक बनें। फिर यह कलोनियां उस बड़ी सांस्कृतिक और भाषाई प्रक्रिया के उज्जवल बिंदु बन गए जिसे यूनानीकरण कहा जाता है। यह केवल संयोग नहीं है कि इस प्रकार से पूर्व के देशों को उद्धार के मसीहा के संदेश के लिए आगमन के लिए तैयार किया गया था। नये नियम के लेख कोयनि यूनानी में पूरे सभ्य संसार में भेज दिए गए, जैसा कि आज भी वे हमारे पास हैं।

दानिय्येल ने जिस चौथे राज्य की भविष्यवाणी की थी वह रोमी साम्राज्य था। अगस्तुस कैसर के समय तक, जिसके शासनकाल में यीशु का जन्म हुआ "समय के पूरा होने" (4:4) की अन्य महत्वपूर्ण तैयारियां हो चुकी थीं। यूनानियों का अनुकरण करते हुए रोमी वास्तुकला, कविता और साहित्य का आरम्भ हो चुका था। 146 ई.पू. में जब रोमियों ने कुरिन्थुय पर विजय पाई और पूरे नगर को खण्डहर बना दिया, सुन्दर मूर्तिकला के रूप में कला की ऐसी कीमती चीज़ें ही नहीं बल्कि दर्पण भी जिनके लिए यह नगर विख्यात था, अपने समुद्र तट पर ले गए (देखें 1 कुरिन्थियों 13:12)। वे बहुत से गुलामों के साथ-साथ, कुरिन्थुस के कास्य की जो भी प्रसिद्ध चीज थी सब उठा ले गए। यक गुलाम वे लोग थे, जिन्हें वे अपने लड़कों को यूनानी भाषा सिखाने के लिए शिक्षकों केरूप में इस्तेमाल कर सकते थे।[60]

भूमध्य सागर के संसार की बड़ी शक्ति बनने के बाद रोमी साम्राज्य ने केवल रोमी यूनानी के लाभ ही नहीं बल्कि मसीहा के आने के आस पास की परिस्थितियों में बहुत अधिक योगदान दिया। रोम काम करने वालों के बजाय सोचने वालों का देश कहीं कम था। इसका फोकस व्यावहारिक था। इसके गृहयुद्ध खत्म होने और शक्ति औक्टेवियन (जो कैसर अगस्तुस के नाम से अधिक प्रसिद्ध है; देखें लूका 2:1) के हाथों में चले जाने के बाद रोम की सैनिक टुकड़ियों ने भूमध्य सागर और एजियन सागर को समुद्री डाकुओं से छुड़ाया, रोम का नियन्त्रण इन समुद्रों के किनारे किनारे सब देशों तक फैला दिया और शांति का एक लम्बा और चिरस्थाई काल स्थापित किया जिसे पैक्स अगस्टा या अगस्ट शांति के नाम से जाना जाता है। अगस्तुस के शासनकाल के दौरान ही "शांति का राजकुमार" साम्राज्य के तुलनात्मक रूप में एक महत्वहीन कोने में एक छोटे से नगर में जन्मा जो पूर्वी सागर के भूमध्य तट से अधिक दूर नहीं था।

क्या रोम के सुनहरी युग से बढ़कर इस परमेश्वर-मनुष्य और छुड़ाने वाले के आग्रह के लिए मानवीय इतिहास में इससे आदर्श समय कोई और हो सकता था? (1) साम्राज्य के कारोबार समुद्र से हो या व्यापारी जहाज़ों से, थल मार्ग से हो जो उस समय के सुव्यवस्थिति इधर उधर जाने के लिए बड़े अवसर मिले। (2) प्रांतों की भाषाएं और उपभाषाएं चाहे अलग अलग थीं परन्तु साम्राज्य में संवाद के लिए यूनानी भाषा ही आम थी। (3) रोमी नागरिकता उन्हें ही दी जाती थी जो इसे खरीद सकते थे और जिन्हें इसे पाने के लिए परिस्थतियों के आधार पर इसका समर्थन होता था (देखें प्रेरितों 22:27, 28)। (4) पेशियों और अपीलों के सिस्टम वाले रोमी कानून को बढ़ावा दिया जाता था (देखें प्रेरितों 25:11, 12)। (5) रोम में इसके अधीन देशों में स्थानीय संस्कृतियों तथा धर्मों को सहन किया जाता था, आम तौर पर जीते गए लोगों को अपने ही स्थानीय शासकों या यजमान राजाओं के धर्मों की अनुमति या समर्थन किया जाता था। किसी को इस बात का पता नहीं था कि ये सब बातें स्वयं परमेश्वर द्वारा दी जाने वाली आशिषें थीं, जो दाऊद के पुत्र के आने का मंच तैयार कर रहा था।

यीशु के करीबी चेले भी इस अदृश्य, आत्मिक राज्य को समझ नहीं पाए थे। यहूदी लोग बल्कि शास्त्रीय और फरीसी भी जो अपनी मानवीय परम्पराओं के कूड़े में फंसे हुए थे किस प्रकार से इस तथ्य को समझ सकते थे कि "समय का पूरा होना" उन पर आ पहुंचा था। वे यह कैसे समझ सकते थे कि मसीहा के दिन आ गए थे और परमेश्वर का राज्य यीशु नासरी के रूप में उनके बीच में था (लूका 17:21)? वे कैसे कल्पना कर सकते थे कि ये सब परिवर्तन

''प्रभु का मार्ग तैयार करने'' के लिए परमेश्वर के हाथ से किए गए थे (मरकुस 1:3; NIV)?

पुत्र होने की आशिषें (4:6, 7)

मसीह में मसीही व्यक्ति के स्थान की चर्चा करते हुए पौलुस ने ये आश्वस्त करने वाली सच्चाई बताई: ''और तुम जो पुत्र हो, इसलिये परमेवर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो 'हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है,' [तुम्हारे] हृदयों में भेजा है'' (4:6)। उसने आगे कहा कि क्योंकि हम पुत्र हैं इसलिए हम ''परमेश्वर के द्वारा वारिस'' हैं (4:7)।

परमेश्वर ने हमारे लिए स्वर्गीय प्रताप के इलाके के ज्ञान को और उस आनन्द को खोल दिया है जो हमारी किसी भी कल्पना से बाहर हैं। हम बेचारे मिट्टी के नासमझ जीव हैं जिनकी सोच पृथ्वी तक की ही है और इस संसार के थोड़ी देर के आकर्षणों से हमें आकर्षित करने पर रीझ जाते हैं। पवित्र शास्त्र ''स्वर्ग'' की बात करता है, पर इससे भी बढ़कर ''महिमा'' की बात बार बार करता है। ऐसी अवधारणाएं हमारी समझ की क्षमता से बाहर की हैं। इतने असीम रूप में श्रेष्ठ और ऊंचे के हमारे परमेश्वर होने के विचार ही हमारी मानवीय समझ से बहुत परे है। फिर भी परमेश्वर ''ऐसा सामर्थी है, कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य्य करता है'' (इफिसियों 3:20)।

क्या हमें परमेश्वर को समझने के विचारों की इच्छा को त्याग देना चाहिए? बेशक इफिसियों 3:20 में पौलुस यह तो नहीं कह रहा। शायद हमें ईमानदारी से अपने आपको पूछना चाहिए, यह '' 'सामर्थ्य जो हम में कार्य करता है' क्या है?'' उस संदर्भ में पौलुस का विषय आत्मा [पवित्र] का वास और आत्मिक जीवन था जिससे हमें विश्वास के द्वारा संपन्न किया गया है, तो क्या हमें ''सामर्थ्य'' शब्द को बडे अक्षरों में लिखना चाहिए? इफिसियों 3:14-21 में पौलुस ने अपनी प्रार्थना के बारे में बताया कि भाई आत्मा की सामर्थ्य से मज़बूत हों ताकि मसीह के महान प्रेम को समझ सकें और परमेश्वर की परिपूर्णता से भर जाएं। क्या पौलुस परमेश्वर की सामर्थ्य की बात कर रहा था या आत्मा की सामर्थ्य की? फ्रांसिस फोल्कस ने लिखा है, ''यह नये नियम की शिक्षा की निरन्तर मान्यता या विशेष बल है कि मसीही जीवन की सामर्थ्य पवित्र आत्मा के निजी वास से मिलती है।''[61]

बेशक फोल्क का दृष्टिकोण सही है। एक ही अध्याय के संदर्भ में पौलुस ने मसीह के वास में, परमेश्वर के वास और आत्मा के वास की बात की (रोमियों 8)। यह भाषा हमें इसलिए नहीं दी गई कि हम इस बात का विश्लेषण कर सकें कि परमेश्वरत्व का हर सदस्य किसी विशेष परिस्थिति में क्या कर सकता है। पवित्र शास्त्र हमें यह अवश्य बताता है कि तीनों एक हैं, परमेश्वर के गणित के साथ अविश्वासी की समस्या चाहे जो भी हो। केवल इसी तथ्य से हमें आश्चर्य और भय के साथ भर जाना चाहिए। हमें और भी चकित होना चाहिए कि पूरे आत्मिक क्षेत्र के पिता और परमेश्वर ने[62] हमें अपने पापों से छुड़ाने के लिए अपने विलक्षण रूप में अपने प्रिय पुत्र को हमारे लिए दे दिया। फिर उससे भी बढ़कर उसने ''एक और सहायक'' (यूहन्ना 14:16; KJV) केवल हमारे साथ होने के लिए नहीं बल्कि हम में रहने के लिए भी दिया। सहायक हमें आत्मिक विचारों और कामों के लिए प्रेरित करता और हमें इस वर्तमान बुरे संसार में ''देह की क्रियाओं को मारने'' के योग्य बनाता है (रोमियों 8:13)।

हर प्रकार के मानवीय तर्क और दलील के विपरीत पिता, पुत्र और आत्मा सचमुच में एक हैं। उनकी सनातन मंशा एक है: निराशजनक ढंग से पाप में खोए लोगों के संसार को छुड़ाना। किसी प्रकार से हमारे पवित्र परमेश्वर ने हम से प्रेम किया और हमें सबसे बड़ा, उपहार जिसे वह दे सकता था दे दिया। उसने उसका बलिदान दिया जिसकी हम शायद ही कल्पना कर सकते हों कि वह कर सकता है। आइए प्रार्थना करें, "हे परमेश्वर, हमें वह अनुग्रह और दया दे ताकि हम, तेरे विश्वासयोग्य सेवक मूसा की तरह तेरी महिमा देख सकें! हम में कम से कम तेरे पुत्र यीशु, गलील के मसीह का मानवीय रूप में अथाह भेद की एक छोटी सी झलक मिल सके, जिसने अपने आप में तेरे ही असीम प्रेमी मन को दिखाया।"

पुत्र होने के फायदे और विशेष अधिकार पवित्र शास्त्र में सम्मान का बड़ा स्थान रखते हैं। लूका 15 वाले दृष्टांत में उड़ाऊ पुत्र भी इस तथ्य के बावजूद कि उसने मोटे तौर पर अपने आपको बर्बाद कर लिया था और अपने पिता और अपने परिवार को अपमानित किया था, अपने पिता के घर वापस आने पर खुली बाहों से उसका स्वागत किया गया था। उसे आदर के वस्त्र पहनाए गए थे, इसलिए नहीं कि उसने इतने शर्मनाक ढंग से काम किया था बल्कि उसके कामों के बावजूद इसलिए क्योंकि वह एक पुत्र था। हमें इस तथ्य से परेशान होना चाहिए कि मनुष्य जाति के भ्रष्ट सदस्यों के रूप में हमें सारी सृष्टि के परमेश्वर के परिवार में स्वीकार किया गया और ले लिया गया है। उसने अथाह अनुग्रह के कार्य के द्वारा हमें गोद ले लिया है–अपने "इकलौते और निराले पुत्र [*monogenēs*] के क्रूस पर चढ़ाए जाने के द्वारा" (यूहन्ना 1:18; 3:16; CJB)।

मानवीय जीवों के रूप में हम केवल एक छोटी सी झलक ही पकड़ सकते हैं, उस ईश्वरीय प्रेम की जिसमें पिता को ऐसा भयानक बलिदान हमारी खातिर देना पड़ा। इस बड़े प्रेम की हमारी सीमित समझ के साथ भी यह कैसे हो सकता है कि हम इससे मोहित न हों? ऐसे प्रेम के लिए हमें ऐसे सर्वशक्तिशाली और संसार के सब लोगों के लिए जिनके लिए उस प्रिय पुत्र ने अपना प्राण न्यौछावर कर दिया, प्रेम भरे, आभारी, समर्पित सेवा के लिए अपनी पूरी क्षमता से भर जाना चाहिए।

आज के समय की मूर्तिपूजा (4:8)

इक्कसवीं सदी में रहने वाले लोग लकड़ी या पत्थर की बनी मूर्तियों के आगे झुकने या उनकी पूजा करने की परीक्षा से मुक्त हो सकते हैं। परन्तु प्राचीन जगत यानी यूनानी संसार में जिसमें संसार के सबसे गम्भीर चिंतक पैदा हुए, मूर्तिपूजा एक लत थी।

यूनानियों ने भी जो मसीह से सदियों पहले रहते थे कभी यह नहीं माना था कि उनके देवताओं की मूर्तियां असल में देवता हैं, न ही वे यह मानते थे कि उनके "असल" देवता ओलंपिस पर्वत की बर्फीली ऊंचाइयों पर रहा करते थे। बल्कि यह मूर्तियां उनके लिए उन देवताओं को दर्शाने के लिए थीं जो उनकी मान्यता के अनुसार किसी और आयाम में रहते थे जो "स्वर्ग" अर्थात स्वर्गीय क्षेत्र की हमारी अवधारणा जैसा है। इस प्रकार से ये मूर्तियां उन मूर्तियों से अधिक अलग नहीं थीं जो आज के हमारे समय में कुछ कैथेड्रलों (गिर्जाघरों) में पाई जाती है। कुछ मूर्तियों को रिवाज के अनुसार तेल से अभिषिक्त किया जाता है, उनके पांवों को चूमा जाता है और कई मूर्तियों को बीच बीच में सुन्दर वस्त्र पहनाए जाते हैं।

मूर्तिपूजा के विरुद्ध मामला मनुष्य के विश्वास या उसकी श्रद्धा की गलत बातों या आधारों पर आधारित है, वह चाहे भौतिक हो या आत्मिक। परमेश्वर को छोड़ किसी से भी प्रेम करना और उस पर भरोसा रखना उससे वह छीन लेना है जो केवल उसी का है। मूर्तिपूजा का सार यही है।

उदाहरण के लिए प्राचीन यूनानियों का मानना था कि आकाशीय पिंड (सूर्य, चांद, और ग्रह[63]) में स्थिर तारों के चित्रपट के आगे पीछे "घूमने" की शक्ति है और उनका मनुष्यों की किस्मत पर भी अधिकार है। हमारे लिए चाहे यह बात बेतुकी लग सकती है पर आज बहुत से लोग समाचार पत्रों में राशीफल देखते और इंटरनेट पर भविष्य की घटनाओं से जुड़ी अच्छी या बुरी होने वाली बातों के चिह्न ढूंढ़ते हैं। क्या वे उन पुराने यूनानियों से जो यीशु के जन्म से सदियों पहले रहा करते थे किसी प्रकार कम मूर्तिपूजक हैं?

परमेश्वर ने आकाशीय पिंडों की पूजा के विरोध में अपने लोगों इस्राएलियों को केवल चेतावनी ही नहीं दी बल्कि उसने आज्ञा भी दी कि इसका उल्लंघन करने वालों को पथराव करके मार डाला जाए (व्यवस्थाविवरण 4:19; 17:1-5)। बाद में इस्राएल में जब विश्वासत्याग या बेदीनी इतनी बढ़ गई कि व्यवस्था की पुस्तक ही खो गई और कई साल तक लोग उसे भूल गए तो युवा राजा योसियाह ने इसके मिलने पर यहूदा में एक राष्ट्रीय सुधार लाया। उसने यह जरूरी समझा कि मन्दिर को केवल मूर्तिपूजक याजकों से बल्कि "जो बाल और सूर्य चंद्रमा, राशीचक्र और आकाश के सारे गणों को धूप जलाते थे उनको भी" दूर कर दिया (2 राजाओं 23:5)।

पौलुस ने स्पष्ट कहा कि मूर्तिपूजक लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं होंगे (1 कुरिन्थियों 6:9, 10)। उसने कलीसिया को मूर्तिपूजा करने वालों की संगति से निकल आने की आज्ञा भी दी (1 कुरिन्थियों 5:10, 11)। क्या हम उसकी बात को गम्भीरतापूर्वक लेते हैं कि "लोभ" या "लालच" (*pleonexia*[64]) मूर्तिपूजा के बराबर ही है (इफिसियों 5:5; कुलुस्सियों 3:5)? क्या हम उसकी इस मांग पर ध्यान देते हैं कि इन पापों से मन न फिराने वालों को पवित्र लोगों की संगति से इनकार किया जाए (1 कुरिन्थियों 5:11)? आम तौर पर कलीसियाएं परमेश्वर की इस आज्ञा को अनदेखा कर देती हैं, परन्तु यह परमेश्वर की आज्ञा ही रहती है। इसके अलावा पौलुस ने उन लोगों की बात की जिनका "ईश्वर पेट है" (फिलिप्पियों 3:19; देखें रोमियों 16:18) और जो "परमेश्वर के नहीं वरण सुखविलास के ही चाहने वाले हैं" (2 तीमुथियुस 3:4)। रोमियों 1:25 में अन्यजातियों में व्याप्त पापों की बात करते हुए उसने मूर्तिपूजकों का वर्णन उन लोगों के रूप में किया जिन्होंने "परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला, और सृष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है।"

इन वचनों के अनुसार *परमेश्वर के मन में हमारे लगाव या हमारे भरोसे के रूप में उसका कोई भी विकल्प मूर्तिपूजा ही है*। कुछ बातों में हमारी उपासना की अभौतिक वस्तुएं इससे भी खतरनाक हैं क्योंकि उन्हें ऐसा देखा नहीं जाता। इस आशा में कि वे किसी प्रकार से हमारी परेशानियों में हमारी सहायता कर सकती हैं या आशीष दिला सकती हैं, "गूंगी मूर्तियों" के सामने झुकने की मूर्खता को नहीं दिखातीं (देखें यशायाह 44)। हमें लगता है कि हम इतने समझदार हैं कि ये पुरानी मूर्तियां हमें बहका नहीं सकती; परन्तु शैतान किसी प्रकार से धोखे की अपनी कला

के साथ हम से बहुत आगे रहता है और उसे मालूम है कि हमारी सबसे बड़ी कमज़ोरी क्या है और अपने अगन बान कहां छोड़ने हैं।

समृद्ध लोगों के लिए आधुनिक मनुष्य की सब मूर्तियों में सबसे तेज और खतरनाक लोभ है, जो आम तौर पर "सफलता" के रूप में छलता है। कुलुस्सियों 3:5 वाली बुराइयों की सूची में "लोभ" या "लालच" (KJV) यूनानी धर्मशास्त्र में केवल *pleonexia* ही है जिसके पहले निश्चित उपपद ("the") है। अंग्रेजी के संस्करणों में चाहे यह नहीं मिलता पर मूल भाषा में इसका विशेष व्याकरणीय महत्व है; इसका अर्थ कुछ इस प्रकार है "और वह सब से बड़ी बुराई, लोभ।"[65]

जीवन में हमारी स्थिति चाहे जो हो, "परन्तु एक बात आवश्यक है" (लूका 10:42)। आइए हम सबसे ऊपर परमेश्वर और उसके वचन को ही रखें।

व्यक्तिगत अनुभव से प्रचार करना (4:12-15)

गलातियों को लिखते हुए पौलुस ने उनके साथ हुए अपने अनुभवों की ओर ध्यान दिलाया। इन अन्यजातियों को सुसमाचार सुनाते हुए व्यक्तिगत कठिनाई के बावजूद वह उनके साथ घुल मिल गया था। उन्होंने उसका गर्मजोशी से स्वागत किया था और उसके अच्छे मित्र बन गए थे (4:12-15)। मसीह के साथ उनके पूर्ण समर्पण को बहाल करने के प्रयास में पौलुस ने इन आम अनुभवों का इस्तेमाल किया।

एक बार सरमन के बाद मैं हैरान था कि मुझे सुसमाचार के प्रचार में अपने जीवन के व्यक्तिगत अनुभवों को शामिल नहीं करना चाहिए क्योंकि निजी कहानियों के लिए "वचन का प्रचार करने" में कोई जगह नहीं है। मानता हूं कि उस समय मैं चकित था। परन्तु बाद में मुझे इस बात की समझ आई कि अपनी निजी गवाही देने से प्रभावशाली ढंग से बताया जा सकता है कि सुसमाचार ने हमारे जीवन को कैसे प्रभावित किया है। अपने सुनने वालों को यह बताने के लिए हो कि उसका दिमाग ही नहीं बल्कि दिल भी यह कह रहा है, तो हम अपने जीवन में परमेश्वर की सामर्थ्य की गवाही दे रहे हो सकते हैं। किसी वक्ता या लेखक में भावना का होना अच्छी बात है यदि वह उस वचन के प्रभाव से निकली हो जिसे वह अपने सुनने वालों को प्रभावित करने के प्रयास में ही नहीं बल्कि स्वयं निभा रहा हो। इस वचन में पौलुस की भावना में निश्चय ही उसका संदेश शामिल था।

चंचलता (4:15)

पौलुस ने गलातियों से पूछा, "तो वह तुम्हारा आनन्द मनाना कहां गया?" (4:15क)। इस प्रश्न से उनके व्यवहार के पूरी तरह से बदल जाने का पता चलता है, जो यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के कपट के कारण हुआ था। क्या हम कह सकते हैं कि यह स्पष्ट मनमौजीपन गलातियों की विशेषता है? नहीं, यीशु के समय के यहूदियों में ऐसा ही अचानक पूर्ण परिवर्तन हुआ था। एक पल वे यरूशलेम में उसके विजयी प्रवेश के दौरान आनन्दपूर्वक उस राजा के लिए जश्न मना रहे थे "जो प्रभु के नाम से [आया]" और एक हफ्ते से भी कम समय के बाद वह चिल्ला रहे थे, "वह क्रूस पर चढ़ाया जाए!" (मत्ती 21:9; 27:22, 23)।

ऐसी ही चंचलता बीज बोने वाले के दृष्टांत में दिखाई देती है (मत्ती 13:5, 6, 20, 21)। हम इन प्रवृतियों को आज देखते हैं जब सतही, आवेगशील लोग मसीह को मान तो लेते हैं पर फिर उसके पीछे चलने से मुंह फेर लेते हैं। हम क्या करते हैं? क्या हम में से कोई प्रभु के साथ अपने सम्बन्धों में अलग होने का दावा कर सकता है? हम कितनी बार अपने "पहले प्रेम" से तंग पड़ जाते हैं? एक बार फिर से जो वह सचमुच में है और जितना वह हमारे लिए सचमुच में होना चाहिए उसे मानते हुए क्या हम उसके साथ पहली जोशपूर्ण मुलाकात को फिर से पाने के लिए तड़पते हैं? इस इच्छा को "ओ फॉर ए क्लोज़र वाक विद ए गॉड" भजन की पंक्तियों में दिखाया गया है:

वह आनन्द जिसे मैं जानता था कहां है
जब मैंने देखा पहली बार प्रभु को?
वह मन को शांति देने वाला विचार कहां है
यीशु और उसके वचन का?[66]

इस गीत से हमारे दिमाग में हलचल मच जानी चाहिए और हमें आशीषित भावना के उस आरम्भिक शिखर को फिर से जगाने का तरीका ढूंढ़ना चाहिए। क्या हम उस आत्मिक आनन्द को जो हमें पहली बार प्रभु को जानने पर मिला था, जब उसने हमें एक ऐसे जहाज़ पर चढ़ा दिया था जिसकी हमने कभी कल्पना नहीं की थी, पकड़े रखना नहीं चाहते? नया जन्म पाए हुए और जीवन के भौतिक जहाज से पार आकर परमेश्वर के पवित्र आत्मा के जहाज़ पर आने वाले सब लोगों के साथ ऐसा ही होना चाहिए। परन्तु यह बदलाव उनके लिए जिनका पालन पोषण मूर्तिपूजा की आवारा और बेकायदा जीवन शैली में हुआ है और भी नाटकीय होना आवश्यक है।

पौलुस के लिए चौकाने वाली बात यह थी कि मसीही लोगों के रूप में शुरू में ही कोई कैसे अपनी पुरानी मूर्तिपूजा या व्यवस्था की गुलामी की "निर्बल और निकम्मी आदि शिक्षा की बातों की ओर" मुड़ने की बात सोच सकता है (4:9)। वह पूछ रहा था कि "तुम यह कैसे कर सकते हो? तुम्हारी हिम्मत कैसे पड़ी! तुम इतने मूर्ख कैसे हो सकते हो?"

जोशीला प्रचार (4:19)

1. क्या प्रचार में भावना का इस्तेमाल किया जाना चाहिए? "भावना" के लिए अंग्रेज़ी शब्द "emotion" का सम्बन्ध "motion," "motivation," "motive," और "motor" जैसे शब्दों से है। लोगों को निर्णय लेने और उन पर अमल करने के लिए यह उक्साता है। इसे कई प्रकार से पूरा किया जा सकता है: जोरदार तर्क से, समझाने से; पाप का दोष लगाकर, विवेक की ओर ध्यान दिलाकर; डराकर, गलत कार्य के परिणाम दिखाकर;[67] और शर्म को उभार कर, आभार, प्रेम और आशा की भावनाएं जगाकर। लोगों को खतरे के बीच साहस दिखाने, परेशानियों और तकलीफ़ सहन करने, बड़ी-बड़ी रुकावटों को पार करने, पाप का विरोध करने, धार्मिकता के काम को बढ़ाने की धुन होना या किसी को आलस या सुस्ती से निकालने के लिए भावना ही काम करती है।

भावी सुसमाचार प्रचारक जिसे लगता है कि मसीह की शिक्षा को बांटने के लिए इस बात से

अनजान कि उसके सुनने वाले उसमें क्या देखते और क्या सुनते हैं, लोगों को केवल सुसमाचार के तथ्य बताना ही काफ़ी नहीं होगा, अपने मिशन में नाकाम ही होने वाला है। किसी बंजर, सुसमाचार संदेश की रूखी, नीरस (चाहे तथ्यात्मक हो) प्रस्तुति में जानकारी का खजाना देना जिससे कोई काम करने के लिए आगे न बढ़े, बिल्कुल हो सकता है। यदि बोलने वाला जो प्रचार कर रहा है उससे थोड़ा या बिल्कुल प्रभावित न हो तो मुश्किल है कि उसके सुनने वाले उससे बढ़कर प्रभावित होंगे।

ग्रेजुएट वर्क के दौरान मेरी पहचान एक होनहार युवक से हुई जो अपनी क्लास में अव्वल आता था या अव्वल आने के करीब होता था। ग्रेजुएशन के बाद वह "सेवकाई में आ गया" और कई बड़ी बड़ी कलीसियाओं में प्रचार करने लगा। उसके संदेशों में योजना, सामग्री, तर्क या वचन के प्रति वफ़ादारी के बारे में कोई कमी नहीं होती। वे बुलंद आवाज़ में बिना नोट्स के दिए जाते। उनमें केवल एक बात जिसकी कमी लगती थी वह दृढ़ विश्वास था। किसी प्रकार से यह गिफ्टड व्यक्ति बिना ज़रा सा भी यह प्रमाण दिए कि जो कुछ वह कह रहा है उससे खुद प्रभावित है बड़े अच्छे अच्छे और बड़े महत्वपूर्ण सबक दिया करता था! अपनी इतनी खूबियों के बावजूद सुसमाचार के सेवक के रूप में अनुपयुक्त था।

दूसरी ओर भावना का इस्तेमाल केवल भावना के लिए करना बेइमानी और धोखा है। इससे चाहे कई तरीकों से लोगों को भावुक किया जा सकता है पर भावुकता केवल उन लोगों को प्रभावित करने की कार्यप्रणाली ही है। ऐसे प्रयास का स्रोत और असर क्या हो सकता है? क्या प्रभावित सुनने वाला अपने आपको मसीह से बांध लेगा या वह बोलने वाले का चेला बन सकता है जिसने उसे अपनी भावनाओं में फंसा लिया? यदि भावना मानवीय है और इसका इस्तेमाल केवल किसी लक्ष्य की प्राप्ति के ढंग के रूप में किया जाता है तो वह प्राप्ति चाहे जो भी हो वह केवल मनुष्य का काम ही हो सकता है।

यदि बोलने वाले के द्वारा दिखाई गई भावना से परमेश्वर के वचन के अध्ययन का उसका समावेशन और मनन से जगाया गया है तो इसका प्रभाव अलग हो सकता है। यदि वह उसके अपने जीवन के लिए और उसके सुनने वालों के जीवनों के लिए सुसमाचार के संदेश के अर्थ के द्वारा भावुक किया गया है तो प्रचार करने में उसके जनून का स्रोत परमेश्वर के वचन के द्वारा परमेश्वर के आत्मा का कार्य है। यह केवल मनुष्य का काम नहीं बल्कि परमेश्वर का काम होगा।

अपने "छोटे बच्चों" (4:19; ESV) को विनती करते हुए पौलुस के दर्द भरे और व्याकुल शब्दों में हम ऐसी ही भावना को देख और महसूस कर सकते हैं। न केवल अपने से बल्कि मसीह से भी दूर होती अपनी प्रिय आत्मिक संतान को देखकर वह कैसे परेशान नहीं हुआ होगा? ऐसे विश्वास त्याग से अंत में उन्होंने खो ही जाना था, जब तक वह उन्हें फिर से मन फिराने के लिए न मना लेता। पौलुस को अपने में मसीह के आत्मा की झलक को छोड़ इतना परेशान और कौन सी बात कर रही होगी।

2. मसीह ने कैसी भावनाएं दिखाईं? आइए मसीह की भावनाओं पर विचार करते हैं। मूल यूनानी में कुछ अभिव्यक्तियां उस व्यक्ति के लिए जिसने इस विषय पर थोड़ा या कोई विचार न किया हो, हैरान कर देने वाली हो सकती हैं। यह भावनाएं उल्लास से लेकर क्रोध और गहरे दुख में दिखाई देती हैं।

आनन्द। "वह पवित्र आत्मा में होकर आनन्द से भर गया" (लूका 10:21)। "आनन्द से भर गया" के लिए यूनानी शब्द (*agalliaō*) का अर्थ है "अति आनन्दित होना, हर्षित, प्रसन्न होना, उल्लसित होना।"[68] यह आनन्द के एक दर्जे का सुझाव देता है जो केवल परमेश्वर की ओर से हो सकता है।

रोष। जब यीशु के चेलों ने उन माताओं को जो अपने बच्चों को उसके पास लाने की कोशिश कर रही थीं, डांटा तो, "यीशु ने क्रुद्ध होकर उनसे कहा, 'बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है' " (मरकुस 10:14)। *Aganakteō* (अगेनेक्टिओ) शब्द का अर्थ है "क्रोधित होना," "भड़कना," या "नाराज होना।"

क्रोध। लाज़र के मरने के बाद, "जब यीशु ने [मरियम] को और उन यहूदियों को जो उसके साथ आए थे, रोते हुए देखा, तो आत्मा में बहुत ही उदास और व्याकुल हुआ" (यूहन्ना 11:33)। "बहुत ही उदास" (*embrimaomai*) शब्द से लिया गया है। "बाइबल से बाहरी यूनानी में इसका अर्थ घोड़ों का फुफकारना हो सकता है; मनुष्यों पर लागू किए जाने पर यह हमेशा क्रोध, गुस्से या भावनात्मक आक्रोश का सुझाव देता है।" मरियम और मारथा तथा अन्य शोक करने वालों से "बहुत ही उदास" होने के बजाय यीशु "पाप में गिरे इस संसार में पाप, बीमारी और मृत्यु" या शोक करने वालों के अविश्वास और निराशा से क्रोधित हुआ होगा।[69]

नाराजगी और दुख। सूखे हाथ वाले आदमी को चंगा करने से पहले यीशु ने "[फरीसियों] के मन की कठोरता से उदास होकर, उनको क्रोध से चारों ओर देखा" (मरकुस 3:5)। इस आयत में (*orgē*, "क्रोध" या "नाराजगी") और (*sullupeō*, "बहुत उदास होना" या "सहानुभूति करना") दोनों शब्द हैं, "क्रोध" के लिए सामान्य शब्द (*lupeō*) है परन्तु इस शब्द को गहरा अर्थ देते हुए पूर्व सर्ग *sun* है जो समावेशन से *sul* में बदल गया है। क्रिया का संकेतार्थक "बहुत उदास" हो जाता है जो बहुत मज़बूत भावना को दिखाता है।

विलाप। "जब [यीशु] निकट आया तो यरूशलेम को देखकर रोया" (लूका 19:41)। क्रिया शब्द (*klaiō*) का अर्थ है "रोना," "विलाप," या "चिल्लाना।" इसी प्रकार से बाइबल की सबसे छोटी आयत में हम पढ़ते हैं कि लाज़र की कब्र पर "यीशु रोया" (यूहन्ना 11:35)। यहां एक और क्रिया शब्द (*dakruō*) का इस्तेमाल हुआ है; वास्तव में यह अनिश्चित भूतकाल में मिलता है और इसका बढ़िया अनुवाद "फूट फूट कर रोना" है।[70] दोनों में से पहले शब्द में जहां सुनाई देने वाला दुख मिलता है वहीं दूसरा शब्द आंसुओं पर ज़ोर देता है। यह दोनों अभिव्यक्तियां मज़बूत भावना हैं।

तरस। "जब उसने भीड़ को देखा तो उस को लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों के समान जिनका कोई रखवाला न हो, व्याकुल और भटके हुए से थे" (मत्ती 9:36)। "तरस आया" यूनानी क्रिया शब्द (*splanchnizomai*) से लिया गया है जिसका अर्थ है, "दया करो।" सम्बन्धित संज्ञा शब्द (*splanchnon*), पूरे पवित्र शास्त्र में भावना या भावनाओं के लिए सबसे रंगीन अभिव्यक्तियों में से एक है। KJV में इसका अनुवाद आम तौर पर "अंतड़ियां" हुआ है जिन्हें लगाव, सहानुभूति और तरस जैसी मज़बूत भावनाओं का केन्द्र माना जाता था (देखें फिलिप्पियों 1:8; कुलुस्सियों 3:12; KJV)।

प्रेम, घृणा, और अन्य कई भावनाएं। अन्य कई शब्दों को जो यीशु की भावनाओं का वर्णन

करते हुए जोड़ा जा सकता है। उसे मालूम था कि "घृणा" के साथ साथ "प्रेम" का क्या अर्थ है। पुराने नियम से लेते हुए इब्रानियों के लेखक ने मसीह के लिए कहा, "तू ने धर्म से प्रेम और अधर्म से बैर रखा" (इब्रानियों 1:9क)।[7][1] यीशु ने आश्चर्य और निराशा जैसी भावनाओं को भी अनुभव किया, सहा (देखें मत्ती 8:10; 26:37)। वास्तव में जब हम क्रूस पर उसके अंतिम पलों के उन भयानक शब्दों को सुनते हैं, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?" (मत्ती 27:46), तो हमें यह मानना पड़ेगा कि उसे निराशा का भी पता था।

पौलुस ने यीशु के मन पर विचार किया और हमें भी ऐसा ही करना चाहिए। पौलुस ने अपनी आत्मिक संतान गलातियों के ठुकराने और पाप के कारण गहरे दुख और आश्चर्य का अनुभव किया। इस प्रकार से वह यीशु की तरह काम कर रहा था जो उनकी खातिर जिन्हें वह बचाने के लिए आया था दुख सहने को तैयार था। यीशु के चेलों के रूप में हम में भी मसीह का "स्वभाव" होना आवश्यक है (फिलिप्पियों 2:5)।

इन अवलोकनों से हम देख सकते हैं कि हमारे वह सब बनने में जो परमेश्वर ने हमारे लिए बनना ठहराया है, भावनाएं एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। यीशु का भीतरी स्वभाव केवल हमारे कामों से ही नहीं बल्कि हमारे व्यवहार में भी दिखाई देना आवश्यक है। तब हमारे मन यीशु के मन जैसे हो जाएंगे।

वाचाओं में अंतर करना (4:31)

4:22-31 में अपने रूपक को समाप्त करते हुए, पौलुस ने कहा, "इसलिये हे भाइयो, हम दासी के नहीं परन्तु स्वतन्त्र स्त्री की सन्तान हैं" (4:31)। वह इस बात पर जोर दे रहा था कि मसीही लोग व्यवस्था की दासता में नहीं हैं बल्कि मसीह में स्वतन्त्र हैं। हम पुरानी वाचा के अधीन नहीं हैं बल्कि नई वाचा में साझीदार हैं।

बाइबल के सम्बन्ध में उलझन और नासमझी का एक बड़ा कारण इसकी दोनों वाचाओं में अंतर न समझ पाना है। ऐसा नहीं होना चाहिए, क्योंकि पवित्र शास्त्र में इन दोनों अवधारणाओं को बड़ी मज़बूती से स्पष्ट किया गया है। पुरानी वाचा को यीशु मसीह के सिद्ध बलिदान के द्वारा पूरा कर दिया गया है। उसने अपने ही लहू के द्वारा स्थिर की गई एक नई और उत्तम वाचा बांधी है (इब्रानियों 8—10)। जो लोग पवित्र शास्त्र को सही ढंग से समझना और लागू करना चाहते हैं उनके लिए इस नियम की सही समझ होना आवश्यक है।

टिप्पणियां

[1]इस यूनानी शब्द का अनुवाद आम तौर पर "प्रभु" (lord या Lord) किया जाता है। यह आम तौर पर प्रभु यीशु के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द है। [2]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* तीसरा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 2000), 385. "मुखतार" के लिए "प्रोक्युरेटर" शब्द प्रांत के मुख्य शासक के लिए इस्तेमाल किए जाने वाली पदवी थी। पहली सदी के मध्य में इसकी जगह "प्रिफैक्ट" शब्द ने ले ली। [3]वहीं पर। [4]आकाशीय पिंडों की आम तौर पर पूजा की जाती थी, मूर्तिपूजा का एक रूप जिससे इस्राएली भी बचे नहीं थे (2 राजाओं 21:3; 23:4, 5)। [5]बाउर, 946; हेनरी जॉर्ज लिडेल एंड राबर्ट स्कॉट, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन,* नौवां संस्क., अतिरिक्त परिशिष्ट के साथ संशो. हेनरी स्टुअर्ट जोन्स एंड रॉडरिक मकैनजी (ऑक्सफोर्ड: कलेरडन प्रैस, 1968),

1647. [6]*Stoicheia* का इस्तेमाल मसीहियत के "बुनियादी नियमों" के लिए इब्रानियों 5:12 में भी किया गया है (NASB)। [7]इस वाक्यांश को चाहे आम तौर पर नीकया का विश्वास वचन (नाइसीन क्रीड, 325 ई. से लिया बताया जाता है), उस में केवल "यथार्थ [सच्चा] परमेश्वर का [यर्थात] सच्चा परमेश्वर" जोड़ा गया था। "यथार्थ मनुष्य" शब्द कलीसिया के "धर्म की उन्तालीस बातें" में रोमन कैथोलिक प्रस्ताव से लिए गए हैं। आर्टिकल II (3) कहता है कि "परमेश्वरत्व और मनुष्यत्व एक ही व्यक्ति में मिल गए थे, . . . मसीह, यथार्थ परमेश्वर और यथार्थ मनुष्य" (थॉमस, रोजर्स, *द कैथोलिक डॉक्ट्रिन ऑफ द चर्च ऑफ इंग्लैंड,* संपा., जे. जे. एस. पेरोन [कैंब्रिज: यूनिवर्सिटी प्रैस, 1854], 46)। [8]एफ. एफ. ब्रूस, *द एपिस्टल टू द गलेशियंस,* द इंटरनैशनल ग्रीक टैस्टामेंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 196. [9]देखें भजन संहिता 22:1-22; 69:21; यशायाह 53:1-12; जकर्याह 12:10; लूका 24:25-27, 44-47. [10]बाउर, 475.

[11]बेन विद्रिंग्टन III, *ग्रेस इन गलेशिया: ए कमैंट्री ऑन सेंट पॉल टू द गलेशियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1998), 288. [12]देखें प्रेरितों 1:5-8; 2:16, 17, 32, 33; 10:44, 45; 11:15-17. [13]मसीही व्यक्ति परमेश्वर की संतान है और उसे पापों की क्षमा के द्वारा पहले ही छुटकारा (*apolutrōsis*) मिल चुका है (इफिसियों 1:7)। परन्तु अपनी देह के छुटकारे की राह वह अभी भी देखता है (रोमियों 8:23); यानी इस पर पीड़ा, रोग, बीमारी और मृत्यु आ सकती है। वह उस महिमायुक्त, अनश्वर और आत्मिक देह की आशा करता है जो परमेश्वर ने अपनी संतान के लिए तैयार की है। उस देह पर ऐसे दुख नहीं आएंगे, बल्कि पुनरुत्थान के जीवन के लिए वह पूरी तरह से उपयुक्त होगी (1 कुरिन्थियों 15:42-54; फिलिप्पियों 3:20, 21; 1 यूहन्ना 3:2)। [14]एफ. एफ. ब्रूस, *रोमन्स,* द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमेंट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1985), 164. जॉन बैरिज (1716-1793) की कविता की यह पंक्तियां रिचर्ड विटिंगम, *द वर्क्स ऑफ द रेव.* जॉन बैरिज (लंदन: सिम्पकिन, मार्शल, एंड कं., 1838), 43 में मिलती हैं। [15]आत्मा के युग को लाने के लिए परमेश्वर ने इस्राएल के इतिहास के अंदर काम किया। यीशु ने कुएं पर सामरी स्त्री को बताया, "उद्धार यहूदियों में से है" (यूहन्ना 4:22)। मसीह और सुसमाचार के आगमन का पूरा नाटक इसमें प्रारम्भ करने के परमेश्वर के माध्यम के रूप में मुख्यतया इस्राएल पर केन्द्रित है (देखें रोमियों 9:1-5)। [16]ऐसा हर मामले में नहीं होता था। प्राचीन इस्राएल में, प्रावधान दिए जाते थे ताकि गुलाम गुलाम रहना चुन सके चाहे उसके पास स्वतन्त्र होने के विशेष अधिकार होते थे (निर्गमन 21:1-6)। [17]"दासत्व मुक्ति" का अर्थ "दासत्व से छुटकारा" है। इस प्रकार के समारोह में दास यानी गुलाम को बेचे जाने या किसी देवता को अर्पित कहा जाता, जिसके बाद उसे उस स्वामी से मुक्त माना जाता या उस देवता का दास माना जाता। [18]नये नियम के "चिट्ठियां डालने" के उपयोग में पारस्परिक सम्बन्ध है। "चिट्ठी डालने" के लिए यूनानी शब्द (*klēros*) का सम्बन्ध 4:7 में अनुवाद हुए "वारिस" के रूप में यूनानी शब्द *klēronomos* से है। [19]हमें ऐसे अलग-अलग कथनों से अधिक परेशान होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे उन दस्तावेजों में से हैं जिन्हें सदियों से हज़ारों शास्त्रियों द्वारा हाथ से नकल किया गया है। असल में इतनी संख्या में इन दस्तावेज़ों का होना (अकेले यूनानी हस्तलिपियां ही तीन हज़ार के आस पास हैं, अन्य भाषाओं में तो हज़ारों की संख्या में) विद्वानों को नये नियम के धर्मशास्त्र को विकसित करने और इसके विज्ञान को चमकाने के लिए यहां तक आलोचना करने के योग्य बनाया है और उन पठनों की सापेक्षित आयु और शुद्धता मूल पाण्डुलिपियों से बिल्कुल मेल खाती हैं। (इस विशेष वचन के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए प्राचीन शास्त्रियों से मेल खाती एक दिलचस्प बात NASB के कुछ मुद्रणों में मार्जन नोट में देखी जा सकती है जिसमें "परमेश्वर के द्वारा" की व्याख्या "परमेश्वर के अनुग्रहकारी कार्य के द्वारा" की गई है। यह अनुवाद चाहे शाब्दिक नहीं है पर निश्चय ही इसमें उस विचार की समझ मिलती है जो पौलुस कह रहा था।) [20]कुछ संदर्भों में, "जानना" (*ginōskō*) शारीरिक सम्बन्धों के लिए कोमल भाषा के रूप में कार्य करता है (मत्ती 1:25; लूका 1:34; देखें KJV)।

[21]देखें प्रेरितों 11:1-3, 17, 18; 1 पतरस 2:10. [22]रॉबर्ट लोअरी, "नथिंग बट द ब्लड," *सौंग्स ऑफ फेथ एंड प्रेज़,* संक. व सम्प. अल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)। [23]बाउर, 558. [24]देखें 3:4; 1 कुरिन्थियों 15:2, 58; फिलिप्पियों 2:16; 1 थिस्सलुनिकियों 2:1; 3:5. [25]देखें 1 कुरिन्थियों 4:16, 17; 11:1, 2; फिलिप्पियों 1:29, 30; 3:17, 18; इब्रानियों 13:7. [26]आर. एलन कोल, *द एपिस्टल ऑफ पॉल टू द गलेशियंस,* द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमेंट्रीज (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1965), 120. [27]ब्रूस, *गलेशियंस,* 208. [28]जे. बी. लाइटफुट, *द एपिस्टल ऑफ सेंट पॉल टू द गलेशियंस,*

क्लासिक कमेंट्री लाइब्रेरी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 174. [29]विलियम एम. रैमसे, *सेंट पॉल द ट्रैवलर एंड द रोमन सिटिजन,* न्यू एडि. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1982), 92-97. [30]कैनथ एल. बोल्स, *गलेशियंस एंड इफिसियंज़,* द NIV प्रैस कॉलेज कमैंट्री (जॉप्लिन, मिजोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1993), 110.

[31]क्रिया रूप (*peirazō*) का इस्तेमाल प्रभु के जंगल में ले जाए जाने के लिए किया जाता है "ताकि इब्लीस से उसकी परीक्षा हो" (मत्ती 4:1)। [32]बाउर, 309. [33]लुसियन *फ्रैंडशिप* 40-41. [34]रॉबर्ट एल. जॉनसन, द *लैटर ऑफ़ पॉल टू द गलेशियंस,* द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1969), 120. 4:17 के सम्बन्ध में, लाइटफुट ने लिखा, "उनकी इच्छा तुम्हें *मसीह से* निकाल देने की है। उन्हें इस प्रकार तुम्हें उसकी चापलूसी करने के लिए निकाला जाएगा" (लाइटफुट, 176)। "निकालने" या "चापलूसी करने" का विचार तो इसमें बेशक है पर लाइटफुट की व्याख्या गलत लगती है। यहूदी मत की शिक्षा देने वालों का लक्ष्य गलातियों को मसीह को नकारकर अपने गैर मसीही चेले बनने के लिए प्रेरित करना नहीं था। गलातिया के लोग चाहे भोले हो सकते हैं परन्तु उन्होंने प्रभु को नहीं नकारना था। आखिर उन्हें नया जन्म मिला हुआ था। इसके अलावा यहूदी मत की शिक्षा देने वाले स्वयं भी मसीही थे। यह सम्भावना कम है कि यह भाषा कई आरम्भिक यहूदी मसीहियों के बीच पाए जाने वाले सामान्य व्यवहार को दर्शाती है (प्रेरितों 15:1-6; 2 कुरिन्थियों 11:13-15, 22, 23; गलातियों 6:12, 13)। [35]*Zēloō* शब्द के यूनानी उपयोग का अर्थ था "उत्तेजित किया" और किसी दूसरे के लिए व्यक्तिगत प्रशंसा महसूस किए जाने के लिए हो सकता है। इससे आम तौर पर उस व्यक्ति की सरगर्मी से नकल करना हो सकता है। [36]1:11; 3:15; 4:12, 28, 31; 5:11, 13; 6:1, 18 में गलातियों को "भाई" कहा गया है। [37]पौलुस ने अपने पत्रों में "बालको" (*tekna*) शब्द का इस्तेमाल किया जो 4:19 वाली बात को वज़न देता है। परन्तु इस संदर्भ में बच्चे जनने का रूपक "छोटे बच्चों" (*teknia*) पढ़ने का समर्थन कर सकता है। (विद्रिंग्टन, 315; बाउर, 994.) [38]देखें प्रेरितों 23:6; 24:15; 26:6; 28:20; गलातियों 5:5; इफिसियों 1:18; कुलुस्सियों 1:5, 6, 23; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18; तीतुस 1:1-3. [39]कई संस्करणों में (जैसे NASB) चाहे "दर्पण में देखने की तरह" है पर जैसा कि NRSV में हुआ है इसका अनुवाद "दर्पण में दिखाई दिया" करने का अच्छा कारण है। प्रेरितों के लिए कही गई बात मूसा के अपने चेहरे को ढांपने के लिए उपमा थी, जिससे परमेश्वर की महिमा दिखाई गई थी। मूसा के विपरीत नई वाचा के सेवकों के रूप में प्रेरितों ने कुछ भी छुपाया नहीं था (2 कुरिन्थियों 3:6); उन्होंने प्रभु की महिमा को दिखाते हुए "उघाड़े चेहरे से" अपना संदेश दिया था। (*katoptrizō*) से क्रिया शब्द मध्य स्वर में है और इसका अनुवाद "दर्शाना" सही हो सकता है। (बाउर, 535.) [40]जे. डी. डग्लस एण्ड मैरिल सी. टैनी, संपा., द *न्यू इंटरनैशनल डिक्शनरी ऑफ़ द बाइबल,* पिक्टोरियल संस्क. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाऊस, 1987), 1025.

[41]*थियोलॉजिकल वर्डबुक ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* संपा. आर. लेयर्ड हैरिस, ग्लेसन एल. आर्चर, जूनि., एण्ड ब्रूस के. वाल्टेक (शिकागो: मूडी प्रैस, 1980), 1:403 में जॉन ई. हार्टले, "*torah.*" [42]NIV1984 इन आयतों के सही अनुवाद के बहुत करीब है। NASB सहित कई संस्करणों में इब्रानियों 11:11 का अनुवाद इस प्रकार से किया गया है जो सारा को गर्भवती होने की शक्ति मिलने की बात कहता है। यूनानी में इस आयत के मूल पठन के सम्बन्ध में कई धर्मशास्त्रीय आलोचनात्मक प्रश्न पाए जाते हैं। यह प्रश्न मुख्य शब्द (*steira,* "बांझ") के तिल मात्र लिखे जाने और शामिल किए जाने को निकालने से सम्बन्धित है। तौभी जो सबसे महत्वपूर्ण और निर्णायक बात लगती है वह (*eis katabolēn spermatos*) वाक्यांश है जिसका मूल अर्थ "वंश की स्थापना के लिए" है। यह बच्चे को जनने या वंशज तय करने में पुरुष की भूमिका के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला तकनीकी शब्द था। इसलिए यहां पर सारा के गर्भवती होने के योग्य होने की नहीं बल्कि जन्म देने के विश्वास से अब्राहम के योग्य होने की बात थी। पूरे संदर्भ में मुख्य व्यक्ति अब्राहम ही है (इब्रानियों 11:8-12)। अधिक जानकारी के लिए देखें, एफ़. एफ़. ब्रूस, द *एपिस्टल टू द हिब्रूस,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टमैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैस पब्लिशिंग कं, 1964), 299-302. [43]बाउर 658. [44]एफ़. एफ़. ब्रूस ने ध्यान दिलाया कि अपने मनपरिवर्तन से पहले यदि पौलुस रब्बियों की पाठशाला में इस अभ्यास को ले लेता तो उसकी तुलना बिल्कुल अलग होती कि "इसहाक चुने हुए लोगों का पूर्वज था; इश्माएली लोग अन्यजाति हैं। यहूदी लोग स्वतन्त्र स्त्री [सारा] की संतान हैं जबकि अन्यजाति लोग दासी [हाजिरा] की संतान हैं। यहूदियों को व्यवस्था का स्वतन्त्र करने वाला ज्ञान मिला

है जबकि अन्यजाति लोग अज्ञानता और पाप की दासता में हैं'' (एफ़. एफ़. ब्रूस, *द एपिस्टल टू द गलेशियंस,* द न्यू इंटरनैशनल ग्रीक टैस्टामैंट कमैंट्री [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982], 218-19)। [45]लिडेल एण्ड स्कॉट, 1735. [46]लाइटफुट, 181 से लिया गया। [47]जेम्स बर्टन कॉफमैन, *कमैंट्री ऑन गलेशियंस, इफिसियंस, फिलिपियंस, कोलोसियंस* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाऊस, 1977), 83 से लिया गया। [48]देखें 4:30, जो उत्पत्ति 21:10 से उद्धृत किया गया है। [49]LXX में (*paizō*, ''खेलना'') के साथ *tsachaq* का अनुवाद किया गया है। [50]*थियोलॉजिकल वर्डबुक ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* संपा. आर. लेअर्ड हैरिस, ग्लेसन एल. आर्चर, जूनि., एण्ड ब्रूस के. वाल्टके (शिकागो: मूडी प्रैस, 1980), 2:763 में जे. बार्टन पेयन, ''*tsachaq.*''

[51]इश्माएल तब चौदह वर्ष का था जब इसहाक का जन्म हुआ (उत्पत्ति 16:16; 21:5; देखें 17:24, 25)। इसके अलावा दूध छुड़ाए जाने के समय इसहाक तीन साल का ही होगा। इसका अर्थ यह हुआ कि उत्पत्ति 21:8 में जश्न के समय इश्माएल सोलह सत्रह साल का होगा। [52]जॉन्सन, 131. [53]परन्तु आवश्यक नहीं कि हम यह निष्कर्ष निकाले कि हाजिरा को तुच्छ जानी गई स्त्री के रूप में प्रस्तुत किया गया था। उत्पत्ति 21:14-21 में परमेश्वर ने हाजिरा की प्रार्थना सुनी और उसकी निराशा में उसे और इश्माएल को निकाल दिए जाने पर, उसे तसल्ली दी गई। [54]देखें 3:28; 5:6; 1 कुरिन्थियों 7:19; 12:13; इफिसियों 6:8. [55]देखें यूहन्ना 3:14-17, 36; 5:24, 39, 40; 11:25, 26; 14:6. [56]देखें मत्ती 26:24, 54; लूका 24:26, 27, 45, 46. [57]पृष्ठ पर देखें *अतिरिक्त भाग: यूनानी ज्ञाषियों का फैलना (4:4),* पृष्ठ 189-191। [58]कम से कम अठारह अन्य नगरों के नाम भी सिकन्दर के नाम पर रखे गए थे। [59]प्लेटो *फेडो* 109बी। [60]शक्तिशाली रोमी शक्ति के यूनानी भाषा और संस्कृति के साथ मिलन से जो मिला, उसे ''रोमी यूनानीवाद'' कहा जाता है।

[61]फ्रांसिस फोलकस, *द लैटर ऑफ़ पॉल टू द इफिसियंस,* संस्क. संशो., द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रेपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1989), 111. [62]देखें गिनती 16:22; 27:16; इब्रानियों 12:9; प्रकाशितवाक्य 22:6. [63]''ग्रहों'' के लिए यूनानी शब्द (*planētes*) का अर्थ है ''घुमक्कड़।'' [64]इस शब्द का मूल अर्थ है ''और पाने की इच्छा।'' [65]एफ़. ब्लास एण्ड ए. डेबरन्नर, *ए ग्रीक ग्रामर ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एण्ड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिट्रेचर,* अनु. एण्ड संपा. रॉबर्ट डब्ल्यू. फ़ंक (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1961), 134 (नंबर 258)। [66]विलियम कॉपर, ''ओ फॉर ए कलोज़र वाक विद गॉड,'' *सॉन्ग्स ऑफ फ़ेथ एण्ड प्रेज,* कम्प. एण्ड संपा. आल्टन एच. हावर्ड (वैस्ट मोनरो, लुइसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)। [67]एक उदाहरण फेलिक्स के साथ पौलुस का मुकदमा है जो ''धर्म और संयम और आने वाले न्याय'' के सम्बन्ध में पौलुस के तर्क से ''भयभीत'' हो गया था (प्रेरितों 24:25)। [68]बाउर, 4. [69]डी. ए. कार्सन, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू जॉन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1991), 415-16. [70]बाउर, 211.

[71]हमें यह याद रखना आवश्यक है कि ''प्रेम'' (*agapē*) भावना से कहीं बढ़कर है।